खण्ड-446, अंक-2
सोमवार, 17 भाद्रपद, शक संवत् 1925
(8 सितम्बर, 2003 ई0)

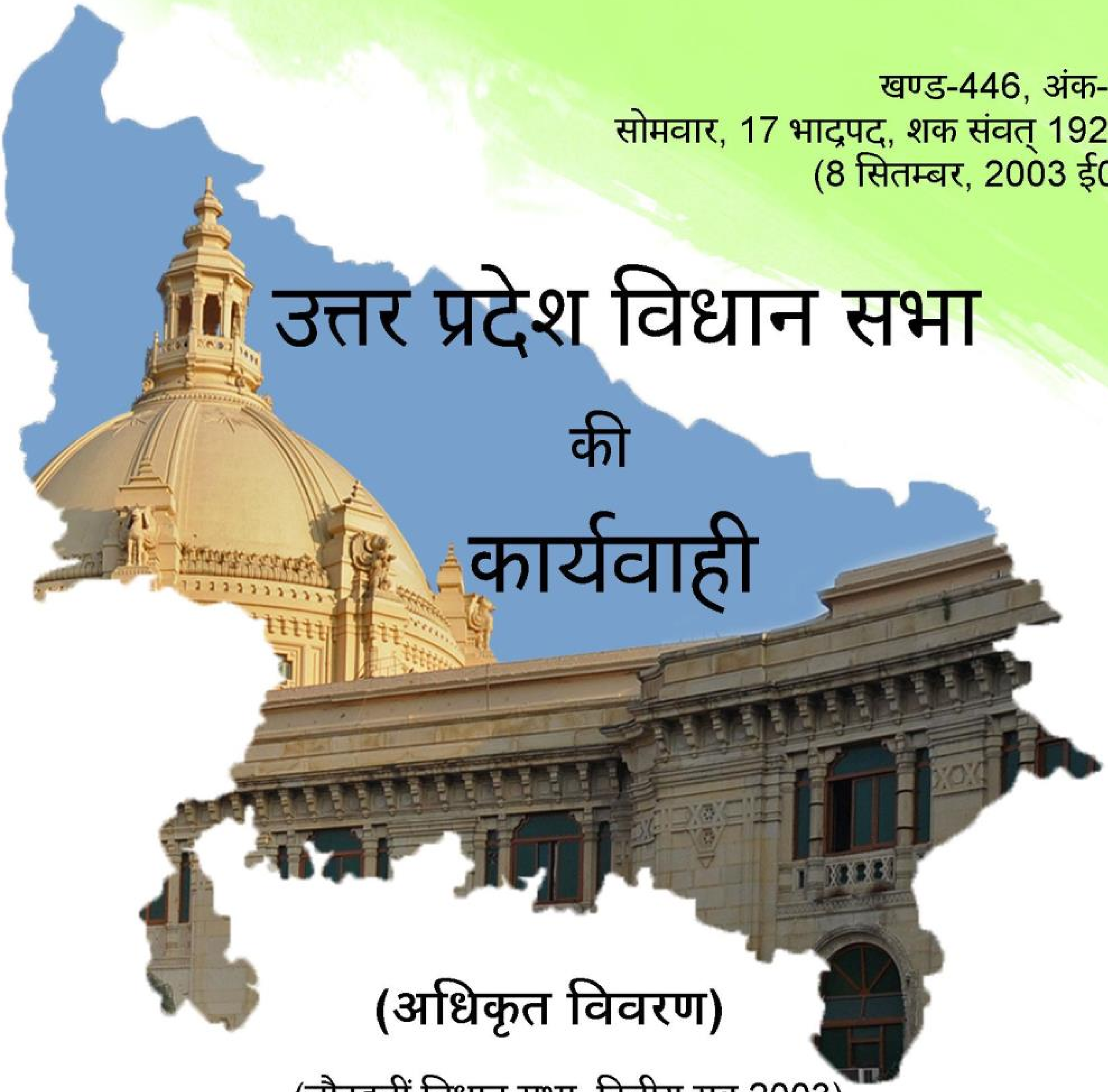

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

## की

# कार्यवाही

## (अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, द्वितीय सत्र 2003)

खण्ड 446 में 4 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

---

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
2003

---

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

## विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| उपस्थित सदस्य ... ... ... | क–च |
| अध्यक्ष पीठ द्वारा सभी सदस्यों से मोबाइल बन्द करने का अनुरोध ... .... | 1 |
| बहुजन समाज पार्टी के विधायकों का उत्पीड़न किये जाने विषयक व्यवस्था का प्रश्न | 1-3 |
| मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव तथा मतदान (जारी) ... ... | 3-29 |
| "मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव" पर भाषण की समय सीमा का निर्धारण ... | 29 |
| सदन के फ्लोर पर जाने वाले रास्ते खुलवाने का अनुरोध ... ... | 29-30 |
| मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव तथा मतदान (स्वीकृत) ... ... | 30-110 |
| दिनांक 28 फरवरी, 2003 को विधान मण्डल के समक्ष श्री राज्यपाल द्वारा दिये गये अभिभाषण के प्रति स्वीकृत धन्यवाद प्रस्ताव के सम्बन्ध में श्री राज्यपाल का आभार-पत्र ... ... ... | 110-111 |
| कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा सदन के कार्यक्रम निर्धारण की सिफारिशें विषयक प्रस्ताव ..... (स्वीकृत) ... ... ... | 111-112 |
| उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा-समिति (2002-2003) का तृतीय प्रतिवेदन (सिविल) (प्रस्तुत किया गया ) ... ... | 112-113 |
| उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक-लेखा समिति (2002-2003) का चतुर्थ प्रतिवेदन ... (प्रस्तुत किया गया ) ... ... | 113 |
| उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक-लेखा समिति (2002-2003) का पंचम प्रतिवेदन ... (प्रस्तुत किया गया ) ... ... | 113 |
| उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक-लेखा समिति (2002-2003) का षष्टम् प्रतिवेदन ... (प्रस्तुत किया गया ) ... ... | 113 |
| उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक-लेखा समिति (2002-2003) का सप्तम् प्रतिवेदन ... (प्रस्तुत किया गया ) ... ... | 113 |
| उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की आश्वासन समिति का 83वां प्रतिवेदन (प्रस्तुत किया गया ) ... ... ... | 113-114 |


उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार दिनांक 08 सितम्बर, 2003

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

**उपस्थित सदस्य–395**

| | |
|---|---|
| अकीलुर्रहमान खां, श्री | मुरादाबाद |
| अखिलेश कुमार सिंह, श्री | रायबरेली |
| अजय कपूर, श्री | कानपुर नगर |
| अजय कुमार, श्री | बागपत |
| अजय राय, श्री | वाराणसी |
| अजीत कुमार उर्फ राजू, श्री | बदायूं |
| अजीम भाई, श्री | फिरोजाबाद |
| अताउल रहमान, श्री | बरेली |
| अतीक अहमद, श्री | इलाहाबाद |
| अनवर महमूद, श्री | बलरामपुर |
| अनार सिंह दिवाकर, श्री | एटा |
| अनिल कुमार, श्री | बुलन्दशहर |
| अनिल कुमार पाण्डेय, श्री | सुल्तानपुर |
| अनिल कुमार मौर्य, श्री | मिर्जापुर |
| अनिल कुमार वर्मा, श्री | सीतापुर |
| अनिल कुमार पासवान, श्री | हरदोई |
| अनिल कुमार सिंह यादव, श्री | एटा |
| अनिल सिंह, श्री | सिद्धार्थनगर |
| अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री | पीलीभीत |
| अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री | देवरिया |
| अनुराधा चौधरी, श्रीमती | मुजफ्फरनगर |
| अनूप कुमार पाण्डेय, श्री | बस्ती |
| अन्सार अहमद, श्री | इलाहाबाद |
| अब्दुल कलाम, श्री | वाराणसी |
| अब्दुल कलाम, श्री | संत कबीर नगर |
| अब्दुल मन्नान, श्री | हरदोई |
| अब्बास अली जैदी उर्फ रुशदी मियां, श्री | बाराबंकी |
| अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री | फतेहपुर |
| अमरमणि, श्री | महराजगंज |
| अमर सिंह यादव पुत्र श्री सुन्दर सिंह, श्री | हाथरस |
| अमिता सिंह, श्रीमती | सुल्तानपुर |
| अम्बिका चौधरी, श्री | बलिया |
| अम्बेश कुमारी, श्रीमती | महोबा |
| अयोध्या प्रसाद पाल, श्री | फतेहपुर |
| अरविन्द गिरि, श्री | खीरी |
| अरविन्द कुमार सिंह उर्फ गोप, श्री | बाराबंकी |
| अरुण कुमार मेहरोत्रा, डा० | जालौन |
| अरुण कुमारी, श्रीमती | कानपुर देहात |
| अरुणवीर सिंह, श्री | बहराइच |
| अरुणा तोमर, श्रीमती | कानपुर नगर |
| अवधेश कुमार वर्मा, श्री | शाहजहांपुर |
| अशोक कुमार कटियार, श्री | कानपुर देहात |
| अशोक बाजपेयी, डा० | हरदोई |
| अशोक सिंह चौहान, श्री | मैनपुरी |
| आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री | सिद्धार्थनगर |
| आनन्द प्रकाश लोधी, श्री | फतेहपुर |
| आनन्द सेन, श्री | फैजाबाद |
| आर०एस० कुशवाहा, श्री | खीरी |
| आर० के० चौधरी, श्री | लखनऊ |
| आर०के० सिंह पटेल, श्री | चित्रकूट |
| आलम बदी, श्री | आजमगढ़ |
| आलोक कुमार शाक्य, श्री | मैनपुरी |
| आशा किशोर, श्रीमती | रायबरेली |
| आशीष यादव, श्री | बदायूं |
| आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री | बदायूं |
| इकबाल महमूद, श्री | मुरादाबाद |
| इन्द्रजीत सरोज, श्री | कौशाम्बी |
| इन्द्रदेव सिंह, डा० | बिजनौर |
| इलम सिंह, श्री | सहारनपुर |
| उदयभान करवरिया, श्री | इलाहाबाद |
| उदयभान सिंह, श्री | वाराणसी |
| उदयराज, श्री | उन्नाव |
| उमा किरन, श्रीमती | मुजफ्फरनगर |
| उमा शंकर कुशवाहा, श्री | गाजीपुर |

| | |
|---|---|
| उषा वर्मा, श्रीमती | हरदोई |
| ओइमवेश, स्वामी | बिजनौर |
| ओमकार सिंह यादव, श्री | बदायूं |
| ओम प्रकाश, श्री | गाजीपुर |
| ओम प्रकाश, श्री | सीतापुर |
| ओम प्रकाश (ओ० पी० सिंह), श्री | सुल्तानपुर |
| ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री | सुल्तानपुर |
| ओम प्रकाश सिंह, श्री | मिर्जापुर |
| ओमवती देवी, श्रीमती | बिजनौर |
| कपिल देव यादव, श्री | मऊ |
| कमला प्रसाद रावत, श्री | बाराबंकी |
| कमलेश कुमार, श्री | गोरखपुर |
| कमलेश कुमार पाठक, श्री | कानपुर देहात |
| कमाल यूसुफ मलिक, श्री | सिद्धार्थनगर |
| कल्याण सिंह, श्री | अलीगढ़ |
| कल्यान सिंह दोहरे, श्री | कन्नौज |
| काजिम अली खां उर्फ नवेद मियां, नवाब | रामपुर |
| कामेश्वर उपाध्याय, श्री | देवरिया |
| कालीचरन राजभर, श्री | गाजीपुर |
| काशी राम, श्री | रामपुर |
| किरण पाल कश्यप, श्री | मुजफ्फरनगर |
| किरनपाल सिंह, श्री | बुलन्दशहर |
| किशन लाल बघेल, सेठ | आगरा |
| कुतुबुद्दीन अन्सारी, श्री | बिजनौर |
| कुलदीप सिंह सेंगर, श्री | उन्नाव |
| कृष्ण कुमार सिंह उर्फ सतीश वर्मा, श्री | हरदोई |
| कृष्णानन्द राय, श्री | गाजीपुर |
| कृष्णा पासवान, श्रीमती | फतेहपुर |
| केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री | इलाहाबाद |
| कैलाश, श्री | गाजीपुर |
| कैलाश चौरसिया, श्री | मिर्जापुर |
| कैलाश नाथ सिंह यादव, श्री | वाराणसी |
| कोविद कुमार, श्री | शाहजहांपुर |
| कौकब हमीद खां, श्री | बागपत |
| कौशल किशोर, श्री | खीरी |
| कौशल किशोर, श्री | लखनऊ |
| गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री | आगरा |
| गंगा बक्श सिंह, डा० | उन्नाव |
| गंगा भक्त सिंह, श्री | हरदोई |
| गया चरन दिनकर, श्री | बांदा |
| गीता सिंह, श्रीमती | बलरामपुर |
| गुलाब देवी, श्रीमती | मुरादाबाद |
| घनश्याम शुक्ल, श्री | गोण्डा |
| घूरा राम, श्री | बलिया |
| चन्द्र किशोर, श्री | महराजगंज |
| चन्द्रदेव राम यादव, श्री | आजमगढ़ |
| चन्द्र भद्र सिंह, श्री | सुल्तानपुर |
| चितरंजन स्वरूप, श्री | मुजफ्फरनगर |
| छेदी राम, श्री | गाजीपुर |
| छोटे लाल यादव, श्री | बाराबंकी |
| छोटे लाल वर्मा, श्री | आगरा |
| जंग बहादुर, श्री | सुल्तानपुर |
| जगदम्बिका पाल, श्री | बस्ती |
| जगदीश नारायण (राय), श्री | जौनपुर |
| जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री | कुशीनगर |
| जगदीश सिंह राणा, श्री | सहारनपुर |
| जगदीस सोनकर, श्री | जौनपुर |
| जगन प्रसाद गर्ग, श्री | आगरा |
| जगराम सिंह, श्री | मुरादाबाद |
| जटाशंकर सिंह, श्री | बहराइच |
| जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री | फर्रुखाबाद |
| जय प्रकाश यादव, श्री | गोरखपुर |
| जय प्रताप सिंह, श्री | सिद्धार्थनगर |
| जयराम विमल, श्री | अम्बेडकर नगर |
| जयवीर सिंह, श्री | मैनपुरी |
| जयवीर सिंह, ठाकुर | अलीगढ़ |
| जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया, श्री | गोरखपुर |
| जियाउद्दीन रिजवी, श्री | बलिया |
| ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री | महराजगंज |
| तेजपाल सिंह, श्री | मथुरा |
| दद्दू प्रसाद, श्री | चित्रकूट |
| दयाराम, श्री | कौशाम्बी |
| दया शंकर वर्मा, श्री | जालौन |
| दिनेश सिंह, श्री | सिद्धार्थनगर |
| दीनानाथ कुशवाहा, श्री | देवरिया |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

दीनानाथ भाष्कर, श्री सन्त रविदास नगर,भदोही
दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री देवरिया
दुर्गा प्रसाद यादव, श्री आजमगढ़
देवकी नन्दन, श्री हाथरस
देव नारायन उर्फ जी०एम० सिंह, श्री गोरखपुर
देवेन्द्र नागपाल, श्री ज्योतिबाफूलेनगर
देवेन्द्र प्रताप, श्री एटा
देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री रायबरेली
द्वारिका प्रसाद, श्री सन्त कबीर नगर
धनंजय सिंह, श्री जौनपुर
धर्मपाल सिंह, श्री गाजियाबाद
धर्मपाल सिंह, श्री बरेली
धर्मराज निषाद, श्री अम्बेडकर नगर
धर्म सिंह सैनी, डा० सहारनपुर
धर्मेन्द्र कुमार कश्यप, श्री बरेली
धू राम, श्री हमीरपुर
नत्थू सिंह, श्री उन्नाव
नरेन्द्र कुमार, श्री गौतमबुद्ध नगर
नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा० इलाहाबाद
नरेन्द्र सिंह वर्मा, श्री सीतापुर
नरेन्द्र सिंह यादव, श्री फर्रूखाबाद
नरेन्द्र सिंह सिसौदिया, श्री गाजियाबाद
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री हरदोई
नवाब सिंह नागर, श्री गौतमबुद्ध नगर
नारद राय, श्री बलिया
पकौड़ी लाल, श्री मिर्जापुर
परमेश्वर दयाल, श्री सोनभद्र
परागी लाल अहिरवार, श्री झांसी
पारस नाथ यादव, श्री जौनपुर
पी० के० राय, डा० कुशीनगर
पीटर फैन्थम, श्री नाम-निर्देशित
पीतम राम, श्री पीलीभीत
पूरन सिंह बुन्देला, श्री ललितपुर
पूर्णमासी देहाती, श्री कुशीनगर
प्रताप चौधरी, श्री हाथरस
प्रदीप माथुर, श्री मथुरा
प्रभु दयाल, श्री मेरठ
प्रभु नारायण, श्री वाराणसी
प्रमोद कुमार, श्री प्रतापगढ़
प्रमोद गौड़, श्री अलीगढ़
प्रेम पाल सिंह यादव, श्री बदायूं
प्रेम लता कटियार, श्रीमती कानपुर नगर
प्रेम सिंह, श्री मथुरा
फतेह बहादुर, श्री महराजगंज
फसीहा मुराद लारी, श्रीमती देवरिया
फागू, श्री मऊ
बंशीधर राज, श्री खीरी
बलराम यादव, श्री आजमगढ़
बादशाह सिंह, श्री हमीरपुर
बाबू राम, एम०काम०, श्री जालौन
बाबू लाल, श्री गोण्डा
बाबू लाल, चौधरी आगरा
बाबू लाल कुशवाहा, श्री बांदा
बिजय सिंह, श्री फर्रुखाबाद
बीजू पटनायक, श्री गाजीपुर
बीना भारद्वाज, श्रीमती रामपुर
बृजेन्द्र कुमार व्यास (डमडम महराज), श्री झांसी
बृजेन्द्र प्रताप सिंह, कुंवर, एडवोकेट जालौन
बैजनाथ पासवान, श्री मऊ
बैजनाथ दुबे, श्री गोण्डा
ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी, श्री देवरिया
भगवत शरन गंगवार, श्री बरेली
भगेलू राम, श्री सुल्तानपुर
भरत सिंह, श्री बलिया
भारतेन्द्र सिंह, कुंवर बिजनौर
भूपेन्द्र सिंह, श्री बदायूं
मतेश चन्द्र सोनकर, श्री कौशाम्बी
मदन गोपाल वर्मा, श्री फतेहपुर
मदन चौहान, श्री गाजियाबाद
मदन भैया, श्री बागपत
मदन सिंह गौतम उर्फ संन्तोष कुमार, श्री इटावा
मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री रायबरेली
मलिक मसूद, श्री आजमगढ़
मशहूद खां, श्री बलरामपुर
मस्त राम चौ०, एडवोकेट उन्नाव
महबूब अली, श्री ज्योतिबाफूलेनगर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

| | |
|---|---|
| महेन्द्र अरिदमन सिंह राजा, | आगरा |
| महेन्द्र कुमार सिंह उर्फ झीनबाबू, श्री | सीतापुर |
| महेन्द्र सिंह जाटव, चौधरी | अलीगढ़ |
| महेन्द्र सिंह यादव, श्री | बुलन्दशहर |
| महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री | इटावा |
| महेश त्रिवेदी, श्री | कानपुर देहात |
| माता प्रसाद पाण्डेय, श्री | सिद्धार्थनगर |
| मान पाल सिंह, श्री | एटा |
| माया प्रसाद, श्रीमती | खीरी |
| मिथिलेश कुमार, श्री | शाहजहांपुर |
| मुंशीलाल गौतम, श्री | बुलन्दशहर |
| मुकुट बिहारी वर्मा, श्री | बहराइच |
| मुस्ताक सोलंकी, हाजी | कानपुर नगर |
| मूलचन्द्र, श्री | बिजनौर |
| मोख्तार अंसारी, श्री | मऊ |
| मोहन देव शंखवार, श्री | फिरोजाबाद |
| मोहम्मद आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री | मुरादाबाद |
| मोहम्मद आजम खां, श्री | रामपुर |
| मोहम्मद इरशाद खां, श्री | लखनऊ |
| मोहम्मद बशीर, श्री | आगरा |
| मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी, श्री | इलाहाबाद |
| मोहम्मद रिजवान, श्री | मुरादाबाद |
| यशपाल चौधरी, श्री | खीरी |
| यशवन्त सिंह, डा० | मुजफ्फरनगर |
| याकूब, हाजी | मेरठ |
| योगेन्द्र कुमार, श्री | बांदा |
| योगेश प्रताप सिंह उर्फ | |
| योगेश भइया, श्री | गोण्डा |
| रघुराज प्रताप सिंह उर्फ | |
| राजा भइया, श्री | प्रतापगढ़ |
| रणवीर राणा, श्री | मेरठ |
| रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर | कुशीनगर |
| रतन लाल अहिरवार, श्री | झांसी |
| रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री | कुशीनगर |
| रमेश कुमार शर्मा, श्री | झांसी |
| रमेश चन्द बिन्द, डा० | मिर्जापुर |
| रविन्द्र पुण्डीर, प्रो० | मेरठ |
| राकेश कुमार वर्मा, श्री | बाराबंकी |
| राकेश पाण्डेय, श्री | अम्बेडकर नगर |
| राकेश सचान, श्री | कानपुर देहात |
| राज किशोर सिंह, श्री | बस्ती |
| राजपाल त्यागी, श्री | गाजियाबाद |
| राजपाल सिंह बालियान, श्री | मुजफ्फरनगर |
| राजपाल सिंह सैनी, श्री | मुजफ्फरनगर |
| राजरानी रावत, श्रीमती | बाराबंकी |
| राजलक्ष्मी वर्मा, श्रीमती | बाराबंकी |
| राजवीर सिंह, श्री | बुलन्दशहर |
| राजा राम, श्री | प्रतापगढ़ |
| राजीव कुमार सिंह, श्री | बाराबंकी |
| राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ | |
| मोती सिंह, श्री | प्रतापगढ़ |
| राजेन्द्र प्रसाद यादव, श्री | लखनऊ |
| राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री | एटा |
| राजेन्द्र सिंह राणा, श्री | सहारनपुर |
| राजेश अग्रवाल, श्री | बरेली |
| राजेश कुमार, श्री | खीरी |
| राधा मोहन दास अग्रवाल, डा० | गोरखपुर |
| राधेश्याम जायसवाल, श्री | सीतापुर |
| राधेश्याम सिंह, श्री | कुशीनगर |
| राम अचल राजभर, श्री | अम्बेडकर नगर |
| राम इकबाल सिंह, श्री | बलिया |
| राम करन आर्य, श्री | बस्ती |
| राम किशुन, श्री | वाराणसी |
| राम कृपाल, श्री | इलाहाबाद |
| राम कृष्ण, श्री | सीतापुर |
| राम गोविन्द चौधरी, श्री | बलिया |
| रामजी शुक्ला, श्री | औरैया |
| राम नरेश यादव, श्री | आजमगढ़ |
| रामनाथ, श्री | प्रतापगढ़ |
| रामपाल यादव, श्री | सीतापुर |
| राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री | कन्नौज |
| राम प्रताप सिंह, श्री | गोण्डा |
| राम प्रसाद चौधरी, श्री | बस्ती |
| राम बाबू हरित, डा० | आगरा |
| राम बिशुन आजाद, श्री | गोण्डा |
| राम भुआल निषाद, श्री | गोरखपुर |

| | |
|---|---|
| राम लाल अकेला, श्री | रायबरेली |
| रामवीर उपाध्याय, श्री | हाथरस |
| रामवीर सिंह, श्री | फिरोजाबाद |
| राम शंकर पाल, श्री | उन्नाव |
| राम सेवक, श्री | सुल्तानपुर |
| राम स्वरूप सिंह, श्री | कानपुर देहात |
| राम स्वरूप सिंह, श्री | बिजनौर |
| रामहेत, श्री | सीतापुर |
| रामेश्वर सिंह यादव, श्री | एटा |
| रिजवान अहमद खां, श्री | ज्योतिबा फूले नगर |
| रियाज अहमद, श्री | पीलीभीत |
| रेवती रमण सिंह, कुं० | इलाहाबाद |
| लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा० | मेरठ |
| लल्लू सिंह, श्री | फैजाबाद |
| लालजी टण्डन, श्री | लखनऊ |
| लाल जी वर्मा, श्री | अम्बेडकर नगर |
| लाल बहादुर यादव, श्री | जौनपुर |
| लुईस खुर्शीद, श्रीमती | फर्रूखाबाद |
| वकार अहमद शाह, डा० | बहराइच |
| वसीम अहमद, श्री | आजमगढ़ |
| विजमा यादव, श्रीमती | इलाहाबाद |
| विजय कुमार मिश्रा, श्री | सन्त रविदासनगर, भदोही |
| विजय बहादुर पाल, श्री | कन्नौज |
| विजय सिंह, श्री | सोनभद्र |
| विजेन्द्र सिंह, श्री | हाथरस |
| विद्या चौधरी, श्रीमती | आजमगढ़ |
| विद्या सागर गुप्ता, श्री | लखनऊ |
| विनय शाक्य, श्री | औरैया |
| विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री | गोण्डा |
| विनोद कुमार यादव कक्का, श्री | इटावा |
| विनोद कुमार सिंह, श्री | जौनपुर |
| विनोद तिवारी, डा० | पीलीभीत |
| विमल कृष्ण अग्रवाल, श्री | बदायूं |
| विवेक बंसल, श्री | अलीगढ़ |
| विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री | बांदा |
| विश्राम सिंह यादव, श्री | हरदोई |
| वीरेन्द्र प्रताप सिंह मुन्ना, श्री | शाहजहांपुर |
| वीरेन्द्र सिंह गंगवार, श्री | बरेली |
| वीरेन्द्र सिंह, श्री | मुजफ्फरनगर |
| वीरेन्द्र सिंह बुन्देला 'भगत राजा', श्री | ललितपुर |
| वीरेश्वर, श्री | अलीगढ़ |
| वेदराम भाटी, श्री | बुलन्दशहर |
| शंख लाल मांझी, श्री | सन्त कबीर नगर |
| शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री | सन्त रविदास नगर, भदोही |
| शब्बीर, श्री | बहराइच |
| शमीमुल हक, श्री | मुरादाबाद |
| शरदवीर सिंह, श्री | शाहजहांपुर |
| शहजिल इस्लाम, श्री | बरेली |
| शाकिर अली, श्री | देवरिया |
| शारदा देवी, श्रीमती | गोरखपुर |
| शारदा नन्द अंचल, श्री | बलिया |
| शारदा प्रसाद, श्री | चन्दौली |
| शाहिद मंजूर, श्री | मेरठ |
| शिव कुमार बेरिया, श्री | कानपुर देहात |
| शिव चरन, श्री | हमीरपुर |
| शिव तपस्या पासवान, श्री | चन्दौली |
| शिव पाल सिंह यादव, श्री | इटावा |
| शिव प्रताप यादव, डा० | बलरामपुर |
| शिवाकान्त ओझा, प्रोफेसर | प्रतापगढ़ |
| शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री | महराजगंज |
| शिशुपाल सिंह यादव, श्री | एटा |
| शैलेन्द्र यादव "ललई", श्री | जौनपुर |
| श्याम सिंह अहेरिया, श्री | मथुरा |
| श्याम देव राय चौधरी, श्री | वाराणसी |
| श्याम नारायन, श्री | महराजगंज |
| श्याम लाल रावत, श्री | सीतापुर |
| श्याम सुन्दर शर्मा, श्री | मथुरा |
| श्याम सूरत उपाध्याय, श्री | इलाहाबाद |
| संजय गर्ग, श्री | सहारनपुर |
| संजीव दरियाबादी, श्री | कानपुर नगर |
| संदीप अग्रवाल, श्री | मुरादाबाद |
| सतीश महाना, श्री | कानपुर नगर |
| सत्य प्रकाश अग्रवाल (कैलाश डेरी वाले), श्री | मेरठ |
| सदल प्रसाद, श्री | गोरखपुर |
| सत्य नारायण, श्री | हरदोई |
| सन्ध्या कठेरिया, कु० | मैनपुरी |
| समरपाल सिंह, श्री | बागपत |
| सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुं० | मुरादाबाद |
| सलिल विशनोई, श्री | कानपुर नगर |
| सिद्ध गोपाल साहू, श्री | महोबा |
| सियाराम सागर, डा० | बरेली |
| सीताराम निषाद, श्री | फैजाबाद |
| सुखदेव राजभर, श्री | आजमगढ़ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुख देवी वर्मा, श्रीमती | इटावा | सुशील चौधरी, डा० | सहारनपुर |
| सुन्दर लाल, श्री | उन्नाव | सूरज सिंह शाक्य, श्री | एटा |
| सुन्दर सिंह, श्री | बुलन्दशहर | सोमारू राम सरोज, श्री | जौनपुर |
| सुरेन्द्र पाल वर्मा, डा० | बांदा | सोवरन सिंह, श्री | मैनपुरी |
| सुरेन्द्र प्रकाश गोयल, श्री | गाजियाबाद | स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री | रायबरेली |
| सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री | जौनपुर | हरि ओम यादव, श्री | फिरोजाबाद |
| सुरेन्द्र विक्रम सिंह, श्री | रायबरेली | हरि प्रताप सिंह, श्री | प्रतापगढ़ |
| सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री | वाराणसी | हरिशंकर तिवारी, श्री | गोरखपुर |
| सुरेश कुमार खन्ना, श्री | शाहजहांपुर | हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ''हरीश जी'', श्री | वाराणसी |
| सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री | लखनऊ | हीरा लाल गौतम, श्री | आजमगढ़ |
| सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री | लखनऊ | हुकुम सिंह, श्री | मुजफ्फरनगर |
| सुल्तान बेग, श्री | बरेली | होशियार सिंह, श्री | बुलन्दशहर |

नोटः– मा० श्री मुलायम सिंह यादव मुख्य मंत्री, उ०प्र० एवं श्रीमती कुसुम राय (मंत्री) भी सदन में उपस्थित थी ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(सदन की बैठक प्रारम्भ होने पर )

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है ।

अध्यक्ष पीठ द्वारा सभी सदस्यगणों से मोबाइल बन्द करने का अनुरोध ।

श्री अध्यक्ष–

एक मिनट सुन लें, मुझे कुछ कहना है, पहले मुझे कह लेने दीजिये ।

(सत्ता पक्ष के अनेक माननीय सदस्यों द्वारा टोकाटाकी करने पर)

(कृपया शान्त रहे )

इसके पहले कि आज की कार्यसूची के अनुसार कार्यवाही शुरू हो, मेरा सभी माननीय विधायकों से अनुरोध है कि यदि किसी के पास मोबाइल फोन हो तो कृपया उसे आफ कर दें या फिर उसे पीछे अपनी-अपनी लाबी में जमा कर दें और बाद में वापस ले लें, क्योंकि बीच में मोबाइल बजने से सदन में व्यवधान होता है ।

**बहुजन समाज पार्टी के विधायकों का उत्पीड़न किये जाने विषयक व्यवस्था का प्रश्न**

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । यह सरकार गुण्डा, माफियाओं के बलबूते पर बनी है .....

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा टोका टाकी पर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

विश्वास मत पर जब आपका भाषण होगा तो अपने भाषण में आप इन बातों का उल्लेख कर सकते हैं, उनमें कोई मनाही नहीं है, जो भी विचार व्यक्त करना हो, आप कर सकते हैं ।

(मद संख्या–1 पुकारे जाने पर)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं । हमारे दल के श्री अयोध्या प्रसाद पाल तथा श्री आनन्द प्रकाश लोधी को .....

श्री अध्यक्ष–

आप यह सब बातें अपने भाषण में कहियेगा । यह कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

आप केवल सत्ता पक्ष के ही नहीं बल्कि विपक्ष के भी संरक्षक हैं ।

श्री अध्यक्ष–

व्यवस्था का प्रश्न सदन की कार्यवाही के संचालन से संबंधित होता है आप अपने भाषण में अपनी बात कहियेगा ।

(श्री स्वामी प्रसाद मौर्य के पुनः खड़े होने पर)

मैंने अपनी व्यवस्था दे दी, अब शान्तिपूर्वक सदन की कार्यवाही चलने दीजिये ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

पहले मेरे प्रश्न पर आप व्यवस्था सुनिश्चित कर दें, इससे सदन की कार्यवाही विनियमित होती है ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय मुख्य मंत्री जी, आपकी बात का उत्तर दे देंगे ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी, यह व्यवस्था का प्रश्न इसलिए है कि इससे सदन का काम विनियमित होता है.....।

श्री अम्बिका चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी नेता सदन खड़े हैं इसलिए इनको बिठालिये ।

(समाजवादी पार्टी के अनेक सदस्य अपने आसन पर खड़े हो गये )

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी, आज बहुजन समाज पार्टी के विधायकों की उत्पीड़न हो रहा है । पुलिस अधीक्षकों के माध्यम से उन्हें उत्पीड़ित किया जा रहा है ।

(सत्तापक्ष से बैठ जाइये की आवाज आने पर )

(बहुजन समाज पार्टी के अनेक सदस्य अपने आसन पर खड़े हो गये )

श्री अध्यक्ष–

माननीय मौर्या जी, मेरा अनुरोध है कि कार्यवाही चलने दीजिये । मैंने माननीय मुख्य मंत्री जी को बुला लिया है ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, पहले आपकी व्यवस्था आ जाय क्योंकि इससे सदन का काम विनियमित होता है ।

श्री अध्यक्ष–

कृपया बैठिये, यह बातें आप अपने भाषण के समय रख लीजियेगा ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। मान्यवर, मैं आपका हर निर्देश मानता हूं।

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

अध्यक्ष महोदय, क्या यह जबरदस्ती करेंगे ?

श्री अध्यक्ष–

मौर्या जी आसन ग्रहण करिये। मैंने व्यवस्था दे दी है। माननीय मुख्य मंत्री जी आपकी बात का जवाब अपने भाषण में दे देंगे। उसके बाद अगर कुछ कहना होगा वह कह दीजियेगा।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मैं जवाब लेने के लिये नहीं खड़ा हूं। मैं आपका संरक्षण चाहता हूं।

(श्री स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा अपनी बात कहते रहने पर)

श्री अम्बिका प्रसाद चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी, आपके द्वारा दी गयी व्यवस्था से मौर्या जी सहमत नहीं होंगे तो सदन की कार्यवाही कैसे चलेगी ?

श्री अध्यक्ष–

माननीय मौर्या जी मैंने अपकी बात सुन ली और एक व्यवस्था दे दी। आप भले ही उससे संतुष्ट नहीं है लेकिन व्यवस्था को स्वीकार करेंगे तभी सदन की कार्यवाही चलेगी। माननीय मुख्य मंत्री जी ने आपकी बात सुन ली। मैंने उनसे अनुरोध कर दिया है कि वह आपकी बात का उत्तर दे देंगे, अगर आप उत्तर से संतुष्ट नहीं है तो आप अपने भाषण में कह दीजिएगा। आपने एक बात रख दी, उसका संज्ञान ले लिया और व्यवस्था दे दी।

**मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव तथा मतदान**

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

अध्यक्ष महोदय, मैं उत्तर प्रदेश विधान सभा में आज दिनांक 8 सितम्बर, 2003 को निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहता हूं :–

"यह सदन मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है।"

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा मेजें थपथपाई गयीं )

अध्यक्ष महोदय, आज हम इस महान सदन में विश्वास मत हासिल करने के लिए खड़े हुये हैं। यह उत्तर प्रदेश एक महान प्रदेश रहा है और इसका गौरवशाली इतिहास रहा है। इसी उत्तर प्रदेश ने अभी तक 12 प्रधान मंत्रियों में से 8 प्रधान मंत्री देश को दिये हैं और प्रधान मंत्री ही नहीं इस उत्तर प्रदेश ने शानदार नेता राष्ट्रीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाये हैं। लेकिन हम कहां खड़े थे, कहां

जाना था और आज कहां खड़े हैं इस पर तो मैं चर्चा बाद में करूंगा । जहां तक बहुमत का सवाल है । वह तो पहले ही हमें प्राप्त था, समाजवादी पार्टी को प्राप्त था । जब सन् 2002 में चुनाव हुये थे तो समाजवादी पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में जीतकर आयी थी और उसने जनादेश प्राप्त किया था । लेकिन उस जनादेश को ठुकरा दिया गया तमाम संवैधानिक परम्पराओं को नकारकर न्यायिक नजीरों से नजरन्दाज करके मेरे दावे की तरफ से आखें बन्द कर ली गयीं । कुछ छोटे-छोटे दलों को मिलाकर सरकार बनायी और उस सरकार का क्या परिणाम हुआ, 15 महीनों के अन्दर उत्तर प्रदेश की जो हालत हुयी है वह आज किसी से छिपी नहीं है, न आपसे न हमसे । जहां तक बहुमत का सवाल है, पहले भी बहुमत था और आज भी बहुमत है, इससे किसी को भ्रम नहीं है । न उत्तर प्रदेश की जनता को भ्रम है और न ही सारे हिन्दुस्तान को भ्रम है । यह औपचारिकता मात्र है । बहुमत सिद्ध करने का मेरे सामने जो उत्तरदायित्व है उसको मैं निभा रहा हूं । प्रदेश में एक ऐसी सरकार बनी जिसने पिछले 15 महीनों में न केवल राज्य को 50 साल पीछे ढकेला गया है बल्कि इससे शानदार राजनीति के इतिहास में एक ऐसा काला अध्याय जोड़ा गया है जिसकी मैं आपके सामने चर्चा करना चाहूंगा ।

आप देखेंगे कि जैसे ही यह पिछली सरकार बनी थी पूरे उत्तर प्रदेश में सरकार का आतंकवाद किस स्तर तक चला गया था । सड़क पर झाड़ू लगाने वाले नागरिक से लेकर उद्योगपति तक ग्राम प्रधान से सांसद तक चपरासी से लेकर मुख्य सचिव तक और सिपाही से लेकर डी०जी०पी० तक आतंकित थे प्रधान से लेकर सांसद तक अपमानित हुये । प्रदेश में यह हालत पैदा हुयी है । यही एक उदाहरण नहीं है, हजारों उदाहरण हैं । सत्तापक्ष के लोगों को भी नहीं छोड़ा गया । मुझे पता है कि इसी सदन के अन्दर एक बार ऐसा अवसर आया कि जब एक विधायक ने कहा कि बी०जे०पी० के व्यवहार के कारण आप रो रही थीं तब मैंने आपको बचाया था तो उस विधायक को अपमानित ही नहीं किया गया उसको जेल में डाल दिया और 12 महीने बाद जेल से वह छूटकर आये हैं । यह हालत उत्तर प्रदेश की थी । यही नहीं हिन्दुस्तान के महापुरुषों को अपमानित करने से भी नहीं छोड़ा गया । आचार्य नरेन्द्र देव, डाक्टर राम मनोहर लोहिया, चौधरी चरण सिंह, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस तक और यहां तक कि जिनके बल पर सरकार चली उनको भी अपमानित करने से नहीं छोड़ा गया । वर्तमान प्रधानमंत्री को भी अपमानित किया गया । राजनाथ सिंह जी को भी अपमानित किया और अब तो माननीय नेता विपक्ष लालजी टंडन पर भी निशाना है ।

(हंसी)

इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि किस तरह से आतंकवाद का साम्राज्य था अध्यक्ष महोदय, आप स्वयं महसूस करते हैं कि इस समय उत्तर प्रदेश की 17 करोड़ जनता में किस तरह से खुशियां हैं, किस तरह से उत्साह है, क्या जोश है । जनता ऐसा महसूस कर रही है कि उसको फिर से वह आजादी मिल गयी है ।

(मेजों की थपथपाहट)

ऐसा महसूस कर रही है कि लम्बी जेल यात्रा करके, तकलीफें झेलकर लौटी हो । जहां तक सदन में बहुमत प्राप्त करने की बात है वह तो है ही । अध्यक्ष महोदय कोई भी सरकार केवल आतंकवाद के बल पर, सुरक्षा के बल पर पुलिस के आधार पर नहीं चल सकती । कोई सरकार केवल खजाने के बल पर

भी नहीं चल सकती है । कोई भी सरकार केवल बहुमत के नाम पर भी नहीं चल सकती है । सरकार वही चलती है जिसे जनता का विश्वास प्राप्त होता है । हमें आज जनता का विश्वास प्राप्त है हर वर्ग का विश्वास चाहे वह किसान हो व्यापारी हो, अथवा छात्र हो चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख अथवा ईसाई हो, अगड़ी पिछड़ी जाति का या दलित जाति का हो सरकारी अधिकारी, कर्मचारी आज सभी इस सरकार से प्रसन्न हैं । खुशियां मना रहे हैं यहां तक की अध्यक्ष महोदय जिसने लगातार तीन बार उस सरकार का समर्थन दिया वह भी खुशियां मना रहे हैं । यह कितनी कृतघ्नता है । आज माननीय नेता विरोधी दल भी संकट में हैं । लेकिन आप अब जेल नहीं जायेंगे और हमारे राज्य में न आप पर पोटा लग सकता है । उद्योगपति भयभीत होकर व्यापार धन्धा छोड़कर चले गए कुछ जाने को तैयार थे । इसीलिए मैंने शुरू में कहां कि उत्तर प्रदेश का शानदार इतिहास है और यह महान प्रदेश है । जिस क्षेत्र में आप देखेंगे उस क्षेत्र में इस महान उत्तर प्रदेश में हिन्दुस्तान में एक शानदार भूमिका निभाई है, राष्ट्रीय राजनीति से लेकर किसी भी क्षेत्र में हो हमें उसे याद करना होगा ताकि आने वाले समय में उससे प्रेरणा ले सकें । हम विश्वास दिलाते हैं कि सारे सदस्यों को राजनीतिक बदले की भावना से किसी के खिलाफ कार्यवाही नहीं की जाएगी । चाहे वह सत्ता पक्ष के लोग हों या विपक्ष के सबको न्याय दिया जाएगा । जाति पहचान करके, दल पहचान करके किस तरह की भाषा इस्तेमाल की जाती थी, यह मैं कहना नहीं चाहता हूं । ऐसी निकृष्ट भाषा उस समय की मुख्य मंत्री का आभूषण बन गई थी । भ्रष्टाचार कहां तक था, भ्रष्टाचार के पहले मैं कहूंगा कि किस तरह से लोकतंत्र की हत्या की गई । सत्तापक्ष अपनी सभाएं रैलियां करने के लिए रैली तो नाम मात्र का बहाना था, रैली के नाम पर कितनी लूट की गयी, वसूली की गयी मेरी जानकारी में है और अब सी०बी०आई० जांच भी कर रही है ताज कैरीडोर का जो प्रकरण है नोयडा व ग्रेटर नोयडा इसकी जांच हो रही है । इसमें पता चल जाएगा कि क्या हालत थी, किस कदर भ्रष्टाचार था, क्या लूट थी । सभाएं करने के लिए सत्ता पक्ष को सारे कानून, नियम ताक में रखकर कुछ भी करने की खुली छूट थी डी०एम०, एस०पी०, तहसीलदार, लेखपाल आदि द्वारा खाने का आने जाने का रहने का प्रबन्ध और उसी रैली के बहाने धन की लूट की गयीं गाड़ी, जीप तथा अन्य सभी वाहन जबरदस्ती कब्जों में ले लिये गये । डी०एम०, एस०पी०, आर०टी०ओ० सहित पुलिस व सारा प्रशासनिक तंत्र इसमें लगाया गया । यहां तक स्कूल के बच्चों और स्कूल की गाड़ियों को लगाया गया । आगरा का मैं उदाहरण दे रहा हूं । उनकी गाड़ी ले ली गई जो बच्चे स्कूल जाते थे यहां तक कि दूल्हा-दूल्हन को भी गाड़ी से सड़क पर उतार दिया गया । यह हालत रही है क्रूरता की विपक्ष के जन समस्याओं से रोकने के लिये उनके नेताओं कार्यकर्ताओं को घरों से ही गिरफ्तार किया गया । पता चला कि सरकार चली गई तो विधायकों-सांसदों से कसम ली गई मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं । एक माननीय सांसद से कहा कि खड़े होकर कसम खाओ लोक सभा का सदस्य था, वह रोने लगा और कहा कि बहिन जी मेरे एक ही बेटा था उसका निधन हो गया । मेरे कोई बेटा नहीं है । बेटों की कसम ली जा रही है मैं कहां से कसम खाऊं । इस तरह से यह एक चाबुक सा था मुख्यमंत्री का । उनसे कहा गया कि आपका पोता है उसकी कसम खाओ । तो यह हृदयहीनता की पराकाष्ठा है, अध्यक्ष महोदय । इस तरह की महिला विश्व में नहीं मिलेगी । राजनीतिक संस्कृति को किस तरीके से मिटाया गया, कहां लाकर खड़ा कर दिया गया । हम दिल्ली में थे और अध्यक्ष महोदय, नेता विपक्ष उनकी पार्टी के लोग भी यह घुटन महसूस करते थे कि क्या हमारा लक्ष्य था, क्या हमारा संस्कृति थी वह सब ताक पर रख दी गई । भाई बहिन का ऐसा रिश्ता चल रहा था । ऐसी कसमें खाई जा रही थीं कि भाई बहिन की जिन्दगी भर रक्षा करेगा लेकिन अपमानित

होकर, रह गया भाई सारे के सारे राजनीति करने वाले स्वच्छ छवि वाले, लोगों का सिर शर्म से झुक गया विश्व के सामने । सारे जन प्रतिनिधियों का सिर शर्म से झुक गया था ऐसे माहौल में । इस तरह की क्रूर हृदयहीनता, यह हालत पैदा हो गई थी उत्तर प्रदेश में । माननीय अध्यक्ष जी, मैं यह कहना चाहता हूं और आप स्वयं भी महसूस करेंगे कि तब किस तरह का वातावरण था सदन में और आज आप महसूस कर रहे होंगे कि किस तरह का बदलाव सदन के वातावरण में हुआ है । इस तरह के और उस तरफ के माननीय सदस्यों ने मिलकर एककैसा अच्छा वातावरण बनाया है । आपके सहयोग से और पूरे सदन के सहयोग से एक अच्छा वातावरण आने वाले दिनों में हम बनायेंगे । आपके संरक्षण में आपके सहयोग से हम काम करने की पूरी कोशिश करेंगे ।

(मेजें थपथपाई गई)

अगर समाजवादी पार्टी के कार्य कर्ताओं ने कोई प्रदर्शन करना चाहा और किसी तरह से गाड़ी लेकर आने लगे तो उनकी गाड़ियां रुकवा दी गई रास्ता घेर दिया गया । किसी तरह से वे पैदल चलकर हिम्मत करके यदि वे आये तो उन पर लाठियां चलाई गई । अंग्रेजी हुकुमत में भी इस तरह से नहीं होता था । अध्यक्ष महोदय आपको पता है कि अंग्रेजी हुकुमत में भी किसी दफ्तर पर इस तरह से हमला नहीं किया गया । स०पा० कार्यालय में हम और जनेश्वर मिश्र दोनों रह गये थे वहां मंच पर बाकी जा रहे थे प्रदर्शन करने, सैकड़ों लोग थे । सब हाथ-बांध कर निकल रहे थे और इसके बाद भी इस तरह से लाठी-चार्ज हुआ गोली चली । अध्यक्ष महोदय, बड़ी कृपा होगी, यदि आप दफ्तर में चलें और देखें आज भी वहां पर गोलियों के निशान मौजूद हैं छत टूटी हुई है । लड़के हाथ बांधकर निकल रहे थे इसके बाद भी उनकी पिटाई हुई । हमारी तीन बहिनों को पुलिस बल ने बूटों की नोक से उनके पेट में मार कर घायल किया । हमारे कार्यकर्ता उन्हें उठाकर लाए तो उस वक्त हम दो लोग थे मैदान में, हम और जनेश्वर जी थे, हम लोग बातचीत करने लगे कि अगर कहीं वो गर्भवती हो तो हमारी यह तीनों बहनें जीवित नहीं रहेंगी हमारी लोक तांत्रिक व्यवस्था पर ऐसा अत्याचार हुआ है । हम लोगों को यह छूट देते हैं कि जहां गलत काम हो पुतला जलाएं नारे लगाएं लेकिन सभा को गड़बड़ न करें काले झंडे दिखा दीजिए, पुतले जला दें और निकल जायें एक उदाहरण दे रहा हूं । हमने हमारे साथियों ने इन्दिरा गांधी जी को काले झण्डे दिखाये और उनके खिलाफ नारे लगाये । हमारे नेता चौधरी चरण सिंह जी को भी काले झण्डे दिखाए गए हैं उनके खिलाफ नारे लगाए गए हैं । हम लोग जब एक बार शिमला में राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने जा रहे थे तो यह सही है कि लाठी चार्ज हुआ था लेकिन रासुका का कितनों पर लगा या फिर कितनों को संगीन धारा लगाकर जेल भेजा गया ? किसी को नहीं इनकी सरकार ने सारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को बरबाद किया है । केवल समाजवादी पार्टी के जिला पंचायत के अध्यक्षों के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से उनके अधिकार छीन लिए, कितनों को पदों से हटा दिया गया, कितनों को कमेटी बनाकर अध्यक्ष पद से अलग कर दिया गया । अध्यक्ष महोदय हम न्यायालय को आपके माध्यम से बधाई देंगे सदन के माध्यम से बधाई देंगे कि कुछ अध्यक्षों को न्यायालय ने इंसाफ दिया है । अब भी हमारे पास कम से कम 6-7 अध्यक्ष हैं जिनके वित्तीय अधिकार ले लिए गए थे । सूची और भी लम्बित है यह हालत है छात्रसंघ के चुनाव प्रतिबन्धित कर दिये गये, अंग्रेजों ने भी कभी छात्रसंघ के चुनाव पर रोक नहीं लगाई थी । एक आध बार प्रतिबन्ध लगाया भी तो सरकार ने उसे हटा दिया । छात्रसंघ कितना महत्वपूर्ण है यह इस बात से साबित होता है कि आज भी छात्र आन्दोलन से निकले कई नेता हैं चाहे वे

किसी दल के हों लेकिन वह राष्ट्रीय एकता के लिए काम कर रहे हैं। वे संसद में काम कर रहे हैं, अन्य संगठनों में हैं मंत्रिमण्डल में हैं, कम से कम 100 ऐसे नेता है जो छात्रसंघ से निकले हुए हैं विरोधी दल के दल में कई और नेता हैं जो छात्रसंघ से निकले हुए हैं। छात्रसंघ पर प्रतिबन्ध कर दिया हमारे उत्तर प्रदेश में बहुत सी प्रतिभाएं छात्र आन्दोलन से निकली हैं। मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में महामंत्री थे आजम साहब, यह सब प्रतिभाएं छात्रसंघ से निकली हैं। हम यह बताना चाहते हैं कि किस तरह से लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश की गई ऐसी तानाशाही करके तानाशाह सत्ता की थी। अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं सत्ता की तानाशाही दिखाई मजबूत देती है लेकिन जब सत्ता की तानाशाही के खिलाफ जनाक्रोश बढ़ जाता है तो पता नहीं चलता है कि वह तानाशाही कैसे ध्वस्त हो गयी। सत्ता का तानाशाही को हमने भी भोगा है, आप लोगों ने भी भोगा है, हम लोग 1977 में आए थे सत्ता की तानाशाही भोग कर आए थे, कानूनी संस्थाओं में पिछली सरकार की कोई आस्था ही नहीं थी कानून का आधार केवल संविधान ही नहीं है, महान परम्परायें भी उसके पीछे है, नैतिकता भी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नैतिकता सबसे महत्वपूर्ण होती है। आप इस सदन के अन्दर है, आपने देखा होगा ऐसी स्थिति थी कि कोई किसी से बात नहीं करता था, नमस्ते नहीं करता था। यह परम्परा थी। कोई भूतपूर्व मुख्यमंत्री जब किसी जिले में जाता था और वहां के डी०एम० ने नमस्ते भी कर लिया तो उसको सजा मिलती थी। मैं अपनी बात नहीं कहना चाहता लेकिन कम से कम यह विचारणीय है अचानक हमारे भतीजे की मौत हो गयी, भारी भीड़ थी, वहां के कुछ पी०सी०एस० अधिकारी थे, ए०डी०एम० भी पहुंच गये, दाह-संस्कार के समय इन अधिकारियों को गालियां दी गयीं और ट्रान्सफर कर दिया गया।

अध्यक्ष महोदय, एक ऐसी संस्कृति बन गयी थी जिसमें मुख्य मंत्री सचिवालय के अधिकारी 100 की, 500 की नोट गिनने में लगे थे और नोटों को सरकारी जहाज और सरकारी हेलीकाप्टर में भरकर दिल्ली पहुंचाने का काम कर रहे थे और नेता विरोधी दल, देखते रहे। नेता विरोधी दल अपना जवाब देंगे। अब तो सी०बी०आई० जांच कर रही है, किसकी कितनी सम्पत्ति है यह पता लग जायेगा, माननीय नेता विरोधी दल राखी बांध कर उसकी रक्षा करते हैं। मेरा यह आरोप नहीं है कि उन्होंने हिस्सा लिया है जो सत्ता में हो भ्रष्टाचार को देखता है उसकी जिम्मेदारी है तो इसे रोकने की जिम्मेदारी आपकी भी थी। मौर्या जी सी०बी०आई० की जांच हमने तो नहीं करायी, हमें कोई जानकारी नहीं है। हमारा कोई सहयोग नही है लेकिन बदला हमारे लोगों से लिया गया। अमर सिंह जी से बदला लेने का प्रयास किया गया। अध्यक्ष जी, आपके सामने भी तथ्य आयेंगे। हम पर, अमर सिंह जी और अखिलेश जी पर पोटा लग ही गया था। मान्यवर, यह संयोग ही था कि एक एजेन्सी ऐसी थी जिसका मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं वह एजेन्सी रिपोर्ट ऊपर दे चुकी थी। इसलिए सौभाग्य से हम आपके बीच आज बोल रहे हैं और मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि सदन के अन्दर नेता विरोधी दल ने स्वीकार किया है कि उन्होंने यह अखबार में पढ़ा है। इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूं। ऐसे क्या लोक तंत्रीय सरकार चलती है ? यह ऐसे इसलिए चला क्योंकि दुर्भाग्य से सत्ता ऐसे हाथों मे चली गयी जिनका आजादी से कोई वास्ता नहीं था। हमारे समाजवादियों के पुरखों का आजादी से वास्ता था। हमारे आदर्श थे जिनके आधार पर आज समाजवादी पार्टी बोल रही है और मैं यहां बोल रहा हूं। उन्होंने तकलीफें झेली थीं उनकी चर्चा पर हम भावुक हो जाते हैं मैंने ऐसे ही नहीं कहा कि अपमान हो रहा है क्या पूर्व प्रधान मंत्री स्व० श्री चौधरी

चरण सिंह जी का अपमान नहीं हुआ 15 अगस्त, को क्या उस दिन उनका माल्यार्पण क्या नहीं किया जा सकता था ? जब हम मुख्य मंत्री थे तो क्या हमने 15 अगस्त को माल्यार्पण नहीं किया । मैं यह कहना चाहता हूं कि आदरणीय चौधरी चरण सिंह जी के प्रति हमारी गहरी आस्था है और जो आज हम यहां पर खड़े हैं उसमें बहुत बड़ा योगदान आदरणीय श्री चौधरी चरण सिंह जी का है । जब श्री जय प्रकाश जी साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई के दिनों हजारी बाग जेल में बंद थे तो उनके दोस्त ने उन्हें कपड़ा उढ़ाकर छिपा दिया और श्री जय प्रकाश जी जेल से कूदकर निकल गये । अगर उस समय अंग्रेजी हुकूमत उन्हें देख लेती तो गोली मार देती । इतना बड़ा बलिदान किया था श्री जय प्रकाश जी ने शिक्षा प्राप्ति के बाद सारा जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया । पिछले दिनों श्री जय प्रकाश जी को निकट सहयोगी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जगदीश भाई के निधन पर पूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर जी ने उत्तर प्रदेश सरकार को सूचना भेजी थी लेकिन सरकार का कोई प्रतिनिधि उनके दाह संस्कार में नहीं गया । ऐसे राज चल रहा था । मैं कहना चाहता हूं कि फिजूलखर्ची का आलम यह था कि 50 हजार करोड़ रुपये अभी सरकारी खजाने पर कर्जा है । जितना रुपया मूर्तियां पार्कों में खर्चा किया गया है उतना उत्तर प्रदेश के साढ़े तीन करोड़ बेरोजगार असहाय भूखे बच्चों को जिंदा रखने में खर्च कर सकते थे । हम भी तो दो-दो बार मुख्य मंत्री रहे फिर रक्षा मंत्री थे । और यह भी सही है हम प्रधान मंत्री की शपथ लेते-लेते रह गये । क्या हम मूर्तियां नहीं लगा सकते थे ? डा० राम मनोहर लोहिया जी की कितनी मूर्तियां लगायी गयीं ? कितनी यातनाएं उन्होंने सही जेल में 11 दिनों तक उन्हें जेल में सोने नहीं दिया गया । जब उनको नींद आती थी तो लोहे की सरियों से उनके शरीर में चोट पहुंचायी जाती थी । उनसे और लोगों के नाम पूछे जाते थे लेकिन उन्होंने किसी का नाम नहीं बताया । उन्हीं डा० राम मनोहर लोहिया जी के नाम पर लाइब्रेरी भवन के लिए हमने नब्बे लाख रुपया स्वीकृत किया था । उसकी नींव भरी जा चुकी थी और जैसे ही हमारी सरकार गिरी उसकी सरिया, ईंट, सीमेंट आदि सब ट्रेक्टर में भरकर ले गये । आज तक उस सामान का पता नहीं है कि वह कहां पर है । जिनकी कुर्बानियों की वजह से आज यह सदन चल रहा है उन्हीं का इतना बड़ा अपमान हो रहा है ।

नेहरू जी का अपमान किया, अटल जी का अपमान करने में भी वह नहीं चुकीं । माननीय नेता विरोधी दल जी, जो अपने स्वाभिमान की रक्षा नहीं कर सकता है वह समाज की रक्षा भी नहीं कर सकता है । अटल जी इतने बड़े नेता देश के हैं और आप उनके प्रतिनिधि हैं, उनका अपमान किया गया । हमने तो अपने स्वाभिमान और अपमान के खिलाफ इस सत्ता को लात मार दी थी । गेस्ट–हाउस के अन्दर मैंने सत्ता को लात मार दी थी । चाहे आप कितनी भी जांच क्यों न कराते रहें लेकिन हमने स्वाभिमान और सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया । यह 30 जून, 95 की घटना है और 91 में भी हमने इस्तीफा दे दिया था क्योंकि हमारे सिद्धान्त के खिलाफ बात हो गयी थी । मैंने आज तक किसी को नहीं बताया क्योंकि वह हमारे अच्छे मित्र थे और आज इस दुनिया में नहीं हैं और वह एक अच्छे नेता भी थे । लेकिन उनके गुर्गों ने गलत सुझाव उनको दे दिया था । मैं उनके व्यवहार और शिष्टाचार की तारीफ करता हूं । बहुत ऊंचे शिष्टाचार उनके थे और मानवता उनके अन्दर थी । लेकिन उनके साथियों के द्वारा हमारे स्वाभिमान पर चोट पहुंचायी गयी । हमने रात्रि में चार बजे स्वयं राजभवन का दरवाजा खटखटाकर माननीय श्री राज्यपाल महोदय को जगाया और अपना इस्तीफा उनको सौंप दिया था । जो कोई भी हो, चाहे वह मुख्यमंत्री हो, प्रधानमंत्री हो या फिर मंत्री हो जनहित में अगर जेब में इस्तीफा

रखकर घूमेगा तो वही जनता की सेवा कर सकता है । वहीं जनता को प्रेरणा और आदर्श दे सकता है और वहीं अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकता है और जो अपने स्वाभिमान को गिराकर सत्ता से चिपका रहेगा वह देश को बरबाद करेगा और समाज को तोड़ देगा । समाज में अलगाव पैदा किया, अपराध पैदा किया और पूरे उत्तर प्रदेश को गृह युद्ध की तरफ झोंक दिया । अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे सच्चाई के साथ कह रहा हूं कि पूरी तरह से हम पर केस लगा दिया गया था, सम्मन जारी करके हमारी गिरफ्तारी हो जाती तो यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होती, उत्तर प्रदेश की जनता के लिए, गृह युद्ध हो जाता दंगा हो जाता, हमने फिर सोचा दिल्ली में गिरफ्तार हो जाऐंगे, गाजियाबाद में हो जाऐंगे, सम्भल, मुरादाबाद में हो जाऐंगे, हमने सोचा खबरे आने लगेंगी कि मकानों में आग लगा दी गयी, हत्याओं का सिलसिला शुरु हो सकता था । इसलिए हमने अदालत का सहारा लिया था, इस उत्तर प्रदेश को बचाने के लिए और जो गुण्डे वहां पर सत्ता में थे, हमारे समाजवादी पार्टी के नेताओं को, एक भी सपा कार्यकर्ता को झुका नहीं सके, रासुका लग गया, गुण्डाएक्ट लगा दिया गया, पिटाई हो गई, सब कुछ हो गया, मकानों को गिरवा दिया गया लेकिन एक भी सपा कार्यकर्ता हिला नहीं, झुका नहीं, टूटा नहीं । आज जो समाजवादी पार्टी में आयें हैं वह कभी झुकने वाले नहीं हैं इसलिए हम कहना चाहते हैं सरकार केवल समाजवादी पार्टी की नहीं है यह सरकार हमारे कई दल, ये राष्ट्रीय लोकदल की है, राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी की भी है, इसे कांग्रेस पार्टी का पूरा समर्थन प्राप्त है, उनकी भी है, यह सरकार निर्दलीयों की भी है और हम तो यह भी कहना चाहते हैं कि यह बी०जे०पी० और बहुजन समाज पार्टी की भी सरकार है । इसमें अन्याय नहीं होगा, अत्याचार नहीं होगा, यह उत्तर प्रदेश की 17 करोड़ जनता की सरकार है, किसी जाति विशेष, वर्ग की धर्म की सरकार नहीं है । ये वातावरण हम पैदा करना चाहते हैं आपके सहयोग से राजनीतिक नैतिकताओं को ऊंचा उठाना चाहते हैं, लोकतांत्रिक व्यवस्था और नैतिक मूल्यों को जिस तरह से धीरे-धीरे मिटाया जा रहा है उन नैतिक मूल्यों को हमें बचाना है उनकी रक्षा करना है । यह सही है कि बहुत गड़बड़ हो रही है, उत्तर प्रदेश की आर्थिक स्थिति बिगड़ रही है, यह सही है इसे ठीक करने में समय लग सकता है । इसलिए अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारा उत्तर प्रदेश कहां था और अब किस हद तक कंगाल कर दिया गया, यह आज उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान से भी पीछे चला गया, आज उत्तर प्रदेश पर कर्जा बढ़ता जा रहा है, संसाधनों की कमी है, लेकिन फिर भी मैं इस सदन को आश्वासन देना चाहता हूं कि चाहे जितने आर्थिक संकट हों लेकिन हम उत्तर प्रदेश के विकास में रूकावटें नहीं आने देंगे । आपने देख लिया कि सरकार बनाने के आधे-पौन घन्टे के अन्दर हमने राहत दी है और सबसे बड़ी चिन्ता, अध्यक्ष महोदय, दिल्ली में हैं जहां हमारे कुछ आई०ए०एस० और बड़े अफसरों ने जो व्यवहार दिया है और जिनके बारे में दिल्ली के सचिवालय में चर्चा है... ।

श्रीमन्, ऐसे लोग केवल 4-5 फीसदी रहे हैं, ऐसे अधिकारी लोग, बाकी 96-97 फीसदी अधिकारियों ने ऐसा काम नहीं किया है । केवल मानसिकता के आधार पर और अपनी सरकार समझ कर ऐसी बातें की, उनकी भी सरकार नहीं थी । यह तो जय प्रकाश यादव जी की क्या हालत थी उनका कितना अपमान किया था । मैं तो कहता हूं अपमान सह कर राजनीति करने से अच्छा है कि घर बैठे जिससे आने वाली पीढ़ी का तो कम से कम मनोबल न टूटे ।

श्रीमन्, हालत क्या थी ? सारे अधिकारियों का मनोबल टूट गया । इसका नतीजा यह है कि आगे आने वाले दिनों में हमारे आई०ए०एस० इतने बदनाम हो गये हैं कि केन्द्र सरकार में इम्पैनलमेंट की

समस्या होगी । यह तो बहुत बड़े दुर्भाग्य की बात होगी । आप जानते हैं कि बहुत बड़ी तादाद में भारत सरकार की सेवा में सबसे ज्यादा सक्षम और सबसे अच्छा काम करने वाले आई०ए०एस० के अधिकारी उ० प्र० के रहते थे । अब यह समस्या पैदा हो गयी है कि उ० प्र० केडर के आई०ए०एस० अधिकारियों को केन्द्र सरकार में लिया जाए या नहीं लिया जाए । यह हालत है आज तो हम कहां पहुंचा दिए गये हैं । उ० प्र० की हालत इन 15 महीनों में कहां पहुंच गई है । इसलिए अध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे कह दिया था कि राजनीतिक दुर्भावना से, बदले की भावना से यह सरकार काम नहीं करेगी लेकिन मैं यह भी कहना चाहता हूं कि दोषी लोगों को बचाने की कोशिश हम लोग नहीं करेंगे । मान्यवर, अगर भ्रष्टाचारी को सजा नहीं मिलेगी तो भ्रष्टाचार नहीं रुकेगा । अपराधियों को सजा नहीं मिलेगी तो अपराध नहीं रुकेगा । मान्यवर, कानून व्यवस्था की स्थिति किस सीमा तक बिगड़ी, यह स्पष्ट है । कानून-व्यवस्था की यह स्थिति किसी के छिपाने से छिपती नहीं है । आदेश चले गये कि कोई रपट नहीं लिखी जायेगी । अनेक उदाहरण मिलेंगे जिसमें 302 का मुकदमा गैंगेस्टर या गुण्डा ऐक्ट में बदल दिया और दिखाया कि 70 फीसदी अपराध बन्द हैं । उसके दो गम्भीर नतीजे हैं कि दरोगाओं को छूट मिल गई । झूठी रपट लिखवायी गयी दलालों से । इस तरह के दर्जनों उदाहरण हैं जिनमें अपराधियों को छूट हो गयी और वह मनमानी करने लगे । एक ब्लाक प्रमुख के छोटे से चुनाव में एक व्यक्ति को पकड़ लिया गया उनकी पिटाई कर दी क्योंकि अपराधी उसे चुनाव में लड़ने वाला था और जिसके चलते वह व्यक्ति अपना पर्चा दाखिल नहीं कर पाया ।

(श्री अतीक अहमद द्वारा टोका-टाकी करने पर)

आप सौभाग्यशाली है जो आप पर रासुका नहीं लगी । हमें और कोई प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है, यह प्रमाण के रूप में बैठे हुए हैं ।

मैं कहना चाहता हूं कि भले ही रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई हो, पैसों के बल पर दलालों के कारण या राजनीतिक प्रभाव के कारण कि रिपोर्ट नहीं लिखी गई हो और वह व्यक्ति जनता की नजरों में अपराधी है तो वह नहीं बचेगा । हमें आज कानून-व्यवस्था की स्थिति को कायम करना है और इसके लिए हम सब का सहयोग चाहेंगे और कहेंगे कि सभी हमें सहयोग दें । आज अहम् सवाल यह है कि जो उत्तर प्रदेश पिछड़ गया है, बेरोजगारी बढ़ गयी है, दवाई नहीं है, अस्पताल गंदे पड़े हैं, पीने को पानी नहीं है शुद्ध पानी नहीं है, रोजगार नहीं है, भरपेट खाना नहीं है, कपड़ा नहीं है, मकान नहीं है, रहने के लिये छत नहीं है, गन्दे नालियों में सोना पड़ा रहा है, कड़ाके की सर्दी में किसी तरह आग जलाकर सर्दी बचाते हैं । यह स्थिति है । इसलिए अध्यक्ष महोदय, आज बहुमत अल्पमत का सवाल नहीं है । बहुमत पहले भी था जब सत्ता में नहीं थे और आज भी है लेकिन हम सब को मिलकर उत्तर प्रदेश को आगे बढ़ाने का, उत्तर प्रदेश का विकास करने का काम करना है । यह पूरे सदन की जिम्मेदारी है । आपके जो भी सुझाव होंगे उसको सहर्ष स्वीकार करेंगे उत्तर प्रदेश को बढ़ाने के लिए । इस मामले में कोई सत्तापक्ष नहीं है, कोई विपक्ष नहीं है । यहीं पर सत्तापक्ष और विपक्ष हैं इस गैलरी के बाहर सत्तापक्ष और विपक्ष नहीं है । हमारे लोग कहीं बन्द करके नहीं रखे गये हैं और नहीं कहीं अलग इकट्ठा किये गये हैं आपसे नमस्ते करते हैं, मिलते हैं तो हमें खुशी है । आपने तो कहा है कि कोई अगर हमारे साथी से मिले या मुलायम सिंह से जो मिले भी या इनके कार्यकर्ता से मिले तो उसको सजा ऐसे अधिकारी को भी सजा और कार्यकर्ताओं को भी सजा । मान्यवर, तू-तड़ाक की भाषा, का प्रश्न किया जा रहा है हमने तो कह दिया

था कि संस्कारहीन लोगों की भाषा का हम जवाब नहीं देते, हम चाहते हैं कि संकीर्णता से उठकर हम आज उत्तर प्रदेश की स्थिति को सुधारे । जहां हमारी गलतियां हैं वह हमें बतायें, अभी तो हमें दस दिन हुए हैं ।

(श्री स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा टोका-टाकी करने पर)

आप तो बहुत जोर-जोर से बोलते हैं मौर्या जी, आप जो सुझाव देंगे हम स्वीकार करेंगे, डरना नहीं हम नाराज नहीं होंगे ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

हम डरने वाले नहीं हैं ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

वह हम जानते हैं, खुद आपके बारे में हमें सब पता है ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

आप नहीं जानते हैं ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, इन्हें यह भी पता नहीं है । अध्यक्ष महोदय, जब आपने निर्देश दे दिया है, रूलिंग दे दिया है उसके बाद भी वे खड़े हैं । अभी इन्हें यह भी नियम पता नहीं है, इन्होंने कुछ सीखा भी नहीं है । हम जानते हैं कि आपको यहां इतना क्यों बोलना पड़ रहा है, हमें पता है शाम को जवाब देना पड़ेगा । हमें सब पता है ।

(श्री स्वामी प्रसाद मौर्य के पुनः खड़े होने पर)

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी मैं इजाजत नहीं दे रहा हूं । मैं बैठा नहीं हूं ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, नेता सदन क्या इस तरह से व्यक्तिगत आक्षेप करेंगे ?

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, मैं जब बैठ जाऊंगा तब आप बोल सकते हैं । जब आप ठीक हो जायेंगे तब हम बैठ जाया करेंगे ।

नेता, विरोधी दल (श्री लालजी टण्डन)–

मान्यवर, क्या यह बीमार हैं ? (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, हमारे साथी थे, मौर्या जी साथ रहे हैं क्या इतना भी हक नहीं देंगे कहने का ?

एक ही हमारा लक्ष्य है कि सत्ता का उपयोग जनता की भलाई के लिए हो, उत्तर प्रदेश के विकास के लिए हो । हर व्यक्ति समाज को न्याय अपेक्षित है इसलिए हम आपसे अपील करना चाहते हैं कि संसाधनों की कमी होते हुए भी जनता के कल्याण के कार्य को रूकने नहीं दिया जायेगा और विशेष रूप से ज्यादा सरकारी फिजूलखर्ची पर रोक लगेगी । पहले ही दिन हमने अपने ऊपर होने वाली फिजूलखर्ची पर रोक लगा दी । जैसे ही हमने शपथ ली, उसी समय से जो 3-4 लाख रुपया चाय, काजू और अन्य खाने की चीजों पर खर्च होता उसे रोक दिया । उस पर हमने एक भी पैसा खर्च नहीं किया । मुख्यमंत्री फ्लोट की 12–14 गाड़ियां हमने घटा करके केवल 7 गाड़ियां कर दी हैं । इसके लिए हमारे सिक्योरिटी के लोग लिख करके देते हैं तो उनकी जिम्मेदारी कम हो जाती है लेकिन मैं चाहता हूं कि जितनी गाड़ियां मुख्यमंत्री बनने से पहले पा रहे थे उतनी ही गाड़ियों से काम चल जाय । इस प्रकार से हम फिजूल-खर्ची पर रोक लगा रहे हैं । हर मंत्री पर, सरकारी अधिकारी पर फिजूलखर्ची कम करके जो गरीब भूखे लोग हैं, जिनको बहुत उम्मीदें हैं, जो इस सरकार के आने पर त्यौहार मना रहे हैं, लड्डू बांट रहे हैं, उनको राहत पहुंचायेंगे । जो लोग जनता के हकों के लिए तकलीफ सहने की आदत नहीं डालेंगे, वह जनता के कभी हितैषी नहीं हो सकते । हमें जनता के हितों के लिए जनता की सुविधाओं एवं प्रदेश के विकास के लिए तकलीफ सहने की आदत है । यह सरकार सुख-सुविधाओं के लिए नहीं बनी है, यह उत्तर प्रदेश की महान जनता की सरकार है । इसलिए आपने देखा कि हमने जो आदेश दिया है वह जनता के हितों को ध्यान में रखकर दिया है । पहले जो हमारी मां, बहनें थीं, जिन्हें पालीथीन की थैलियां वगैरह बनाने से रोजगार मिल जाता था, वह बन्द हो गया है । आज पालीथीन हैं, तो सारे साग-सब्जी लेने वाले लोग अब पालीथीन का बैग ले करके चले जाते हैं लेकिन तमाम पालीथीन नालियों में भरी पड़ी हैं, प्रदूषण हो रहा है, बीमारियां फैल रही है, इसलिए हमने निर्देश दे दिया है कि महीन थैलियों के निर्माण और उपयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये । इससे रोजगार भी मिलेगा, प्रदूषण भी कम होगा और बीमारियों से भी बचाव होगा और नालियां रूंधने से बचेंगी । हम जानते हैं कि हजारों कागज की थैलियों में कूड़ा भरा जा रहा है । मुझे विश्वास है कि उत्तर प्रदेश सरकार का यह पैगाम पूरा हिन्दुस्तान स्वीकार करेगा । आपने देखा कि आज किसानों की लाइन लगी हुई है । देवरिया में बकाये वाले गन्ना किसानों की लाइन लगी है, रूपया बंट रहा है, यह 760 करोड़ रूपया है, अध्यक्ष महोदय, बहुत जल्दी हम इस 760 करोड़ का भुगतान कर देंगे । जो सरकारी चीनी मिल हैं, और जो मिल निजी क्षेत्र में हैं, उनको हमने 15 दिन का समय दिया है । उनकी कुछ बाधायें हैं, उनको हमने सुनने का मौका दिया । अब यदि वह 15 दिन में भुगतान नहीं करते तो यह दो रास्ते होते हैं या तो वह सुधर जायें, हम कड़वा कदम पहले नहीं उठायेंगे, लेकिन अगर वह नहीं सुधरते हैं तो हमें इन किसानों के हितों के लिये कड़वा कदम उठाना पड़ेगा । इसमें हम आपका समर्थन चाहते हैं, सहयोग चाहते हैं । कितना अफसोस है कि किसानों को पैसा नहीं मिला, लेकिन उनसे वसूली होगी ।

अध्यक्ष महोदय, विडम्बना है कि छोटे-छोटे परेशान और बड़े मौज कर रहे हैं । इसलिये मैंने कह दिया कि एक करोड़ रूपये के ऊपर, वाले बिजली के बकायेदार जितने लोग हैं, उनकी सूची जारी करो और उनसे वसूली करो । आपने तो बहुतों को स्टे का मौका दे दिया, आपकी सरकार ने पैसा वसूलने का कोई प्रयास ही नहीं किया ? एक-दो, दस-पांच करोड़ बिजली का बकाया है और चोरी करें सो अलग लेकिन बंद किया जाता है, 100 रूपये बकाया वाले को, 200 वाले को । इसलिये हमने कह दिया कि

वसूली ऊपर से होगी । जो गरीब हैं, वह तो दे ही देगा । किसानों के कर्जे के लिये उनको हवालात में बंद नहीं करेंगे । निहत्था किसान, बेगुनाह किसान, इतना सीधा किसान, इतने सच्चे और ईमानदार लोग, उन पर गोलियां चलेगीं, लाठियां चलेंगी । हिन्दुस्तान को अप कहां ले जाना चाहते हैं, आपको कुछ पता नहीं, केवल अन्दाजे से सरकार चल रही है । आज जितने भी सम्पन्न देश हैं, जो महाशक्ति बनकर उभरे हैं, उन्होंने सबसे पहले किसानों को सुविधा दी है, तब वह महाशक्ति बने हैं । लेकिन यहां तो किसान को बरबाद किया जाता है । इस देश के अन्दर 76 फीसदी लोग खेती पर निर्भर हैं और इस प्रदेश में 72 फीसदी लोगों के पास खेती है, उनका अपमान, उनका उत्पीड़न, उनके पैदावार की लूट, उनको यहां उचित मूल्य नहीं मिलेगा उनका धान पड़ा रह जायेगा, गेहूं पड़ा रह जायेगा, उसका भुगतान नहीं होगा 3-3, 4-4 साल तक, जबकि वह पैसा रखा हुआ है, इस्तेमाल हो रहा है, ब्याज भी ले रहे हैं । किसानों की खुली लूट, हो रही है । उन से पूछा जाता है आप किस घर से आये हो, किस परिवार से आये हो, जिनको जनता का दर्द नहीं मालूम ? केवल लाल बत्ती ले ली, किसी की परवाह नहीं, सत्ता में आकर इतना घमन्ड आ गया, और उसमें इतना चूर हो गये । हमारी सरकार किसानों के लिये है, व्यापारियों के लिये है, गरीबों के लिये है, सबके लिये है, कोई अलगाव नहीं, और कोई समाज में भेद नहीं । प्रत्येक नागरिक कानून के दायरे में बराबर है । आपने तो उत्तर प्रदेश की गरिमा को गिराया है कलंकित किया है, इस कलंक को हमारी सरकार को मिटाना है । अध्यक्ष महोदय, हमने छात्रसंघों के चुनावों को अनिवार्य कर दिया है, अब छात्रसंघ का चुनाव कराना अनिवार्य होगा, जो नहीं करायेंगे, उनको सरकारी मदद खत्म । अभी कल ही एक फैसला यह भी लिया है कि 30 जून, 1995 तक जो फीस थी, उसके बाद बढ़ी हुयी फीस समाप्त होगी अभी तो यह पहला चरण है । यह सरकार काम से बोलेगी, भाषण से, टी०वी० चैनल से, अखबारों से नहीं और सभाओं में भाषणों द्वारा प्रचार करके नहीं बोलेगी । यह सरकार ऐसे बोलेगी कि मजदूर, किसान बुनकर, ड्राइवर, टीचर, द्वारा व्यापारी वकील प्रोफेसर अपने घर बैठे महसूस करें कि पिछली सरकार और इस सरकार में अन्तर है तभी हमारी सफलता है ।

हमारी सरकार इस तरह की होगी जो अपने काम से बोलेगी । अखवार टी०वी० चैनल दूरदर्शन रेडियो से नहीं बोलेगी, हमारा ऐसी ही सरकार चलाने का लक्ष्य है और हम उसको पूरा करेंगें । व्यापारियों के लिए हमने फैसला किया है कि इंस्पेक्टर राज खत्म हो । इसका विकल्प हम सभी दलों से सहयोग से मिलकर निकालेंगे । सभी दलों के नेताओं से हम बात करेंगे । बैट का विरोध हमने लोकसभा में भी किया है, हमारी जुबान एक है, जो लेक सभा में थी वही जुबान अब प्रदेश में सरकार में आकर आज भी है । वैट का क्या रास्ता होगा, उस पर हम विचार करेंगे ? हम उत्तर प्रदेश में वैट लागू नहीं करेंगे । इस तरह से हमने व्यापारियों को यह कुछ राहत देने का काम किया है । अभी आर्थिक स्थिति गम्भीर है, खजाने पर कर्ज है । उसको ठीक करने के बाद कोशिश करेंगे कि हम जो बेरोजगार नौजवान हैं, पढ़े-लिखे लोग हैं, उनको रोजगार दें । अगर रोजगार नहीं दे सकते तो बेरोजगारी भत्ता देंगे । हम चाहते हैं कि इसकी शुरूआत की जाय । इसके साथ ही यहीं पर अपनी बात खत्म करना चाहता हूं । बोलना तो बहुत था, तमाम मौके बोलने के आयेंगे, बजट पर बोल लूंगा । हम यह अपेक्षा करते हैं कि पूरा सदन हमारा समर्थन करे । हम चाहते हैं कि जो दलों के नेता हैं वह अच्छे-अच्छे सुझाव दे दें । हम यह भी चाहते हैं कि बहुमत-अल्पमत का सवाल न हो,न पूरा सदन सर्व-सम्मति से हमें सरकार चलाने का अवसर दे । इसी प्रार्थना के साथ अध्यक्ष महोदय, अपनी बात समाप्त करता हूं ।

(श्री लालजी टण्डन, नेता प्रतिपक्ष के खड़े होने पर भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों ने मेजें थपथपाई)

श्री लालजी टण्डन–

अध्यक्ष महोदय, आज बहुत दिन बाद सदन में बोलने का अवसर मिला है । सभी की निगाहें भिन्न-भिन्न हैं । सदन में दायित्व बदलता है, मौके नहीं होते । प्रमोद जी, अभी इतनी सी बात समझ नहीं पाये हैं ।

* श्री प्रमोद कुमार–

मैं समझ पाया या नहीं समझ पाया लेकिन बहिन जी आपको समझ गईं ।

श्री लालजी टण्डन–

हम माननीय नेता सदन को भी समझते हैं । हमारा विभिन्न मोर्चों पर लम्बा साथ रहा है और खूब लड़े हैं । यह विशेषता न उनकी जायेगी और मेरी । एक बहस का फोरम होना चाहिए । हम चाहते हैं कि तर्क के आधार पर सदन की सार्थकता सिद्ध हो । हल्ला मचाने में हमारा यकीन न पहले था, न आज है । तर्कों में हम कहीं पर थकने वाले नहीं हैं । कहीं अगर सरकार गलत करेगी तो हम उसकी आलोचना करेंगे, अच्छे कामों में जहां हमारे सहयोग की जरूरत होगी वहां पर हम आपके सहयोगी भी साबित होंगे । मान्यवर, लोकतंत्र की व्यवस्था इसी मूल सिद्धान्त पर आधारित है आज तो बदले-बदले मेरे सरकार नजर आते हैं । आज पहला दिन है इसलिये अगला सेंटेंस नहीं कहूंगा । सत्ता पक्ष का जो मुखिया होगा उसके अनुसार सदन चलेगा लेकिन विपक्ष की ड्यूटी होती है, उसका भी एक कार्य होता है सदन की मर्यादाओं को बनाये रखने का । मैं आपको एक आश्वासन दे सकता हूं कि हमारे व्यक्तिगत संबंध कभी खराब नहीं होंगे और इस सदन की मर्यादायें मेरे द्वारा कभी भंग नहीं होंगी । पहले भी आपने मेरी आलोचना सुनी है । अब भी मैं आपको नेता सदन का सम्मान देते हुये अपने धर्म का पालन करूंगा और जब सरकार विचलन की तरफ जायगी तो जितनी मेरी शक्ति आलोचना करने की है उसमें कहीं कमी नहीं आयेगी और उससे रास्ता निकलेगा । दुनियां में लोकतंत्र का अगर कहीं पहला उदाहरण है, लोकतंत्र का दर्शन किसी ने दिया है तो इस देश ने दिया है । कहा गया है "मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना एकी हम सत्य विप्रा बदा वदन्ति" हर व्यक्ति के अलग-अलग सोचने के बावजूद सत्य एक है । जिस लक्ष्य पर पहुंचना है उसकी अलग-अलग सरकारें अलग-अलग तरह से उसकी व्याख्या करती हैं । सत्ता में बैठे हुये लोग अपनी तरह से व्याख्या करते हैं और विपक्ष में बैठे हुये लोग अपनी तरह से व्याख्या करते हैं लेकिन लक्ष्य सबका एक है और वह है प्रदेश का उत्थान । इसमें कोई शक नहीं है कि प्रदेश को जितना आगे बढ़ना चाहिये था उतना नहीं बढ़ा । लेकिन उसके लिये माननीय नेता सदन आपकी जिम्मेदारी किसी से कम नहीं है । जिनकी आज आप आलोचना कर रहे हैं उनको इस प्रदेश में सबसे पहले सम्मान आपके द्वारा दिया गया था । सुश्री मायावती सबसे पहले आपके साथ थीं । वह एक सिद्धान्तहीन समझौता था । जब सिद्धान्तहीन समझौता करके आगे बढ़ेंगें तो आने वाले समय में जो परम्परायें हैं वह बिगड़ जायेंगीं । वह परम्परायें बिगड़ी और आज वह परम्परायें कहीं से कहां पहुंच गयीं और इस सदन ने वह दिन देखे जो

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

इसके पहले कभी नहीं देखे गये । आप उस आसन पर बैठे हैं जहां कभी इस देश के सबसे विद्वान नेता सदन के रूप में श्री सम्पूर्णानन्द जी बैठे थे । आप उस आसन पर बैठे हैं जहां कभी चौधरी चरण सिंह बैठे थे । आपका उतना ही विशाल व्यक्तित्व हो इसके लिये मेरी शुभकामनायें हैं । मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि आपका व्यक्तित्व किसी से कम है लेकिन मेरी शुभकामानायें हैं कि वह बढ़े लेकिन आप जो कह रहे हैं वह चरितार्थ होकर दिखायी दे । क्षमा करेंगे, पिछले एक सप्ताह से, जिन चीजों को आप अनुचित कह रहे हैं वही हो रहीं हैं । जिस तरह से शहरों में फायरिंग हो रही है और असलहे लेकर बाजारों में घूमा जा रहा है वह ठीक नहीं है ।

आपकी सदाशयता होने के बावजूद भी उन ताकतों को आप रोक पायेंगे इस प्रश्न का उत्तर आपको देना होगा । केवल सदन की मर्यादा हम और आप बनायें रखें और सड़कों के ऊपर उपद्रव हो, सड़कों के ऊपर अव्यवस्था हो तो यह सरकार की सफलता नहीं मानी जायगी । जिस दिन आपकी घोषणा हुयी मान्यवर, उसी दिन बरेली में साम्प्रदायिक दंगा हुआ ।

मेरा आरोप नहीं है कि आपने करा दिया लेकिन मेरा आरोप है कि कुछ तत्व ऐसे हैं जिन्हें लगता है कि कहीं न कहीं उन्हें अब सरपरस्त मिल गया है । राजनीतिक कारण से नहीं होगा लेकिन कल मेरे पास सूचना आई है कि पूर्व मंत्री श्री भगवान सिंह शाक्य उनके खिलाफ बदायूं में एक एफ०आई०आर० दर्ज हुई इसके बारे में मैं आपको बता दूंगा । पिछली सरकार में हम शामिल थे मेरा यह करेक्टर नहीं है कि आज वह खराब हो गए क्योंकि हम भी उनके पार्टनर थे । अगर कोई शराबी के साथ चले तो जो न भी पीता हो उससे लोग शराबी मानते हैं और कहते हैं कि पीने लगा हैं । मुझे अच्छा लगा कि सदन में कम से कम बहुत दिनों बाद हंसी लौट आई है । कभी पार्लियामेंट्री टेंसन की बात हो या कठोर से कठोर बहस के बाद भी हंसी खुशी का फव्वारा छूटता था तो उससे टेंसन खत्म हो जाता था । मैं पहले दर्शक दीर्घा से देखता था पहले बंशीधर शुक्ला थे उस समय वह अवधी के बहुत बड़े कवि थे, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे उनका बड़ा सम्मान था और समाजवादी पार्टी के थे वह कविता में अपनी आलोचना किया करते थे । ईश्वर करे कि आपमें उस भाषा को सुनने की क्षमहता प्राप्त हो । ऐसी भाषा सुन सकें लेकिन उस समय मैंने देखा है कि सम्पूर्णानन्द जी मुख्यमंत्री थे और वी०वी० गिरि यहां के राज्यपाल थे श्री चन्द्र भान गुप्त का उस समय सिक्का चलता था तीनों बैठे थे उस समय पंडित जी खड़े हुए और उन्होंने अपनी बात कविता से कहनी शुरू की कि इस सरकार में कोई नाम से सुअर कोई काम से सुअर और कोई चाम से सुअर यह तो सुअरों की सरकार है । उस समय राज्यपाल महोदय का नाम वराह वेंकट गिरि था और सम्पूर्णानन्द के बारे में सभी लोग जानते हैं कि उनका कोई सुन्दर चेहरा नहीं था ।

श्री अतीक अहमद–

हम लोग आपको सुनना चाह रहे हैं ।

श्री लालजी टण्डन–

इस सत्र में अतीक पहली बार आए हैं जरा धैर्य रखें । इस सदन में जो परम्परा रही हैं अगर उसका ज्ञान नहीं होगा तो हममें से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने उन क्षणों को न देखा है न पढ़ा है । मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि जो व्यवस्थाएं अध्यक्ष पीठ से दी गई हैं या जो कार्यवाही उस समय की है उसे पढ़ें । उन्हें याद करें । जब आपकी और बहुजन समाज पार्टी की मिली जुली सरकार थी उस समय महात्मा गांधी के बारे में कुछ आपत्ति जनक बात कही गई थी मैं दोहराना नहीं चाहता आपको याद होगा उस समय मैंने कितना मुखर विरोध किया था । अगर कोई महापुरूषों के बारे में आपत्तिजनक बात करता है, उनको अपमानित करता है तो वह अपने पूर्वजों को लांछित करता है । यह सब जैसे डा० लोहिया हों, चाहे जय प्रकाश जी हों, दीन दयाल जी हों, अम्बेडकर जी हों, अनेकों हैं । सरदार पटेल हों, पंडित जवाहर लाल नेहरू हों । यह सब लोग थे जिन्होंने देश को आजाद कराया था । गांधी जी के बारे में क्या कहना । उनकी तो अलग ही स्थिति थी । जिन्होंने देश को आजाद कराया उनमें कोई भेद-भाव करने की बात नहीं है । अपने आचरण के बारे में क्या कहूं । मैंने कहा कि नेता सदन को मेरे किसी आचरण से यह लगा हो कि मैंने उनकी अवज्ञा की हो । मैंने कभी सामने बैठकर इधर के या उधर लोगों में कोई भेद-भाव किया हो, मैं यह नहीं बता सकता कि कमरे के अन्दर बैठकर किसी विषय पर, किसी बात पर हमारा तालमेल हुआ है या नहीं । इसको यहां बताने की आवश्यकता भी नहीं है । आप खुद समझ रहे होंगे कि किस तरह से किस विषय में हमारे किस तरह से तालमेल हुए हैं । आप यह कहते हैं कि आपको अवसर नहीं दिया गया । मान्यवर, 6 महीने तक यह इन्तजार किया गया । मैंने उस समय कहा था कि जनता ने हमको सत्ता चलाने के लिये नहीं चुना है । जिसको जनादेश मिला है वही सरकार चलायें । आपको संख्या देनी थी ।

मैं इस विषय पर नहीं कहना चाहता क्योंकि आज पहला दिन है । आप संख्या पूरी नहीं कर पाये । हम विश्वास करते हैं संवैधानिक पदों पर । जब हम यहां पर हैं तो इस पीठ के सामने सिर झुकाते हैं । आप इस सदन के नेता हैं, मैं आपका सम्मान करता हूं तो उसका वही प्रतिदिन भी चाहता हूं । व्यवस्था को हिलाने में विश्वास नहीं रखता । जो कुव्यवस्था है तो उसको बदलने के लिये एक आम सहमति बननी चाहिए । कुछ लोग ऐसे हैं जिनके सामने न देश है, न प्रदेश है । कुछ नाम हैं जिन नामों के आधार पर न तो यह प्रदेश का शासन चलाया जा सकता है और न यह व्यवस्था चलाई जा सकती है । आपको हकीकत में जाना होगा । आपने अभी एक छोटी सी बात कही मैंने यहां से आपको उसका रिस्पोंस दिया कि पालीथीन एक छोटा सा विषय है । आज जिस तरह से पौलीथीन को खाकर जानवरों की मौत हो रही है, गाय जिस तरह से मरती है उसको देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं । मैंने खड़े होकर एक आन्दोलन चलाया उन जानवारों का अपरेशन करवाया जिसमें 30–30 किलो पालीथीन 10–10 लोग खींच कर निकालते थे । यह सारा टेलीविजन पर भी दिखाया गया और जो लोगों ने देखा होगा मानवता के नाते उनका दिल दहल गया होगा । इसी तरह से जो जल भराव की स्थिति है । नाले चोक हो रहें हैं । सीवर सीमेन्ट की तरह जाम हो रहे हैं । मैंने एक कानून बनाया था लेकिन वह इफैक्टिव नहीं हो सका जिससे कि यह स्थिति रोकी जा सके । मैं समर्थन करूंगा अगर आप इसको रोकने के लिये कोई कारगर व्यवस्था करते हैं । मेरा पूरा समर्थन है आपको । मैंने पहले दिन कहा है कि न हमारा विश्वास किसी सरकार को अस्थिर करने में है न हुड़दंग करने में । एक पाजिटिव औपोजीशन चाहते हैं । जिस

दायित्व को इस सदन ने मुझे सौंपा है उसको अच्छी तरह से निर्वहन करने की जिम्मेदारी है कभी कटु भी बोलना पड़ सकता है । वैसे तो न स्वभाव से न मन से कटुता मेरे में है, यह आप जानते हैं । मान्यवर, आपने जो घोषणायें की हैं मेरी शुभकामनाएं हैं कि आप वह पूरी कर पायें । आप 14 घंटे बिजली इस प्रदेश को दे पायें हमारी आपके साथ पूरी सद्भावना हैं आप सफल हों ।

(सत्तापक्ष के सदस्यों ने मेजें थपथपाई)

लेकिन कैसे होंगे इसका उपाय आपको बताना पड़ेगा बिजली का जेनरेशन नहीं बढ़ रहा है ? श्रीमन् आनपारा सी में किसी एक की जिम्मेदारी नहीं है वह जमीन पर नहीं आ पाया, आनपारा-बी जब मैं 1992 में था तब शुरू करवा दिया था, आपके वक्त में था, अगर एक हजार मेगावाट का और शुरू हो जाता तो संकट का सामाना नहीं करना पड़ता । बिजली ऐसी चीज नहीं है , प्रदेश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए एन०टी०पी०सी० से अगर बिजली खरीदने की बात करते हैं तो कितनी बिजली की आवश्यकता होगी इसको देखना होगा । आपकी सदास्यता हो सकती है । 14 घंटे बिजली मिले हमारी भी है कि मिले लेकिन यह इतना आसान नहीं है तुरन्त संभव हो सके इसके लिए प्रयास करना होगा ।

(व्यवधान)

(श्री लालजी टण्डन को हल्की खांसी आने पर कुछ मा० सदस्यों द्वारा पानी मंगाए जाने की बात कहने पर)

श्री प्रमोद कुमार–

आपको आज पानी पीने की नौबत हमारी वजह से नहीं आई है यह क्यों आई, जब आप राखी बंधवाकर आए तो हमने कहा था कि आपको जो कुछ देना हो दे दीजिए तो आपने कहा कि हमने पूरा प्रदेश दे दिया । संविधान के अनुच्छेद 164 (2) में लिखा है कि मंत्रि-परिषद् की सामूहिक जिम्मेदारी होती है अगर नैतिक साहस था तो मंत्रि-परिषद् से त्याग-पत्र देकर हट जाते । जो पाप किया है उसके बराबर के भागीदार आप और आपकी भाजपा पार्टी है इससे बचा नहीं जा सकता है ।

(व्यवधान)

श्री लालजी टण्डन–

बहुत से लोग हैं जो सरकार होने पर कसीदे पढ़ते हैं उसके बाद विरोध करते हैं । मेरा इशारा प्रमोद तिवारी जी की तरफ नहीं है ।

श्री प्रमोद कुमार–

मेरी तरफ हो भी नहीं सकता है । भाजपा को विरोध करने की जहां तक बात है तबसे विरोध किया है जब से मैं पैदा हुआ हूं ।

श्री लालजी टण्डन–

आज जो कुछ है उसमें प्रदेश के हित में सद्भावना पूर्ण परिस्थितियां पैदा होनी चाहिए । अपराधियों के प्रति क्या दृष्टिकोण होगा यह तय करना होगा किस सीमा तक लोगों को उद्दण्डता का अधिकार देना

चाहते हैं । हम देखना चाहते हैं, गरीबों के लिए पैसा आ रहा है, जो भारत सरकार से योजनायें चल रही हैं उसमें और ज्यादा संस्थान लग सकें । गरीबों के लिए अनेक योजनाएं चल रही हैं, जो गरीब के लिए आ रहा है, वह उस तक पहुंच जाए । अगर इतना सब होगा तो निश्चित रूप से यह प्रदेश सुधार की ओर जायेगा । आपको अगर इस सदन का विश्वास प्राप्त हो जायेगा, मुझे अपना धर्म निभाना है, मैं अपना धर्म निभाता रहूंगा । लेकिन इस सदन का विश्वास हासिल करने के बाद, क्योंकि यह सदन जनता से बनता है, अगर इसका लाभ उस गरीब जनता को न मिला तो इस विश्वास का कोई अर्थ नहीं होगा । विश्वास की सोच से ही आपको विश्वास प्राप्त है । मेरी आपको शुभकामनाएं हैं । मैं इन शब्दों के साथ आपके सफल होने की कामना करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी ।

(श्री स्वामी प्रसाद मौर्य के खड़े होने पर बसपा के सदस्यों ने मेंजे थपथपा कर उनका स्वागत किया)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी एवं इस सदन के सभी माननीय सदस्यगण, अभी माननीय नेता सदन ने विश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए तमाम ऐसी बातें कहीं, जो बेसिर-पैर की हैं । शुरूआत किया माननीय नेता सदन ने कहां खड़े थे, कहां जाना है, और कहां है ।

(कुछ सदस्यों के एक साथ खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष–

माननीय मुख्य मंत्री जी जब बोल रहे थे तो किसी ने व्यवधान नहीं किया, आप लोग शान्त रहें ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

आप लोहिया जी और समाजवाद के साथ खड़े थे तो उस वक्त हम भी साथ थे, चौधरी चरण सिंह के साथ थे, हम भी उस समय आपके साथ थे लेकिन कहां जाना है, जब आप भटक गये, समाजवाद का नाम लेकर जब परिवारवाद की ओर बढ़ गये तो साथ छोड़ना पड़ा । कहां हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं है । आज पूरे प्रदेश के वे घोर अपराधी जिन पर दो दर्जन, तीन दर्जन, चार दर्जन मुकदमें हैं, क्या वे सारे मुकदमें हमारी सरकार के समय के थे ? मान्यवर, आप दो बार मुख्य मंत्री थे, उस समय के थे । हमारे बीच में माननीय कल्याण सिंह जी बैठे हुए हैं, वह प्रदेश के दो-दो बार मुख्य मंत्री थे, वह मुकदमें उस समय के थे लेकिन आपकी सरकार ने कभी इन गुंडों और माफियाओं के गिरेबान में हाथ डालने की हिम्मत नहीं की, कानूनी कार्यवाही करने की हिम्मत नहीं पड़ी । हमारी हुकूमत में, जैसी कि हमारी सरकार थी, वह भी जानती थी कि बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी दोनों विपरीत विचारधाराओं की पार्टियां हैं, उत्तर प्रदेश में 2002 में जब विधान सभा का चुनाव हुआ, किसी भी राजनीतिक पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला, सबसे बड़ी पार्टी के रूप में समाजवादी पार्टी आयी थी । महामहिम राज्यपाल जी ने आपको समय भी दिया था । माननीय विधायकों की सूची भी मांगी थी, 10 दिन, 15 दिन, 30 दिन ही नहीं, 3 महीना का समय मिला था लेकिन आप वह संख्या पूरी नहीं कर पाये थे । ऐसी हालत में हम विपरीत विचारधाराओं के लोग न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर साझे की

सरकार बनाये थे । उस न्यूनतम कार्यक्रम में कानून का राज और प्रदेश के विकास का कार्य निश्चित था । हमने प्रदेश को कानून का राज दिया । कानून का राज स्थापित करने के प्रति हमने कभी किसी के प्रति मोह नहीं किया । अगर कोई अपराधिक व्यक्ति है, अगर कानूनी कार्रवाई उसके खिलाफ न्यायालय के द्वारा हो रही है तो हमने हस्तक्षेप नहीं किया । कुछ लोग कहते हैं कि बहुजन समाज पार्टी ने दूसरी पार्टियों के लोगों को चिन्हित करके जबरन परेशान किया । मैं कहना चाहता हूं कि उनका अपराधिक चरित्र हमारी सरकार के समय का नहीं बल्कि आपकी सरकार के समय का है और ऐसे लोग अगर उनके अपराधों पर बंदिश हो गयी होती तो भी आगे कार्रवाई की जरूरत नहीं पड़ती । हमने किसी के साथ सौतेला व्यवहार नहीं किया । अगर वह कानून की निगाह में मुजरिम है तो हमने कानूनी कार्यवाही किया अगर वह कानून की निगाह में अपराधी है तो स्वामी प्रसाद मौर्य यह तय नहीं करते कि वह दोषी है यह प्रमाण पत्र आप नहीं दे सकते इसका प्रमाण-माननीय न्यायालय देता है ।

(व्यवधान)

श्री अतीक अहमद–

मैं कहना चाहता हूं कि जेल के अंदर डेढ़ सौ मुकदमें मुझ पर लगाये गये ।

श्री अध्यक्ष–

आपका नाम बोलने वालों की सूची में है जब आपका अवसर आएगा तो आप खण्डन कर दीजिएगा ।

* श्री अतीक अहमद–

मैं कहना चाहता हूं कि आपके माध्यम से जवाब आ जाये मौर्या जी ने कहा कि वह मुकदमें पुराने हैं वह कल्याण सिंह जी के समय के थे । अभी 6 तारीख को लखनऊ में गिरफ्तार किया गया है ।

(व्यवधान)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी मेरी मंशा किसी भी माननीय सदस्य के दिल को दुखाना नहीं है । हम सभी का सम्मान करते हैं । लेकिन जो सही बात है मैं इस सदन के माध्यम से पूरे प्रदेश को जानकारी देना चाहता हूं । मैं कह रहा था कि हमने कभी भी कानून की राह में हस्तक्षेप नहीं किया । हमने कभी किसी के बारे में इस, प्रकार से काम नहीं किया ।

(व्यवधान)

(श्रीमती गीता सिंह सहित सत्ता पक्ष के कई सदस्य अपने स्थान पर खड़े हो गये )

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि हमारी बहुजन समाज पार्टी की सरकार साझा सरकार थी और श्री उदयभान सिंह जी हमारी पार्टी के विधायक थे हमारी सरकार बनने से पहले वह जेल में थे हम चाहते तो उन्हें जेल से बाहर कर सकते थे लेकिन हमने उत्तर प्रदेश की जनता को वचन दिया था कि हम कभी कानून के साथ खिलवाड़ नहीं करेंगे ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हमने कानून में दखल नहीं दिया और हमारी हुकूमत के रहते हुए वह जेल में थे । इसलिए थे कि जिससे हमारी नेता बहन मायावती और उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री पर यह आरोप नहीं लगे कि दूसरे विधायकों को जेल में और बी०एस०पी० के विधायक को जेल के बाहर । हमारी सरकार के सहयोगी श्री मुख्तार अंसारी जी को हमने जेल से बाहर लाकर मेहमाननवाजी नहीं करायी ।

(व्यवधान)

हमें श्री विजय सिंह जी ने भी समर्थन दिया था लेकिन कभी भी कानून को नजरअंदाज करके हमने हीरो के रूप में लखनऊ बुलाने का काम नहीं किया था । माननीय अध्यक्ष जी, आज परिवर्तन हुआ है । पहले जब राज था कानून का आज राज है गुन्डों का .....

(व्यवधान)

मान्यवर, मैं माननीय नेता सदन का सम्मान करता हूं । मैंने उन्हीं के संरक्षण में राजनीति करना सीखा था । लेकिन जब मैंने यह देखा कि उनकी कथनी और करनी में अन्तर है जो मैंने अपना रास्ता अलग तय किया । लेकिन माननीय नेता सदन, मुलायम सिंह जी एक बड़े नेता हैं और केन्द्र तक हो आये हैं । मैं उनके विषय में कुछ नहीं कहना चाहता हूं लेकिन इतना जरूर कहना चाहूंगा कि सदन में जो भी घोषणाएं करें उसका अनुपालन भी सुनिश्चित कराने का काम करें । तमाम ऐसे मुख्य मंत्री आयें जो घोषणाएं करने का काम किये और वह घोषणा मंत्री के रूप में जाने गये । तो आपसे यह अनुरोध है कि आप भी घोषणा मंत्री बनने का काम मत करियेगा । मान्यवर, आज पूरा उत्तर प्रदेश इस बात का गवाह है कि उत्तर प्रदेश में जितने भी अपराधी थे, हमारे तमाम साथियों को बुरा लग रहा होगा कि मैं कड़वा बोल रहा हूं, वह सब बाहर हैं । कानपुर के न्यायालय ने टिप्पणी की थी कि पोटा के अपराधी को लखनऊ में न भेजा जाय और सदन में उपस्थित होने के लिए उसने आदेश नहीं दिया था लेकिन आज वह इस सदन में मौजूद हैं । मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आज सरकार के बदलते ही अपराधी लखनऊ में मेहमान बन गये हैं । मैं नेता सदन से यह कहना चाहता हूं कि आपकी जवाबदेही पूरी उत्तर प्रदेश की जनता से है, गुन्डे माफियाओं से नहीं है । उनको इस बात के लिए जनता को जवाब देना पड़ेगा । जो आप कानून की धज्जियां उड़ाने का काम कर रहे हैं और उत्तर प्रदेश को अपराध की ओर ले जाने का काम कर रहे हैं यह आपको बहुत महंगा पड़ेगा । इसलिये मैं कह देना चाहता हूं कि अभी एक हफ्ता भी सरकार को बने नहीं हुआ है और मुझे धमकियां आ रही हैं कि स्वामी प्रसाद मौर्य बहुत बोल रहे हो तुम्हें उड़ा दिया जायेगा ।

(सत्ता पक्ष की ओर से आवाजे आने लगीं कि झूठ बोल रहे हैं)

माननीय अध्यक्ष जी, पहले कानून का राज था आज गुन्डों का राज हो रहा है । पहले उत्तर प्रदेश की जनता मस्त थी और गुण्डे त्रस्त थे, अब मामला पलट गया है अब जनता त्रस्त है और गुण्डे मस्त हैं, माननीय अध्यक्ष जी माननीय नेता सदन ने अपराधियों का हवाला देते हुए हमारे देश के तमाम महापुरुषों, अमर शहीदों के नाम लिये, जिनका हम रोज सुबह नमन करते हैं, उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं, माननीय नेता सदन ने शहीद चन्द्र शेखर आजाद जी, सुभाष चन्द्र बोस जी, महात्मा गांधी जी, जवाहर लाल नेहरु आदि के नाम लिए, चौधरी चरण सिंह जी आदि के नाम लिए और कहा कि उन्होंने

देश के लिए कुर्बानियां दी थीं और कुर्बानियों के नाते ही हम उनका नाम लेते हैं, उस पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं है, लेकिन उनकी मिसाल अपराधियों की परिधि में खड़ा करने के लिए दिया वह सब महापुरुष थे, ऐसे लोग जो प्रदेश और देश में दहशत के पर्याय हैं, चोरी, डकैती, हत्या, जिनका व्यवसाय हो गया है ऐसे लोगों की कतारों में महापुरुषों को खड़ा करना उनका अपमान है । माननीय अध्यक्ष जी माननीय नेता सदन, न्यायालय के सम्मान की बात करते हैं, हम तो बधाई देंगे कि जिस दिन वह माननीय न्यायालय के सम्मान का काम करेंगे । आपकी सरकार थी, आप मुख्य मंत्री थे और माननीय अध्यक्ष जी आप उस इलाहाबाद के उस माननीय न्यायालय में सीनियर एडवोकेट थे जब हल्ला बोल कर उस न्यायालय पर धावा बोला गया था, 13 सितम्बर को, माननीय अध्यक्ष जी मैं यही तो कहना चाहता हूं कि आप बहुत बड़े सम्मान के पात्र होंगे जिस दिन आप अपनी कथनी पर खरे उतरने का काम करेंगे । इसलिए बार-बार मैं यही कहना चाहूंगा यह पूरे प्रदेश के 403 विधान सभा सीटों के साथी, माननीय सदस्य और प्रतिनिधि के रूप में चुनकर यहां आते हैं तो ऐसे सदन से जिस पर पूरे उत्तर प्रदेश के लोगों की नजरें लगी रहती हैं, कोई ऐसी बात नहीं जानी चाहिए जो कल को लोग उंगलियां उठायें कि कहने के लिए तो बड़ी-बड़ी बातें और घोषणायें की गयीं लेकिन आचरण उसके ठीक उल्टा निकला, इसलिए माननीय अध्यक्ष जी मैं आपसे कहना चाहूंगा कि जहां तक रही बात सुश्री मायावती जी पर आरोप अभी माननीय नेता सदन ने लगाया, भ्रष्टाचार का, मैं कह देना चाहता हूं, मैं किसी भी बात से घबराने वाला नहीं हूं, सी०बी०आई० की जांच चल रही है, दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा, हम उसका स्वागत करेंगे और हमारी नेता बहन मायावती जी ने भी कह दिया है.....

(व्यवधान)

श्री राम विशुन आजाद–

अगर ऐसा था तो मायावती जी इस्तीफा देकर क्यों [xxx] गयी ?

(व्यवधान)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय बहन मायावती जी ने कह दिया है कि जिस दिन सी०बी०आई० दोषी करार कर देगी उस दिन वह राजनीति से सन्यास ले लेंगी ।

(व्यवधान)

सुश्री बहन मायावती जी आयरन लेडी और शेरनी लेडी के रूप में मशहूर हैं, अगर वह यहां पर होती तो सत्ता पक्ष के आधे से ज्यादा लोग सदन से गीदड़ की तरह से बाहर चले जाते । माननीय अध्यक्ष जी, हमारे नेता सदन का आचरण कैसा है इसका नजारा जिस दिन मा० मुख्य मंत्री शपथ लेने जा रहे थे उस दिन देखने को मिला । समाजवाद के नाम पर आपने यहां से लेकर दिल्ली तक में आप राजनीति के महारथी हैं, लेकिन उस दिन आपके इर्द-गिर्द कौन लोग थे, अम्बानी परिवार, गोदरेज

---

नोट :– [xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

परिवार, बजाज परिवार राष्ट्रीय सहारा परिवार और इसके अलावा और भी लोग थे । समाजवाद के इस मुखिया के साथ चलना चाहिए था मिल के मजदूरों को दलितों और शोषितों को खेत-खलिहान के लोगों को लेकिन वहां आपके इर्द-गिर्द चल रहे थे अभिताभ बच्चन, जया भादुरी, अभिषेक बच्चन, टीना मुनीम और कौन-कौन से हीरो-हिरोइन थे वह नेता सदन जी अलग से बता देंगे अपने जवाब में कि मौर्या जी आपने कुछ नाम छोड़ दिये हैं वह यह हैं । लोहिया जी के समाजवाद की तस्वीर अभिताभ बच्चन, जया भादुरी, टीना मुनीम से नहीं चलती है वह जो चौधरी चरण सिंह जी का सपना था, खेत-खलिहान से चलती है और न ही इन बड़े-बड़े पूंजीपतियों से चलती है ।

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है । मा० अध्यक्ष जी, जो लोग अपनी-अपनी विद्या में शीर्षस्थ हैं और जो इस सदन के सदस्य नहीं हैं उनके नाम पर आक्षेपात्मक टिप्पणी नहीं हो सकती । माननीय चौधरी जी ने तमाम लोगों का नाम लिया है इस तरह से सदन की कार्यवाही में इस तरह की आक्षेपात्मक टिप्पणी करना उचित नहीं है ।

श्री अध्यक्ष–

ठीक है इसे देख लेंगे अगर आक्षेप होगा तो निकाल देंगे और अगर सन्दर्भ है तो नहीं निकालेंगे ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, आज जो भानुमती का पिटारा इक्ट्ठा हुआ है, आज समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए जो कन्धा दे रहे हैं यह हैं राष्ट्रीय लोकदल, राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी, राष्ट्रीय कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टी, उत्तर प्रदेश लोकतान्त्रिक कांग्रेस, समता पार्टी, अखिल भारतीय कांग्रेस, समाजवादी जनता पार्टी और [xxx] का एक अलग ग्रुप ।

श्री अध्यक्ष–

यह [xxx] शब्द आरोप है । यह निकाल देंगे ।

(घोर व्यवधान)

आप लोग कृपया बैठ जाएं ।

(श्री दिनेश सिंह द्वारा बोलने का प्रयास करने पर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप बैठ जाइये । आप जो बोलेंगे वह लिखा नहीं जायेगा । जिस शब्द पर आपत्ति थी उस शब्द को मैंने निकाल दिया है, अब उसको छोड़ दीजिये और आगे बढ़िये ।

---

[x] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी, यह भानुमती का पिटारा कब फूटेगा यह अपने-अपने कंधे कब हटायेंगे ? नेता सदन को मैं आगाह कर देना चाहता हूं राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष यहां पर मौजूद जरूर हैं लेकिन नाम नहीं लूंगा क्योंकि वह इस सदन के सदस्य नहीं है । वह हमारी राष्ट्रीय नेता की विचारधारा को लेकर आगे बढ़ रहे हैं यह अच्छी बात है । लेकिन यही विधान सभा है जब मान्यवर, आपके लोगों का कपड़ा फाड़-फाड़कर, मार-मारकर बाहर किया गया था और यही नेता सदन जो वर्तमान में हैं, मैं कह देना चाहता हूं कि आप अभी भूले नहीं होंगे । मान्यवर, यह यही विधान सभा है जहां हमारे कांग्रेस के जिम्मेदार साथी श्री जगदम्बिका पाल जी जो वर्तमान में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भी हैं, मान्यवर, उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्यवाही 20 जून, 1995, पेज–32, अंक–2 इसमें जिस तरह से पाल जी ने कहा आपकी पीठ के सामने उसे मैं बता रहा हूं–"16 दिसम्बर, 1993 को इसी सदन में जनप्रतिनिधियों पर जो हमला हुआ वह किसी व्यक्ति के ऊपर हमला नहीं था वह लोकतन्त्र के ऊपर हमला था । उसमें श्री केशरीनाथ त्रिपाठी, श्री राम प्रकाश त्रिपाठी आदि कई लोग घायल हुए । उस दिन लोकतन्त्र और प्रजातन्त्र लहुलुहान हुआ तथा इस सदन की परम्परा टूटी थी, इस सदन की मर्यादा को चोट पहुंची थी पिछली सरकार के पहले दिन की शुरुआत ही हिंसा से हुई तथा जिस दिन वह सरकार गयी उस दिन 2 जून, 1995 को भी एक दलित महिला और उनके सम्मानित विधायकों को चोट पहुंचाने का प्रयास किया गया ।"

यह सारी जगदम्बिका पाल जी की बात हैं । माननीय अध्यक्ष जी, समय का पाला क्यों ऐसा हो गया है मैं जगदम्बिका पाल जी से कहना चाहता हूं कि आपने जो बात इस सदन में रखी थी उसको आप खुद झुठलाकर जिस कतार में खड़े हो रहे हैं उत्तर प्रदेश की जनता आपसे उसका जवाब लेगी । मान्यवर, हमारे दूसरे मित्र, हमारे बड़े भाई कांग्रेस के नेता श्री प्रमोद तिवारी हैं वह राम के रहे न रहीम के । वह बड़े दिनों से उम्मीद लगाये थे कि लाल बत्ती मिलेगी लेकिन वह भी उनकी राष्ट्रीय नेता ने साफ कर दिया । मान्यवर, इसी सदन में 20 जून, 1995 की विधान सभा की कार्यवाही में पेज–39 पर श्री प्रमोद तिवारी जी ने कहा था और आपके लिए कहा था जो आज माननीय नेता सदन हैं, इन्हीं के विषय में कहा था कि आज मैं फिर यह दोहराना चाहता हूं कि यदि मायावती जी भारतीय जनता पार्टी की बैसाखी को तोड़ दें तो हम उनको फिर से समर्थन देंगे । कहां चला गया वह वचन ? और मान्यवर, इसी विधान सभा की कार्यवाही के पेज–42 पर इन्होंने कहा था कि श्री मुलायम सिंह यादव जी अगर गये तो अपनी अराजकता की वजह से गये, पंचायती राज चुनावों में धांधली करने की वजह से गये, यह प्रमोद तिवारी जी का वर्जन है और इसके आगे कहा था कि श्री मुलायम सिंह जी लोकतन्त्र की हत्या करने की वजह से गये, मुलायम सिंह जी प्रेस पर अत्याचार करने की वजह से गये, श्री मुलायम सिंह जी विधायकों के ऊपर अत्याचार करने की वजह से गये, मुलायम सिंह जी ने कानून का पालन नहीं किया इस वजह से गये । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि यह वही विधान सभा है यह वही सम्मानित सदन है, जहां पर आपने पीठ के सामने अपनी इन बातों को कहा है, इसका जवाब उत्तर प्रदेश की जनता को देना पड़ेगा । मान्यवर, यही नहीं.....

श्री राम इकबाल सिंह–

मान्यवर, व्यवस्था का सवाल है, नेता सदन और नेता प्रतिपक्ष का तो टाइम तय नहीं होता है, तो क्या बाकी लोगों के लिए भी टाइम तय नहीं होता है ?

श्री अध्यक्ष–

मैं समय तय कर देता हूं।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं कुछ अपनी तरफ से नहीं कह रहा हूं, हमारे माननीय नेतागण जो यहां पर नेता सदन हैं उन्होंने जो कुछ तत्कालीन मुख्य मंत्री के लिए बोला था, मैं वही उद्धरण कह रहा हूं। मान्यवर, सूरज पश्चिम में निकल आया। माननीय कल्याण सिंह जी दो-दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रह चुके हैं। आज वह समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के सूत्रधार हैं, भीष्म पितामह हैं लेकिन यहीं माननीय कल्याण सिंह जी ने 20 जून, 1995 के पेज-43 पर विधान सभा की कार्यवाही में अपने उद्बोधन में कहा था कि श्रीमन् सब जानते हैं, सब कह चुके हैं कि प्रदेश में कानून का राज समाप्त हो गया था, जंगल राज कायम हो गया था, पिंडारी राज्य कायम हो गया था, लुटेरा राज कायम हो गया था और जनता उस सरकार से त्राहि-त्राहि कर उठी थी। अपराधी भयमुक्त हो गये थे और जनता भयभीत होकर, भयाक्रान्त होकर जी रही थी। जमीनों पर कब्जा करने और मकानों को हड़पने का अभियान चल रहा था, कानून की धज्जियां उड़ा दी गयी थीं। श्रीमन्, इस प्रदेश के अन्दर जातिवाद का जहर बो दिया गया था, समाज को तोड़ने की कोशिश हो रही थी। इस सम्मानित सदन के अन्दर मैं कहना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर वाह्य ताकतें देश को तोड़ने की कोशिश में लगी थीं और माननीय मुलायम सिंह जी उन आन्तरिक और वाह्य ताकतों के साथ सांठ-गांठ कर चुके थे, जो इस देश को तोड़ने का कुचक्र रच रहे थे। इसके लिए जातिवाद का जहर फैलाने की कोशिश कर रहे थे, तो उसे नाकाम करना था, यह कल्याण सिंह जी ने कहा था। उन्होंने कहा था कि लोकतन्त्र के 4 स्तम्भ हैं, उनको तोड़ने का प्रयास हो रहा था। 16 दिसम्बर, 1993 की घटना इसकी तरफ इशारा करती है। यहां भाजपा के विधायकों को लहूलुहान किया गया, यह केवल भाजपा के विधायकों का खून नहीं बहाया गया बल्कि इस सदन में विधायिका का खून बहाया गया। जातीयता के आधार पर पूरे प्रशासनिक तन्त्र को बांटने का कार्य किया गया और कार्यपालिका को निष्प्रभावी बना दिया गया, कार्यपालिका का मनोबल तोड़ा गया। फिर 13 सितम्बर, 1994 को पूरे प्रदेश भर में तनाव पैदा किया गया और बन्द के नाम पर जो कुछ हुआ, वह सब जानते हैं। मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के अन्दर उन्होंने तो कुछ गुण्डे बदमाश भेजकर न्याय के मन्दिर पर आक्रमण कराया था। मुख्य न्यायाधीश अपना कमरा छोड़कर भाग न गये होते तो कदाचित उनकी हत्या कर दी जाती। प्रेस जो लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ है लेकिन इसके ऊपर हल्ला बोलकर उसका गला घोंटने की कोशिश की गयी। इसी तरह राज्य के कर्मचारियों के विरुद्ध हल्ला बोला गया और उसमें 17 जानें ले ली गयीं।

(सत्ता पक्ष की ओर से टोकाटाकी पर व्यवधान)

* श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल–

यह तो पूरी कार्यवाही पढ़ रहे हैं।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष–

किसी कार्यवाही का उद्धरण दिया जा सकता है, इस बात की व्यवस्था पहले भी हो चुकी है। माननीय मौर्य जी, जल्दी समाप्त कर दीजिये।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय कल्याण सिंह जी ने इसी सदन में यह भी कहा था कि इस प्रकार लोकतन्त्र से जिस दिन जनता का विश्वास हट जायेगा और जनता अपने अधिकारों से वंचित हो जायेगी उस दिन प्रदेश के अन्दर अराजकता की स्थिति पैदा हो जायेगी और देश की जनता अपने संवैधानिक और लोकतान्त्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए रास्ते में निकल आयेगी। इसलिए मैं चाहूंगा कि यह दुर्दिन न आये जिससे सरकार को हटाया जाय और नयी सरकार का गठन किया जाय। इसलिए उन हालातों को देखते हुए हमने इनको समर्थन दिया।

श्रीमन् आपके माध्यम से यह भी कहना चाहता हूं कि कल्याण सिंह जी ने उस दिन यह भी कहा था कि भ्रष्टाचार के बारे में आज समय नहीं है कि हम कुछ कह सकें लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि चाहे चीनी मिलों को बेचने का मामला हो, आयुर्वेदिक औषधियों को बेचने का, नहरों की सफाई का मामला हो, जिसमें 62 करोड़ रुपया निकल गया और नहरों की सफाई नहीं हुई। इसी तरह ट्रान्सफर पोस्टिंग को एक व्यवसाय बना लिया गया और करोड़ों रुपये का लेनदेन हुआ।

(सत्ता पक्ष की ओर से टोकाटाकी पर व्यवधान)

श्री अम्बिका चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, किसी भी कार्यवाही को पूरी तरह पढ़ा जाना नियमों में नहीं है। केवल कार्यवाही का उद्धरण दिया जा सकता है, माननीय मौर्य जी पिछले 20 मिनट से भी अधिक समय से लगातार कार्यवाही पढ़े जा रहे हैं, ऐसा नियमों में नहीं है।

श्री अध्यक्ष–

कौन सा नियम है, वह तो भाषण के कुछ अंश पढ़ रहे हैं।

श्री अम्बिका चौधरी–

श्रीमन्, शब्दशः पूरे अंश को उन्होंने उद्धृत किया है। कार्यवाही के जिस बिन्दु से उन्होंने प्रारम्भ किया है एक तिथि 20 जून, 1995 के कार्यवाही के अंश की जो बात की है वह पूरी कार्यवाही को शब्दशः पढ़ा है। जिन माननीय सदस्यों के नाम लेकर, कल्याण सिंह जी, प्रमोद तिवारी जी, जगदम्बिका पाल जी, कार्यवाही का अंश नहीं पढ़ा बल्कि एक तरफ से शुरू करके क्रमानुसार रखने का काम किया है। मान्यवर, इस पर आपकी व्यवस्था आनी चाहिए। अध्यक्ष पीठ से इस संबंध में अनेक बार निर्देश हुये हैं जब इन कार्यवाहियों को उस क्रम से रखना हो, तो उसकी कापी पहले पटल पर रखेंगे नहीं तो उसको एथंटीकेट करके देंगें। शब्दशः इस प्रकार से नहीं पढ़ा जा सकता है।

श्री अध्यक्ष–

आप नियम बता दीजिए ।

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, मैं अभी उद्धरण देता हूँ ।

श्री अध्यक्ष–

चौधरी जी मैं आपकी बात को देख लूँगा । वैसे इस प्रकार का नियम नहीं है । माननीय मौर्या जी, अब आप समाप्त करिये, आधा घण्टा हो गया है ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि आपके जो साथी हैं, जो आपका साथ दे रहे हैं, उनकी टिप्पणी आपके विषय में क्या है । मैं केवल उद्धरण मात्र रख रहा हूँ, एक-एक की मिसाल रख रहा हूँ । माननीय कल्याण सिंह जी ने यह भी कहा था कि यदि इसी तरह से चीनी मिलीं, डाला, चुर्क आदि सीमेण्ट फैक्ट्रियों को बेचते-बेचते इस पूरी विधान सभा को भी बेच देंगे । यह माननीय कल्याण सिंह जी ने कहा था ।

* श्री राम करन आर्य–

मान्यवर, यह कटमोशन नहीं रख रहे हैं । बहुत समय हो गया, अब समाप्त करायें ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्या–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री मुलायम सिंह जी के मुख्यमंत्री के पद की शपथ लेते ही आज [× × ×] का पर्याय बन गया है । पूरे उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर गुण्डा, माफिया, अपराधी देश के बड़े-बड़े पूँजीपति और साथ ही साथ राजनीतिक सत्ता का दुरुपयोग करके विधायकों को उत्पीड़ित किया जा रहा है ।

श्री अब्दुल कलाम–

माननीय अध्यक्ष जी, एक व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, भाई अयोध्या प्रसाद पाल जी और फतेहपुर सदर के विधायक आनन्द प्रकाश लोधी जी पर परसों 6–9-2003 को मुकदमा इसलिए दर्ज किया गया क्योंकि इन्होंने समाजवादी पार्टी को समर्थन देने से इंकार कर दिया था । डी०एम० और एस०पी० को इसलिए भेजा गया कि जा करके बहुजन समाज पार्टी के विधायकों को तोड़ करके हमारा समर्थन करने के लिए मजबूर करो । इन दोनों ने मना कर दिया तो

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

नोट :–[ ×××] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

अयोध्या प्रसाद पाल पर मुकदमा अपराध संख्या–131/3 तथा आनन्द प्रकाश लोधी पर मुकदमा अपराध सं०–395/3 और 393/3 06-09-2003 को दर्ज हुआ ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय मौर्य जी, आप समाप्त करिये ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, इसी तरह से विधूना के विनय शाक्य ने जब समर्थन देने से मना कर दिया तो उन पर भी 3-3 मुकदमें दर्ज करा दिये गये । इसी तरह से तमाम विधायकों का आज उत्पीड़न हो रहा है ।

(शोर)

श्री अध्यक्ष–

मैंने मौर्या जी से अनुरोध कर दिया है कि अब समाप्त करें । मैंने थोड़ा समय इसलिए दे दिया कि अभी-अभी सरकार में थे शायद आपको कुछ कहना हो । मैं समझता हूँ कि बहुत समय हो गया हैं आप दो मिनट में अपनी बात समाप्त करें ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, आप हमारे संरक्षक हैं । माननीय नेता सदन को आज तीसरी बार मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला है वह लोहियावादी रहे हैं और चौधरी चरण सिंह के आन्दोलन से निकले नेता हैं लेकिन जब प्रजातंत्र का गला घोटेंगे और समर्थन न देने पर विधायकों का उत्पीड़न करेंगे तो हम इसका विरोध करेंगे आप को इनमें कामयाब नहीं होने देंगे ।

(शोर)

श्री अध्यक्ष–

आप समाप्त करिये ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

उत्तर प्रदेश की तंगहाली पर माननीय नेता सदन ने चिन्ता जताई है वह स्वाभाविक बात है ।

श्री किरन पाल सिंह–

इन लोगों से सारे प्रदेश को लूट खाया है । (शोर) ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, किरनपाल सिंह जी इसलिए बोल रहे हैं कि मैंने विधान सभा की कार्यवाही में उनका उद्धरण नहीं दिया है । (शोर) ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

श्री अध्यक्ष–

मैंने मौर्या जी को दो मिनट का समय दिया है आप दो मिनट उनको बोलने दीजिए व्यवधान मत कीजिए ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मैं खत्म करने जा रहा हूं । मैं आपके माध्यम से माननीय नेता सदन से कहना चाहता हूँ और नेता सदन के सामने कुछ सवाल छोड़ रहा हूँ जिस पर गम्भीरता से सोचेंगे । मान्यवर, माननीय नेता सदन ने कहा है कि वह सरकारी खर्चों में कटौती करेंगे इसका हम स्वागत करते हैं क्योंकि आप भी बहन मायावती का अनुकरण कर रहे हैं । बहन मायावती ने खर्चों में कटौती की थी और मंत्रि-मण्डल के खर्चों पर बंदिश लगायी थी । (शोर) 10 हजार रु० से खर्च टी०ए० और डी०ए० के नाम पर ले सकते थे, जबकि इसमें पहले कुछ मंत्रियों ने 2 लाख 3 लाख, 5 लाख यहां तक कि 7-7 लाख महीने लिया था ।

एक सदस्य–

{ [ × × × ]

श्री अध्यक्ष–

यह मेरी बिना अनुमति के बोल रहे हैं लिखा नहीं जायेगा ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

आपका निर्देश सर माथे मैं खतम कर रहा हूँ । आप व्यवस्थित तो करें । बहन सुश्री मायावती ने मंत्रियों के खर्चों में कटौती की थी ऐसा किसी पूर्ववर्ती सरकारों ने नहीं किया ।

(अनेक सदस्यों के एक साथ बोलने पर व्यवधान)

अभी मुख्यमंत्री जी ने कहा कि वह और उनके परिवार का कोई सदस्य सरकारी चाय नहीं पिएगा । जबकि बहन मायावती ने तो परिवार को सदस्यों को लखनऊ आने ही नहीं दिया था ।

श्री अध्यक्ष–

अब समाप्त करें ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

आपने कहा कि वैट लागू नहीं करेंगे जबकि पूर्व मुख्यमंत्री बहन मायावती जी ने इसे पहले ही लागू करने से मना कर दिया था । कोई आप नया काम नहीं कर रहे हैं । आपने बेरोजगारी भत्ता देने की बात कही है ऐसी बात सदन में करना आसान है लेकिन व्यवहारिक रूप में आप इसे कर नहीं पाएंगे । आप इसके पहले भी दो बार मुख्यमंत्री रहे हैं कितने लोगों को आपने बेरोजगारी भत्ता दिया ।

---

नोट :–[ ×××] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

श्री अध्यक्ष–

अब अन्तिम वाक्य बोल दें ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

डाला, चुर्क, चुनार सीमेंट फैक्ट्री किसने बेचने का काम किया था ? किसने डाला, चुर्क फैक्ट्री मजदूरों पर गोली चलवाई थी जिसमें 17-17 मजदूर मारे गए थे ? किसने पत्रकारों पर हल्ला बोला था किसने उच्च न्यायालय पर हल्ला बोला था ? किसने उत्तराखण्ड आन्दोलनकारियों वालों पर हल्ला बोला था ? इसका जवाब दें । मैं कहना चाहता हूँ कि इनके पास इसका कोई जवाब नहीं है । इन्होंने जो खोखली बातें कहीं हैं बहुजन समाज पार्टी उसका घोर विरोध करते हुए, आप के द्वारा प्रस्तुत विश्वासमत का विरोध करती हैं ।

**''मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव'' पर भाषण की समय सीमा का निर्धारण**

श्री अध्यक्ष–

एक व्यवस्था दे दूँ मेरे पास इस समय 39 माननीय सदस्यों के नाम हैं जो बोलना चाहते हैं । मैं चाहता हूँ कि जिन-जिन दलों के माननीय सदस्य हैं उनके नेतागण सूची देख लें अगर कोई संशोधन हो तो ठीक है वरना संख्या के हिसाब से समय का निर्धारण होगा । जो क्रम है वह इस प्रकार से निर्धारित किया गया है कि पहले दल के नेतागण बोल लें । दलीय नेताओं को 15 मिनट व अन्य माननीय सदस्यों को बोलने के लिए 5 से 7 मिनट का समय निर्धारित है । इधर संख्या ज्यादा दिख रही है इसलिए इस तरफ से दो माननीय सदस्य बोल लें व इधर से एक सदस्य बोल लें ।

**सदन के फ्लोर पर जाने वाले रास्ते खुलवाने का अनुरोध**

श्री अतीक अहमद–

मान्यवर, माननीय सदस्यों को यह अधिकार रहता है अपनी बात कहने का या ध्यान आकर्षित करने के लिए फ्लोर पर आने का । पिछले कई सालों से मुझे पाँचवी बार इस सदन का सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त है । एक बेरीकेट सदस्यों के लिए लगा दिया गया है । माननीय नेता जी मौजूद हैं मेरा अनुरोध है कि जो बेरीकेट लगा दिया गया है इसको समाप्त कर दिया जाए ।

श्री अध्यक्ष–

कुछ विधान सभाओं में इस प्रकार की व्यवस्था है ।

श्री अतीक अहमद–

अगर बैरीकेट न लगा होता तो और सदस्य आ गए होते ।

श्री अध्यक्ष–

इस पर विचार कर लेंगे ।

श्री अतीक अहमद–

यह गम्भीर बात है । यह विधायकों का अधिकार है । संसदीय कार्य मंत्री भी मौजूद हैं । हम चाहते हैं कि इस पर अभी आप विचार कर लें और इसको हटवा दें । यह बैरीकेटिंग क्यों की गयी थी सब जानते हैं कि अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है । अभी-अभी पता चला है कि कुछ लोग और इधर आना चाहते हैं । अगर यह बैरीकेटिंग हट जाय तो आसानी हो जाय ।

श्री अध्यक्ष–

इस पर विचार कर लेंगे ।

श्री अतीक अहमद–

मान्यवर, यह विधायकों के अधिकार का मामला है । माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष इस पर एक मत हो जायं और इसको हटवा दिया जाय । मौर्य जी, आप भी इससे इन्कार नहीं करेंगे । आपकी वजह से ही यह लगाया गया था । बहुत कूद-फांद होती थी । अब संख्या का मामला भी ठीक है, कुछ होना नहीं है, इसको निकलवा दें ।

श्री अध्यक्ष–

विचार कर लेंगे ।

श्री सुरेश कुमार खन्ना–

मान्यवर, यह कुएं में कूदना चाहते हैं । यह अनुच्छेद 309 में अपराध है ।

श्री प्रमोद कुमार–

यह जिन्दगी भर शादी नहीं कर सके । पहले शादी कर लें फिर कुएं में कूदने की बात करें ।

**मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव तथा मतदान (क्रमागत)**

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यहां पर सबसे पहले स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से मुलायम सिंह की सरकार के नेता सदन, मुख्य मंत्री द्वारा प्रस्तावित विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । मान्यवर, यह समर्थन हम शिमला में जो संकल्प हमने आदरणीय सोनिया जी के नेतृत्व में साम्प्रदायिक और भ्रष्ट ताकतों को हटाने के लिए किया था उसके अनुसार दे रहे हैं । मौर्या जी यह अलग बात है कि आप भी प्रतापगढ़ के हैं और हम भी । एक कहावत है कि "मौज मारे गाजी मियां."....जिसे मजा लेना था वह तो मजा लेकर चली गयी । शिमला संकल्प के अनुरूप हमने धर्मनिरपेक्ष ताकतों को मजबूत बनाने के लिए गठबन्धन किया और उसी के हिसाब से समर्थन दे रहे हैं । मुझे गर्व है, प्रसन्नता है कि इस गठबन्धन को सिर्फ इस प्रदेश में ही विश्वास-मत प्राप्त नहीं है । सच पूछा जाय तो उत्तर प्रदेश की जनता का भी विश्वास प्राप्त है । अभी मौर्या जी शपथ ग्रहण समारोह का जिक्र कर रहे थे कि उसमें कुछ उद्योगपतियों का भी उन्होंने नाम लिया, कुछ फिल्म से जुड़े

लोगों का भी नाम लिया । मान्यवर, वहीं नज़र गयी इनकी । उनके शपथ ग्रहण समारोह में आपने यदि परम्परा का पालन किया होता और नेताओं की तरह आप वहां गये होते तो आपके दबे-कुचले जन समूह को अवश्य देखते जिनका उनके प्रति विश्वास दिखायी दे रहा था । आपने कुछ नाम लिये उद्योगपतियों के । मेरा कहना है कि कोई प्रदेश और देश तब तक तरक्की नहीं कर सकता जब तक कि वहां पर उद्योग न लगाये जायं । आपके समय में जो कुछ उद्योगपति यहां आये भी आपने उनसे इतना वसूला कि वे चले गये बिना उद्योग लगाये । अगर आपके पाप को थोड़ा बहुत हम कम कर रहे हैं तो आप कह रहे हैं । आपने सहारा का नाम लिया जो कि प्रदेश के हजारों लोगों को रोजगार दे रहे हैं । आपको तो रोजगार की जरूरत नहीं है और इसीलिए भी नहीं है क्योंकि जब आप सत्ता में आते हैं तो इतना ज्यादा बटोर लेते हैं कि आपकी 7 पुश्तों में से किसी को भी रोजगार की जरूरत नहीं है । एक बुरी खबर है । जहां मैं समर्थन कर रहा हूं मौर्या जी आपकी आखिरी उम्मीद भी टूट गयी । आपने अपने मंत्रिमण्डल में जहां फैसला लिया था कि विधान सभा भंग कर दी जाय । आपके नेता जी ने जो याचिका दाखिल की थी अभी थोड़ी देर पहले सुप्रीम कोर्ट ने उस पर अपना फैसला दे दिया है और वह याचिका खारिज हो गयी है । मुझे समझ में नहीं आता है कि किसी के अन्दर नैतिकता है, उसे ढूढ़ंनी हो कि लोकतन्त्र के हत्यारे, विधान सभा के हत्यारे कहां बैठे हैं, इस विधान सभा का डेढ़ साल का कार्यकाल पूरा हुआ था, आपने और आपकी नेता ने कैसे मंत्रिपरिषद् में फैसला ले लिया कि विधान सभा भंग कर दी जाए । जबकि साढ़े तीन साल की विधान सभा का कार्यकाल बाकी था आप गुनहगार हैं इस विधान सभा के, आप गुनहगार हैं लोकतन्त्र के, मुलायम सिंह जी को इन्होंने सुना, सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है आपके दल की नेता को, जी० पी० माथुर ने कहा कि "एक लोकतन्त्र से जुड़ी सरकार है इसको चलने दीजिये उसमें व्यवधान मत कीजिये ।" मैं कहना चाहता हूं कि जिस सरकार को बहुमत मिल गया है उसको चलने दें । हम आपकी मजबूरी को समझते हैं मुझसे ज्यादा कौन समझेगा, आप अगर नहीं बोलेंगे तो आपको नौकरी से निकाल दिया जाएगा ।

(व्यवधान)

आप बोलते हो, लोकतन्त्र की बात करते हो, सदन की बात करते हो मैं पिछले 11 साल से एढाक में चल रहा हूं राजभर जी आपके नेता बुलाते हैं ।

(व्यवधान)

मौर्या जी, बोल रहे थे, मैं फिर गांव की एक कहावत कहना चाहूंगा "सूप बोले तो बोले, चलनी बोले जिसमें बहत्तर छेद" हम लोगों ने मुलायम सिंह जी की सरकार के बारे में कहा था, आपने अंश तो पढ़ा लेकिन पूरा नहीं पढ़ा, उसको पूरा पढ़ लिया होता, उस समय मैंने कहा था कि संयुक्त जिम्मेदारी होती है, उस समय मुलयम सिंह यादव जी समाजवादी पार्टी के नेता थे, स्व० राम लखन जी आपके नेता थे यह सरकार चल रही थी तब उन्होंने कहा था "शरीर दो और आत्मा एक है ।" [xxx] शब्द मैं कहना नहीं चाहता हूं अध्यक्ष जी उसे कार्यवाही से निकाल देंगे, मैं कुछ नहीं कहूंगा आप खुद समझ रहे होंगे । मुलायम सिंह जी के साथ [xxx] इनकी सरकार ने किया [xxx] लिखा नहीं जाता है...

---

नोटः-[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री अध्यक्ष–

बार-बार दोहरा क्यों रहे हैं ? यह असंसदीय नहीं अशोभनीय है ?

श्री प्रमोद कुमार–

अगर मैं नहीं बोलूंगा तो आप कैसे बोलेंगे ।

(हंसी)

बयानों पर न जाएं आपने जगदम्बिका पाल जी की बात कही, मेरा बयान पढ़ा इसलिए मुझे आपके बयान पढ़ने पड़ रहे हैं । मान्यवर, अभी-अभी जिनके साथ आप बैठे थे उस दल के अध्यक्ष ने कहा कि [xxx] कहना अच्छी बात नहीं है, हम तो नहीं कहेंगे इन्होंने [xxx] कहा । टण्डन जी भैया जब बाराबंकी गये थे तो इन्होंने कहा था [xxx] मैं नहीं कहूंगा गलत कहा था ठीक कहा, 1995 में आपने क्या कहा ? उसके 6 महीने बाद पलटी खायी तो कहा लोकतान्त्रिक व्यवस्था है । [xxx] न बढ़ता तो इतना एका न होता अगर हम सब एक हुए हैं तो आपके भ्रष्टाचार और पाप के कारण एक हुए हैं ।

(इस समय 01 बजकर 40 मिनट पर अधिष्ठाता श्री माता प्रसाद पाण्डेय पीठासीन हुए ।)

आपका यह गठबन्धन यदि लोक सभा में रहा, मेरी शुभकामनायें हैं, रहे, आप दोनों का खाता नहीं खुलेगा । आपने आरोप लगाया है कि दल-बदल कराया गया । मैं आपसे पूछना चाहता हूं, मैं तो भुक्तभोगी हूं, 7 सदस्य आपके पास मेरे गये, कौन ले गया था, किस पर आरोप लगायें ? पंचम तल पर बैठे हुए एक अधिकारी और कुछ जिलों के जिलाधिकारी और मुख्य मंत्री कार्यालय तो एक ऐसा अड्डा बन गया था जहां से इन्हें डराया-धमकाया जाता था, उस समय गये थे । अब भी सुन लो, बसपा टूटी नहीं है, बसपा में भगदड़ है और उत्तर प्रदेश के राजनैतिक इतिहास में सबसे बड़ी भगदड़ है । मुलायम सिंह जी बैठे हैं, कल्याण सिंह जी और कौकब हमीद जी बैठे हैं, एक नेता ने कहा था कि सरकार बनाना है तो कुछ लोगों को तोड़ना पड़ेगा और मायावती जी ने जो रास्ता दिखाया है इस पर चलना पड़ेगा । पाल साहब बैठे हैं, मुलायम सिंह जी ने कहा था कि सरकार बने या न बने मैं पैसे देकर सरकार नहीं बनाऊंगा । रेट की बात आयी, मौर्या जी आपके समय क्या रेट था, बतायेंगे ? मैं इसे भगदड़ भी नहीं मानता मैं तो इसे एक अराजकता के खिलाफ, एक आतंक के खिलाफ क्रान्ति का कदम मानता हूं । मैं तो दावत देता हूं बहुत से लोग मिलते रहते हैं । अधिकारियों का किस तरह से दुरुपयोग किया जाता है यह कोई आप से पूछे । आप तो गुनाह का पिटारा हैं, आप न बोलें तो ही अच्छा है, अगर आप कहीं बोल दिये और इधर से भी नहीं खुल गया तो आप मुंह दिखाने के लायक नहीं रहेंगे ।

यह गौरवशाली सदन है और जो जीतकर यहां आता है वह सदन का प्रतिनिधि होता है । मैं पूछना चाहता हूं कि, आपकी नेता मायावती जी इस प्रदेश की मुख्य मंत्री थीं, पूरे सदन को यह पूछने का अधिकार है कि आपने विधान सभा भंग करने की सिफारिश क्यों की ? आपसे क्या पूछे क्योंकि वह तो चली गयीं । मैं कहना चाहता हूं कि अगर कोई इस सदन का सदस्य लोक सभा या राज्य सभा के लिए

---

नोटः– [xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

निर्वाचित हो जाए, उसका त्याग-पत्र तो समझ में आता है लेकिन इसके पहले ही विधान सभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर पलायन कर जाना अपराध बोध से ज्यादा कुछ नहीं है ।

आदरणीय टण्डन जी, आपसे जानना चाहता हूं कि आज विश्वास मत पर विरोध करने की जरूरत है या धन्यवाद देने की जरूरत है । धन्यवाद इसलिए देने की जरूरत है और आपको भी देना चाहिए, आज हम सब जो यहां बैठे हैं, यह सदन चल रहा है 8 सितम्बर को, यह इसलिए चल रहा है, आप याद करें जब आपने मंत्रि परिषद् की बैठक में इस विधान सभा को भंग करने की सिफारिश की थी । यह अल्पमत सरकार का फैसला था, राज्यपाल ने ठीक किया उन्होंने इसे ठीक नहीं माना, सर्वोच्च न्यायालय ने ठीक नहीं माना, अगर मान लिया होता तो यह विधान सभा समाप्त हो गयी होती । आप धन्यवाद दीजिये इस गठबन्धन को जिसने कम से कम इस विधान सभा के जीवन की रक्षा की है । मान्यवर, जब हम 5 साल बाद जनता के बीच जायेंगे तो फूलमाला से स्वागत होगा पर जब आप जायें तो कुछ सुरक्षाकर्मी लेकर जाइयेगा ।

श्री लाल जी वर्मा–

हमारे यहां कोई सुरक्षाकर्मी लेकर नहीं चलता आप चलते हैं ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, हम इसलिए चलते हैं क्योंकि आपके कर्मों से जो अपराधी बने हैं उनसे सुरक्षा हो सके । आप लोकतन्त्र की बात करते हैं मैं कहना चाहता हूं कि 9 जनवरी से 8 सितम्बर आज है अब तक कितने दिन सदन चला ? नियमावली में प्राविधान है कि सदन को 90 दिन चलना चाहिए । आज 9 महीने में 5 दिन सदन चला । और 5 दिन में एक घण्टे चला और उसमें लेखानुदान, अविश्वास प्रस्ताव, राज्यपाल का अभिभाषण और सप्लिमेंटरी भी है । मैं कहना चाहता हूं कि यह सरकार पिछले 6 महीने से अल्पमत में थी । चौधरी श्री अजीत सिंह के समर्थन वापसी के बाद प्रबल अल्पमत में आ गयी थी । आप अल्पमत में होने के कारण सदन का सामना नहीं कर सकते थे इसलिए आपने सदन की बैठक नहीं बुलायी । जिन्होंने एक ही घण्टे विधान सभा चलायी हो उन्हें कम से कम लोकतन्त्र की बात नहीं करनी चाहिए ।

श्री अधिष्ठाता–

आप जल्दी करें ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, 5 मिनट का समय और दे दें । मैं मुख्य बात पर आ ही रहा था । श्री टण्डन जी के लिए यह कहना है कि महाभारत में गीता में यह कहा गया है कि जो जुल्म ढाता है वह पापी है और जो जुल्म होते देखता है वह कौन था मैं आपको नहीं कह रहा हूं । वह धृतराष्ट्र कहा गया । वह भूमिका आपने जिम्मेदारी के साथ निभायी । आप तो राखी बंधवाकर सारा प्रदेश दे रहे हैं । उस दिन टी० वी० में आपके नाम को बिगाड़कर [xxx] क्यों कहा । आप लालची हैं ? नहीं हैं न ? छात्र संघ के चुनाव की

---

नोटः– [xxx] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

अनुमति, गन्ना किसानों का भुगतान कराने के बाद के कारण हम इस सरकार का समर्थन करते हैं । मुख्य मंत्री ने विवेकाधीन कोष से सहायता दे दी तो उस पर सैकड़ों मुकदमें । यह तो जिलाधिकारी व अन्य अधिकारी देखते हैं । जब मुख्य मंत्री ने दे दिया तो उनकी क्या जिम्मेदारी बनती है और आपने सैकड़ों मुकदमें कर दिये । ऐसा नहीं करना चाहिए । मान्यवर, मैं आज ज्यादा नहीं कहूँगा क्योंकि जब कोई तकलीफ में हो, दुख में हो, पीड़ा में हो तो मलहम लगाने की जरूरत होती है व्यंग्य बाण चलाने की नहीं । मैं समझ सकता हूँ कि वह आहत बैठे हुए है । यह कहते हैं कि आपको जब सरकार बनाने का अवसर मिला था और दो महीने के अन्दर सूची देने को कहा था तो आप नहीं दे पाये । तो मैं यह पूछना चाहता हूँ कि बिहार में नितीश कुमार जी ने कहाँ दी थी । आज आपने विधान सभा भंग करने की सिफारिश कर दी क्योंकि आपका गठबंधन टूट गया तो हमने प्रदेश के हित के लिए वैकल्पिक सरकार की व्यवस्था करने के लिए समर्थन दिया । आपको तो इस बात के लिए हम लोगों का धन्यवाद देना चाहिए । आपको तो पश्चाताप् करना चाहिए और अगर कोई जगह हो सकती है तो वह कुतुबमीनार उसके ऊपर चढ़ जाईये और जनता से माफी मांगिये और भगवान से यह प्रार्थना करें कि यह सरकार पाँच साल तक चले । आपको तो यह करना चाहिए था कि गरीबों, पिछड़ों, शोषितों के हितों की रक्षा करते, कानून की व्यवस्था करते, कानून का राज होता । लेकिन आपने तो आई०पी०सी० सी०आर०पी०सी० को ताक में रखा और सिर्फ एक व्यक्ति का राज चलाया । गन्ना किसानों का गन्ने के बकाये का भुगतान नहीं हो पाया, पाँच घन्टे से ज्यादा बिजली नहीं दे पाये छात्रों का विद्यालयों और महाविद्यालयों में भर्ती नहीं करा पाये, मायावती जी का पोटा और कटियार जी का सोटा भी नहीं चल पाया । तो हमने इस गठबंधन को अपना समर्थन दे दिया तो कौन सी गलती कर दी ? 29 तारीख को विद्यालयों में शुल्क वृद्धि वापस हुई और जंगल राज को दूर करने का प्रयास किया गया इसके लिए मुलायम सिंह जी धन्यवाद के पात्र हैं । भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर था अब आपको कितना हिस्सा मिला यह तो हमको पता नहीं है अगर आप कहेंगे तो इसकी जांच करा लेंगे और जितना हिस्सा आपका है वह आपको आपका हिस्सा दिला सकते हैं उनसे । स्थानान्तरण खूब हुए । एक-एक अधिकारी को एक साल में कई बार स्थानान्तरित किया गया । आप लोकतंत्र की बात करते हैं कितने अध्यादेश आपने जारी किये और वह ऐक्ट नहीं बन पाये इसका मतलब यह है कि सदन में विश्वास नहीं था । यह खराब परम्परा तो खैर भारतीय जनता पार्टी की सरकार से शुरू हुई थी ।

श्री अधिष्ठाता–

अब आप समाप्त करें ।

श्री प्रमोद कुमार–

मैं यह भी कहना चाहूँगा कि जो निगम थे जिसमें जनप्रतिनिधि रहा करते थे उसमें अधिकारियों को क्यों अध्यक्ष बनाया गया । आपने निगमों में चुन-चुनकर अधिकारियों को रखा । हमारे जमाने में ऋण जमा अनुपात जो कि पचास से इक्यावन प्रतिशत होता था वह आपके जमाने में सत्ताईस प्रतिशत रह गया । इसका मतलब यह हुआ कि जो किसान सौ रुपया जमा कर रहा है तो उसमें से 73 रुपया दूसरे प्रदेशों में जा रहा है यह आपकी प्रशासनिक अक्षमता का प्रतीक है ।

श्री अधिष्ठाता–

माननीय प्रमोद तिवारी जी अब आप कृपया समाप्त करें ।

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका आभारी हूँ और कांग्रेस विधान मण्डल दल के लोगों का भी आभार व्यक्त करता हूँ और हमारी नेता सोनिया गांधी जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने लोकतंत्र की रक्षा की । मैं यह कहना चाहूँगा कि आज एक नयी सुबह हुई है और एक नया प्रभात हुआ है और इसमें हम लोगों को सहयोग करने की जरूरत है न कि इसके रास्ते में बाधा डालने की जरूरत है । मान्यवर, मैं इतना कर सकता हूँ कि आप हमारे द्वारा उठाये गये जो लाभदायी कदम हैं, जो जनता के हित के कदम हैं, उनमें सहयोग दें और कम से कम इस तरह की छींटाकशी से कोई लाभ होने वाला नहीं है, यह तो हम पर एक छींट देंगे और कहीं हम गिनाने लगेंगे तो उनकी पाप की गठरी इतनी भारी है कि वह उसके नीचे दब जायेंगे । अन्त में मैं आपके प्रति आभार प्रकट करते हुए माननीय नेता सदन को आश्वस्त करता हूँ कि हम और हमारा दल उनके साथ है । धन्यवाद ।

* श्री हुकुम सिंह–

मान्यवर, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया । एक सकारात्मक भूमिका कैसे निभायी जाय उसके ऊपर आपने आश्वासन दिया है, माननीय मुख्यमंत्री जी को सुनने का अवसर मिला तो लगा कि कुछ बदलाव है, लेकिन छींटा-कशी की भी कई बातें कही गयीं और माननीय मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि पंचम तल पर नोट गिने जाते थे, पंचम तल से नोट इक्कठा करके बक्से में बन्द करके हेलीकाप्टर से पहुंचाये जाते थे । मेरे मन में एक जिज्ञासा आयी वह आपके सामने रखता हूँ, एक समय था जब नेता सदन ने उन्हीं के समर्थन से सरकार बनाई और सरकार बनाने के बाद में हम सुनते थे कि छः महीने का हिसाब हो रहा है, तीन महीने का हिसाब हो रहा है, एक महीने का हिसाब हो रहा है । मान्यवर, मैं सम्मान के साथ पूछना चाहता हूँ आज नेता सदन यहाँ विद्यमान हैं, प्रदेश की जनता उनसे जानना चाहती है कि जितने दिनों तक समर्थन लिया होगा उस समर्थन का क्या मूल्य चुकाया होगा ? गठबन्धन टूटने के बाद भी हम में कितनी सहनशीलता है अगर लोकतंत्र में हमारा विश्वास है तो वह उसके बाद आता है, सारे देश को पता है कि गठबन्धन टूटने के बाद क्या-क्या हुआ ? मान्यवर, मैं जानना चाहता हूँ आज वह हम पर आरोप लगा रहे हैं, नेता कांग्रेस भी आरोप लगा रहे हैं, तीन-चार दिन से लगातार अखबारों में छप रहा है, लेकिन सच्चाई तो यह है कि आज इस सदन में कोई भी दल ऐसा नहीं है जिसने किसी से मिल करके, गठबन्धन करके चुनाव न लड़ा हो सरकार न बनाई हो, आपने समर्थन दिया और वापस लिया, कांग्रेस ने समर्थन दिया और वापस लिया, तो फिर भांजपा पर यह आरोप क्योंकि भाजपा ने साथ नहीं निभाया । हम भी इतने दिनों से सदन में बैठ रहे हैं अगर नेता सदन बोलने के लिए खड़े हुए हैं तो शायद ही ऐसा अवसर आया हो कि एक घन्टे, पौन घन्टे, बैठकर के उन्हें शान्ति से सुना गया हो, आज हमने यह कार्य किया, हमने उन्हें शान्ति पूर्वक सुना । अगर यह पहल

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हमारी है तो पहल आपकी तरफ से भी होनी चाहिए । खाली आरोप लगा करके कि साम्प्रदायिकता फैला दी तो यह तो ठीक नहीं है । आपको अवसर दिया गया है । मगर मैं यह बात मान्यवर, जरूर कहना चाहता हूँ कि अगर भारतीय जनता पार्टी सरकार न बनाती उस समय तो यह सदन चला गया होता । फिर हम उसमें जनता से जाकर क्या कहते । क्या विशेषण करते ?

मान्यवर, इस समय तो बात यह थी कि अस्थिरता कैसे समाप्त की जाए, कैसे वहां पर सरकार दी जाए, कैसे सदन को विघटित करने से बचाया जाए । भारतीय जनता पार्टी ने गठबन्धन किया सरकार चलाने का प्रयास किया और हमारा प्रयास बराबर रहा ।

आज जो सरकार बनी है हमारे देश के सम्मानित प्रधानमंत्री जी ने, जब नेता सदन की शपथ होती है, वे उस समय जम्मू में थे, माननीय अटल बिहारी बाजपई जी ने आपको वहाँ से बधाई दी । इस बात की हमें खुशी है । यह होती है लोकतांकित मानसिकता । खाली आरोप-प्रत्यारोप से काम नहीं होता । हमारी सोच क्या है, विजन क्या है यह देखना होता है ।

(आपस में टोका-टाकी करने पर)

मिलकर चुनाव तो आप भी लड़ चुके हैं । लोकतंत्र में यह अवसर आगे भी आयेंगे आपके सामने भी आयेंगे ।

मान्यवर, जिन लोगों ने अभी भाषण दिया, चार राज्यों में उनके साथ मिलकर चुनाव लड़ने की सोच रहे हैं । भारतीय जनता पार्टी ने आज एक सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभा कर दिखाई है । आपको भी अवसर मिला था लेकिन था क्या, सदैव चोट करना, सदैव वेल में कूद जाना, मार-पीट कर देना, इसी सदन में वे लोग आज बैठे हैं, जो यहाँ मार-पीट का दृश्य हुआ था, उससे उत्तर प्रदेश की विश्व में जो छवि बनी है उसको आज तक हम निखार नहीं पाये हैं ।

श्री अधिष्ठाता–

माननीय सदस्य कृपया एक मिनट में अपनी बात समाप्त करने का कष्ट करें ।

श्री हुकुम सिंह–

मेरा आग्रह यह है कि अगर माननीय नेता सदन यह भी कह देते सदन में खड़े होकर कि देश के प्रधानमंत्री ने जो ब्याज की दर 18 से 19 प्रतिशत तक थी, उसको घटाकर वे 9 प्रतिशत कर ले आयें हैं । यह खुशी की बात है । अगर एक शब्द भी वह प्रशंसा में कह देते तो लगता कि उनकी सोच बदली है । केन्द्र सरकार ने आज 650 करोड़ रुपये का पैकेज गन्ना किसानों के लिए दिया है और उनका आभार व्यक्त करते तो अच्छा लगता । (भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट) लेकिन यह कह देना कि हमने यह घोषणा कर दी है और समाधान कर दिया है हम कैसे सोच लें कि मानसिकता बदली है । सकारात्मक रूप से अपोजीशन में बैठ कर हम आपको ध्यान देने के लिए तैयार हैं, हर बिन्दु पर विशलेषण करने के लिए तैयार हैं लेकिन उसका परिचय आप भी हैं ।

इसी के साथ मान्यवर, आपने समय दिया इसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।

*श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, नेता सदन जी द्वारा जो विश्वास मत का प्रस्ताव रखा गया है उसके मैं विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। और आपने जो समय दिया है इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मान्यवर, जिन [× × ×] संबंधों के साथ यह सरकार बनी है।

(समाजवादी पार्टी के कुछ सदस्यों द्वारा [× × ×] शब्द को कार्यवाही से निकाले जाने की मांग पर)

श्री अधिष्ठाता–

ठीक है इसे देख लिया जाएगा। अगर असंसदीय होगा तो निकाल दिया जायेगा।

श्री सुखदेव राजभर–

अगर [× × ×] नहीं है तो बेमेल वाले लोग हैं।

(अनेक माननीय सदस्यों की टोका-टाकी से व्यवधान)

मान्यवर, मैं इस समय कह रहा हूँ कि जो यह सरकार बनी नेता सदन जी ने तमाम घोषणाओं का भी उद्धरण दिया। छात्रसंघ के चुनाव से लेकर शिक्षण शुल्क की माफी तक तमाम इस तरह की घोषणायें की गयीं और तमाम महापुरूषों के आदर और सम्मान की बात कही गयी उसका हम भी स्वागत करते है। हर महापुरूष चाहे महात्मा गांधी जी हों, चन्द्रशेखर आजाद हों, सुभाष चन्द्र बोस हों हम सबका स्वागत करते हैं लेकिन एक बार भी सदन ने डा० अम्बेडकर साहब का नाम नहीं लिया।

*श्री रामलाल अकेला–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है। नेता सदन ने डा० अम्बेडकर का नाम पूरी दुनिया में बढ़ाने का काम किया है आपने डा० अम्बेडकर का नाम केवल राजनीति फैलाने के लिए लिया है। अपने दल के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य जी से पूछे उनके क्षेत्र में डा० अम्बेडकर की प्रतिमा हम लोगों ने लगवाई और उसको तुड़वाने का काम उन्होंने किया है। (व्यवधान)

श्री सुखदेव राजभर–

आपने घोषणा की कि इस प्रदेश में छात्रसंघ के चुनाव करायेंगे, स्वागत है। सब लोगों ने स्वागत किया लेकिन एक चीज की उम्मीद हम रखते थे कि छात्रसंघ के चुनाव में कहीं न कहीं उम्र का निर्धारण करेंगे कि कितनी उम्र तक के लोग चुनाव लड़ सकते हैं इससे प्रबुद्ध लोग ही राजनीति में छात्रसंघ के माध्यम से आयेंगे। लेकिन इसका निर्धारण न होने से शिक्षण संस्थाओं में ऐसे-वैसे लोग प्रवेश लेकर उसका माहौल बिगाड़ेंगे। आज अभिभावक और पढ़ने वाले छात्र भी कह रहे हैं कि छात्रसंघ के चुनाव की घोषणा हुई है उसके साथ उम्र का निर्धारण हो। इस तरह से घोषणाओं में कहीं न कहीं कमी रह गयी है। यही लखनऊ विश्वविद्यालय में पिछले हफ्ते में पढ़ रहा था शिक्षण शुल्क आपने माफ कर दिया। यूनिवर्सिटी ने यह कहा कि कभी तो हमारे ऊपर 10 करोड़ का भार था, अब 14 करोड़ का भार

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

नोट :–[×××] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

और बढ़ जायेगा तो यह 24 करोड़ का भार केवल लखनऊ विश्वविद्यालय झेलेगा । आपने शिक्षण शुल्क माफ किया लेकिन उन संस्थाओं के लिए घोषणा करनी चाहिए थी जहां स्ववित्त पोषित व्यवस्था है । उनकी टेबिल के लिए, कुर्सी के लिए, दीवारों के लिए, छात्रों के हित के लिए, संस्थाओं को ग्रान्ट देने की घोषणा सरकार को करनी चाहिए, आज वह संस्थायें संकुचित होती जा रही हैं । जहां 25 करोड़ का भार केवल लखनऊ विश्वविद्यालय ने कहा है और विश्वविद्यालयों का क्या हाल होगा ? आपने शिक्षण शुल्क माफ किया, ठीक है, लेकिन शिक्षण संस्थाओं के मामले में ज्यादातर उनको भी कहीं न कहीं ग्रान्ट देने की व्यवस्था करने की कृपा करें । मान्यवर, संस्थायें बैठ जायेंगी, फीस कम जरूर लेंगी लेकिन टूटी हुई दीवार, बेंच, कुर्सी, उनकी अलमारियां ठीक नहीं हो पायेंगी और वह शिक्षण का काम नहीं कर पायेंगी ।

मान्यवर, आपने तीन-पांच शुरू कर दिया है । को-आपरेटिव के लिए जिन लोगों को पांच साल के लिए चुना गया है उनको आपने तीन साल कह दिया, उनको पांच साल रहने दें तीन साल की जो बात कही है वह ठीक नहीं है ।

(व्यवधान के मध्य)

श्री अधिष्ठाता–

अब आपका समय समाप्त हो गया है, कृपया आप बैठ जायें ।

(व्यवधान के मध्य)

श्री सुखदेव राजभर–

[xxx]

श्री अधिष्ठाता–

आपका समय समाप्त हो गया है । यह लिखा नहीं जायेगा ।

श्री सुखदेव राजभर–

[xxx]

श्री कौकब हमीद खां–

मान्यवर, मैं राष्ट्रीय लोकदल के नेता के रूप में अपने दल की तरफ से और अपनी तरफ से माननीय मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी के प्रस्ताव में खड़ा हूं और इस सरकार के मंत्रि-परिषद् में विश्वास रखते हैं । मान्यवर, "शोहरत की बुलन्दी भी पल भर का तमाशा है, जिस शाख पे बैठे हो, वह टूट भी सकती हैं ।" वह शाख टूटी और औंधे होकर गिरी, यह हकीकत है । जिस शाख पर यह बैठे थे और समझ रहे थे दुनिया बहुत अच्छी चल रही है और हमारी तरफ कोई देखने वाला कभी पैदा नहीं होगा । किसी ने कुछ किया भी नहीं और यह शाख कैसे टूटी, यह तो आप जानते होंगे । लेकिन यह सदन चिन्तित है और यह प्रदेश भी । यह सदन बड़ी मर्यादाओं का सदन है जैसा अभी माननीय टण्डन

नोट –[xxx] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

जी ने कहा, यहां बड़े-बड़े नेता चौधरी चरण सिंह जी, बहुगुणा जी, सम्पूर्णानन्द जी आदि बैठे हैं । चिन्ता इस सदन की यह है कि एक मुख्य मंत्री जो इस सदन का नेता हो, उसके मुख्य मंत्री काल में सी०बी०आई० खुद उसके खिलाफ इन्क्वायरी करे तो हमारे लिए तो यह डूब मरने की बात है । मुख्य मंत्री का काल चल रहा हो और सी०बी०आई० इन्क्वायरी करे, मुलायम सिंह जी ने तो नहीं करायी, टण्डन जी बतायेंगे, कैसे हुई और क्यों हुई, लेकिन यह चिन्ता का विषय है कि ऐसा उत्तर प्रदेश के इतिहास में पहली बार हुआ । जब बार-बार लोग यहां के इतिहास को पढ़ते हैं, टण्डन जी ने भी पढ़ा, तो यह इतिहास में पहली बार हो रहा है कि सी०बी०आई० इन्क्वायरी तो हो ही रही है अब यह भी जांच हो रही है कि क्या-क्या सम्पत्ति है ? यह भी उत्तर प्रदेश में पहली बार हो रहा है, आज यह चिन्ता करने की बात है ?

मान्यवर, यह अपनी जगह सही है कि कोई भी प्रदेश में तरक्की तब तक नहीं हो सकती, जब तक वहां कोई उद्योग न लगे और उद्यमी न आयें । यहां इस सदन में नोयडा और ग्रेटर नोयडा के पिछले डेढ़ साल में बड़े खर्चे हुए हैं । कई बार कहा गया कि यह हाइवे बनवा रहे हैं, इन्टरनेशनल एयरपोर्ट बनवा रहे हैं, लेकिन यह एक भी बड़े उद्यमी का नाम बता दें, जिसने वहां उद्योग लगा दिया हो । खूबी की एक बात यह भी है कि वहां ग्रेटर नोएडा में उद्योग लगाने के लिए एक इंच भी जमीन बची नहीं है जिसके अन्दर उद्योग लग सकें, यह कोई खिलवाड़ नहीं तो और क्या है । मुझे एक का भी नाम बता दिया जाय, इस बात को यह प्रदेश भी जानना चाहता है । नोएडा को तो पहले ही खत्म कर दिया और ग्रेटर नोएडा बनने से पहले खत्म कर दिया गया । अभी पूरी तरह का बसा भी नहीं, उसके पहले ही खत्म हो गया । जिस मुख्य मंत्री के रहते यह सब आरोप लगने लगे, उसकी पार्टी के लोगों को तो यह सदन छोड़कर चले जाना चाहिए था और कहते हैं कि हम उनकी बात नहीं सुन सकते, लेकिन आप यह भी नहीं कर पाये । मान्यवर, जब इस सरकार ने इस्तीफा दिया तो एक स्टेटमेंट आया जिसमें कहा गया कि भारतीय जनता पार्टी की एक मंत्री की तरफ से प्रपोजल रखा गया था कैबिनेट के अन्दर, मैं तो उसमें था नहीं, कि 27 शुगर फैक्ट्री जो हैं, उनको हम लीज पर दे रहे हैं यह प्रयोजन आया भारतीय जनता पार्टी की जो गन्ना मंत्री थी उनकी तरफ से । मायावती जी ने कहा यह लिखा-पढ़ी में हैं, टेलीविजन में भी दिखाया । खूबी की बात यह भी कहा कि मैंने उस प्रस्ताव को मानने से इंकार कर दिया और फिर यह भी कहा कि मैं उसे खत्म कर रही थी माननीय टण्डन जी के कहने पर फिलहाल उसे रोक दिया । इस पर मीटिंगें भी हुई, केन-कमिश्नर के यहां फिर बोर्ड बुलाया था । फेडरेशन के लोगों ने विरोध करना शुरू कर दिया । चूंकि मैं भी शुगर फेडरेशन से जुड़ा हूं । इसकी मानीटरिंग चीफ सेक्रेटरी उत्तर प्रदेश कर रहे थे । आदेश माननीय मुख्य मंत्री जी ने दिया उसमें अगर आपकी सहमति नहीं थी तो फिर तमाशा क्या था । मुख्य मंत्री जी 27 शुगर फैक्ट्रियां उद्योगपतियों को बुलाकर लीज पर दे रही थी और आप हमसे यह कह रहे हैं कि जब माननीय मुख्य मंत्री जी मुलायम सिंह जी ने शपथ ली तो उद्योगपति आये थे । हर अच्छे प्रदेश में जिसमें तरक्की होनी है बिना उद्यमियों के नहीं हो सकती । अब उद्योग लगाने के लिए उद्योगपति तो आयेंगे ही । आपकी पार्टी का तो कान्सेप्ट नहीं है कि प्रदेश में कोई उद्योग लगे । तो मान्यवर, यह चीजें गौर करने की हैं । पूर्व गन्ना मंत्री जी नहीं हैं । 670 करोड़ का पैकेज कैसे आया, क्यों आया, इसके बारे में थोड़ा बताना चाहता हूँ । माननीय चौधरी अजित सिंह जी ने जो कृषि मंत्री थे एक प्रस्ताव बनाया और माननीय प्रधानमंत्री जी को दिया कि गन्ने की हालत यहां से यह हो चुकी है और गन्ने की कीमत

को अभी तक पूरा नहीं दिया जा सका है । इसमें कुछ पैसा दीजिए । जब आप 19 हजार करोड़ रुपया यू०टी०आई० का खत्म कर सकते हैं तो 600-700 करोड़ रुपया डालकर उनकी जो कीमत बची हुई है उसे दिलाने का प्रबन्ध करें । तीन मीटिंगें हुई, परन्तु कोई निर्णय नहीं हुआ । माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में मीटिंग हुई उसमें मुख्यमंत्री जी भी मौजूद थी । जब इस पर कोई निर्णय नहीं लिया तो चौधरी साहब ने इस्तीफा दे दिया । बाद में घोषणा हुई लेकिन पेमेण्ट नहीं हुआ । अब माननीय मुलायम सिंह जी की घोषणा के बाद पेमेण्ट शुरू हो गया है । 3 महीने पहले घोषणा हुई थी लेकिन पैसा नहीं जा रहा था । अभी यह बात आयी कि यह [× × ×] यह किसी पर नहीं चल रही है । इनकी हालत बहुत खराब हो गयी थी यह बात सदन के अन्दर न मानें तो बाहर जा करके मानेंगे । जिस वक्त माननीय मुख्यमंत्री मुलायम सिंह जी ने शपथ ली उस वक्त ऐसा लग रहा था कि जैसे आजादी के वक्त लगा होगा । यह प्रदेश मुसीबतों से आजाद हो गया था, आतंक से आजाद हो गया था । रिक्शे वाले, चाय वाले, पान वाले हर आदमी का चेहरा खुश नजर आ रहा था । आपका जो हश्र है वह सभी देख रहे हैं यहां से वहां तक हम बैठे हैं और आप यहां से टूट गये और वहां पहुंचने पर भी टूट गये । माननीय मुलायम सिंह जी को प्रदेश के विकास के लिए आपका समर्थन भी आना चाहिए यही इस प्रदेश के लिए अच्छा होगा । मैं इसी के साथ अपनी बात खत्म करता हूँ ।

श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव 'हरीशजी'–

मान्यवर, आज सदन में नेता सदन की ओर से विश्वास मत प्राप्त करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है । स्वाभाविक है कि विश्वास मत जो है वह निर्भर करता है बहुमत पर । अखबारों में किसी ने बहुमत प्राप्त करने की और किसी ने विश्वासमत प्राप्त करने की बात कही है । जो बहुमत है उसी को विश्वासमत की संज्ञा दी गयी है । मैं समझता हूँ कि जो लोग अपने दल को छोड़कर दूसरे दल में शामिल हो गये हैं उन्होंने अपने क्षेत्र की जनता के साथ [× × ×] किया है । लोगों ने पार्टियों की अच्छाइयों पर, घोषणाओं पर विश्वास करके उनको मत दिया था, उनके साथ दल बदल करने वालों ने [× × ×] किया । इस प्रकार संकट गहराता चला जा रहा है । जो दल बदल कानून है उसमें संशोधन होना चाहिए कैसी बिडम्बना है कि कोई फुटकर में दल नहीं बदल सकता है लेकिन थोक में बदल सकता है । यही स्थिति रही तो राजनीतिक शुचिता, विश्वसनीयता और अच्छाइयां नहीं रह जायेगी इसलिये मैं कहना चाहता हूँ कि दल बदल कानून में पर्याप्त संशोधन होना चाहिए जिससे कि दलों की विश्वासनीयता बनी रहे और राजनीतिक शुचिता बनी रहे । यह जो दलों का आवागमन टूटना, जुड़ना, मिलना हो रहा है इसको देखते हुए दल बदल कानून में संशोधन की आवश्यकता है । इसमें मेरी राय है कि पार्टी का कोई सदस्य दल बदलता है तो उसे अपनी कांस्टिचुएन्सी से अनिवार्य रूप से त्याग-पत्र देना चाहिए । इसमें पार्टी की तानाशाही सामने आ सकती है लेकिन इस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है ।

लोकतंत्र के बारे में बहुत सी बातें कही गयीं कि मैंने लोकतंत्र की रक्षा की है । लेकिन लोकतंत्र की रक्षा के बारे में मैं वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित कुछ तथ्य रखना चाहता हूँ । पिछली बार 2002 के चुनाव

---

नोट :–[ ××× ] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

में खण्डित जनादेश प्राप्त हुआ था । यह बहुत बड़ा राजनीतिक अवरोध का कारण बनता जा रहा है । जो लोग जातिवाद की राजनीति चलाते हैं, साम्प्रदायवाद की राजनीति चलाते हैं इसी कारण जनादेश खण्डित होता जा रहा है । पिछली बार भी खण्डित जनादेश आया था । भा०ज०पा० तीसरे नम्बर पर आयी और स०पा० पहले स्थान पर आयी । कांग्रेस के नेता लोग सदन चले गये हैं अगर कांग्रेस के लोगों को उस समय सद्बुद्धि आ गयी होती और उन्होंने स०पा० का समर्थन कर दिया होता तो इस उहापोह की नौबत नहीं आ पाती । आज उनको सद्बुद्धि आयी और उन्होंने स०पा० को समर्थन दिया । पिछली बार, चुनाव में न जाना पड़े, इसलिए भाजपा ने पिछली बार ब०स०पा० का समर्थन किया था । सरकार नहीं चली और फिर इस बार जब ब०स०पा० की नेता प्रस्ताव लेकर महामहिम राज्यपाल के पास गयीं कि विधान सभा भंग कर दी जाय । भा०ज०पा० ने इस पर रोक लगाने के लिए पहले ही सरकार से समर्थन वापस ले लिया और कोशिश की कि विधान सभा भंग नहीं होनी चाहिए और चुनाव नहीं होने चाहिये । जो स्थिति आज बनी है उसमें भा०ज०पा० का योगदान है जिससे स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र की रक्षा के लिए जब भी मौका आया भा०ज०पा० ने कदम उठाया है । मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि साम्प्रदायिकता की बात और किसी ने तो नहीं कही लेकिन कांग्रेस के मुंह से सुनायी दिया है । मैं कहना चाहता हूँ कि यह आरोप बड़ा घिसापिटा हो गया है । अब इसमें दम नहीं रह गया है । माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जो भा०ज०पा० के नेता हैं और देश के प्रधानमंत्री है उनका साथ 24 दलों ने दिया है । उनका साथ दिया है और एक अच्छी सरकार चल रही है । दुनिया में भारत का स्थान ऊँचा हुआ है देश का विकास हो रहा है । मैं समझता हूँ कि यह आरोप निराधार है झूठा है राजनीति को इतना घटिया नहीं बनाना चाहिए । भारतीय जनता पार्टी जैसी राष्ट्रीय पार्टी को साम्प्रदायिकता के घेरे में रखने की कोशिश की जाए राष्ट्रहित में इसके बारे में सोचना चाहिए । मैं और श्री मुलायम सिंह जी दोनों एक साथ सरकार में काम कर चुके हैं दोनों एक दूसरे की कार्य शैली को जानते हैं । निश्चित रूप से यह बहुमत के विश्वास का प्रस्ताव जो सदन में रखा है इस प्रस्ताव के बारे में भारतीय जनता पार्टी का निर्णय है कि विपक्ष के रूप में इस प्रस्ताव का विरोध करना है । आपसे इस लिए कह रहा हूँ कि भारतीय जनता पार्टी उस निर्णय नियमों से बंधी है । इस विश्वास प्रस्ताव का विरोध करना है । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात पूरी करता हूँ ।

* श्री कल्याण सिंह–

माननीय अधिष्ठाता जी, माननीय नेता सदन ने मंत्रि-परिषद में विश्वास व्यक्त करने का जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया है मैं उस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ । लम्बा भाषण नहीं करना है औरों

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

को भी समय मिल जाए । दो तीन बातें कहकर विराम देना चाहता हूँ । मैंने एक कविता लिखी थी उसकी 4 लाइनें सुना रहा हूँ :–

(इस समय 3 बज कर 32 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए)

सब्र और सहने की भी सीमा होती है ।

सब्र और सहने की भी सीमा होती है ।

बांध टूटता धीरज का जब अति होती है ।

अति होने पर प्रलय और परिवर्तन होता है ।

तब नई सुबह और नई सृष्टि का सृजन होता है ।

श्रीमन् सब्र की सीमाएं टूट रहीं थीं । सहने की सीमाएं टूट चुकी थीं । धीरज का बांध ढह चुका था । प्रकृति का नियम स्वाभाविक है ऐसी स्थिति में फिर परिवर्तन अवश्यम्भावी है । परिवर्तन के पश्चात फिर एक नई सुबह होती है । नया सूरज होता है नई किरणें होती हैं नई सृष्टि का सृजन होता है । आज की यह सरकार उसी प्रकार से परिवर्तन के गर्भ में पैदा हुई सरकार है । जो प्रदेश में नई सृष्टि और नए सृजन के संकल्प के साथ चल रही है । अभी चर्चा हुई थी कि शपथ ग्रहण में अमुक-अमुक उद्योगपति आए ऐसे लोगों को वह दिखाई नहीं दिया कि लाखों की संख्या में किसान आए, मजदूर आए, नौजवान आए, हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई आए सभी जाति धर्म के लोग आए । सड़कों पर जो हुजूम उमड़ रहा था, जिले जिले में जो जुलूस निकल रहा था जो खुशियाँ मनाई जा रहीं थीं वह पहले से प्रायोजित कार्यक्रम का अंग नहीं था । इसका क्या अर्थ है इसका अर्थ यह है कि आम जनता ऊब चुकी थी पिछली सरकार है । उसकी अराजकता से ऊब चुकी थी, उसके भ्रष्टाचार से ऊब चुकी थी । उसके अनैतिक कामों से ऊब चुकी थी । गुण्डों से ऊब चुकी थी तानाशाही से दब चुकी थी । किसान परेशान था खेत को पानी नहीं था गन्ने का भुगतान न किए जाने से किसान परेशान था रोजगार के अवसर नहीं थे । व्यापारी परेशान था उसका उत्पीड़न हो रहा था । प्रशासनिक मशीनरी भी परेशान थी । ट्रांसफर पोस्टिंग, निलम्बन फिर बहाली का धन्धा पैसे कमाने के लिए चल रहा था । मैं भी दो-दो बार मुख्यमंत्री रह चुका हूँ । भ्रष्टाचारी अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए मैंने खुद भी की है लेकिन प्रशासनिक मशीनरी का मनोबल नहीं तोड़ा । पिछली सरकार ने श्रीमन् समूची प्रशासनिक मशीनरी का मनोबल तोड़ दिया । यह बड़ा काम है माननीय मुलायम सिंह जी के सामने प्रशासनिक मशीनरी को ठीक करना, चुस्तदुरूस्त करना उसके मनोबल को ठीक करना । लोकतंत्र का मायने है लोक राज और लोक राज का प्राण कानून नहीं है । लोक राज का प्राण है लोक लाज । मैं बहुत भारी मन से कह रहा हूँ कि पिछली सरकार ने उस लोक लाज को तार-तार कर दिया था और आज उसकी दुहाई दे रहे हैं । क्या यही कानूनी व्यवस्था है कि जो समर्थन दे वह जेल से बाहर और जो विरोध करे दे वो जेल के अन्दर । यही कानून का राज था उस समय । हां यदि किसी का कोई कुसूर है और अपराध सिद्ध हुआ है तो उसको जरूर सज़ा मिलनी चाहिए । उन्होंने तो ऐसा कानून बनाया कि निर्दोष लोग जेल भेज दिये गये । विधायकों का अपमान । माननीय टण्डन जी यहां पर नहीं हैं । मैं उनका बड़ा सम्मान करता हूं । मौर्या जी बैठे हैं, सुखदेव जी बैठे हैं मैं इन लोगों का भी सम्मान करता हूं । इनके भाषण का उन्हीं की शैली में उत्तर नहीं देना चाहता उससे हटकर कुछ और बात कहना चाहता हूं कि यह सच नहीं है कि हमारी बात तो दूर लेकिन जो सत्ता पक्ष वाले विधायक थे वे आतंकित थे । मंत्री, राज्य मंत्री सब आतंकित थे । कैबिनेट की मीटिंग होती है, सरकार हमने भी चलाई थी । 5-6 घण्टे एक विषय पर खुली चर्चा होती थी तब आम राय होती थी । यहां होता क्या था । मुख्य मंत्री जाती थीं कैबिनेट मीटिंग में और 10-12 मिनट

में एजेण्डा पढ़ा और पास । किसी को उस पर बोलने का मौका नहीं । क्या यही लोकतन्त्र है ? क्या यही कानून का राज है ? इस सदन को भी भंग करने की सिफारिश लेकर पूर्व मुख्य मंत्री राज्यपाल महोदय के पास चली गयीं । वह तो भारतीय जनता पार्टी के नेता पहले ही राज्यपाल महोदय को लिखकर दे चुके थे कि हमने सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया है और राज्यपाल महोदय ने फैसला दिया कि यह सरकार अल्पमत में है । अगर यह प्रस्ताव मान लिया गया होता तो आज हम यहां न बैठे होते । सब अपने-अपने इलाकों में चुनाव की तैयारी करते । विधान सभा में पांच साल के लिए चुनकर आते हैं । सरकार बनती है तो उसको पांच साल चलना चाहिए । ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि पांच साल के लिए चुनकर आये हैं तो कार्यकाल पांच साल चलना चाहिए । पूरे पांच साल का कार्यकाल होना चाहिए विधान सभा का । इससे आज की राजनीतिक की अनेक विकृतियां जो हैं उनका समाधान निकल आयेगा । जो बन्धु हमारे साथ आये हैं उनमें एक परिवर्तन की भूख थी । कोई लालच नहीं था । बातचीत हो रही थी । कांग्रेस के प्रमोद तिवारी, जगदम्बिका पाल बैठे थे, लोकदल के अजीत सिंह जी बैठे थे । माननीय मुलायम सिंह जी बैठे थे, हम भी बैठे थे । मैं तारीफ करना चाहता हूं कि जब सरकार का बहुमत बनाने की बात आयी तो माननीय मुलायम सिंह जी ने कहा कि सरकार बने न बने हम किसी को एक पैसा नहीं देंगे और खरीदेंगे नहीं । सरकार नहीं बनती है, न बने । जितने लोग आ रहे हैं स्वेच्छा से आ रहे हैं । माननीय टण्डन जी, आप हमारे पुराने मित्र हैं, हमसे सीनियर हैं, मैं आपका सम्मान करता हूं । सच कहता हूं कि हम तो चाहते थे कि जिस कुर्सी पर हमारे मौर्या जी बैठे थे उस कुर्सी पर आपको देखना चाहते थे और हमारी मर्जी भी हो गयी है । श्रीमन्, सुप्रीम कोर्ट में बहुजन समाज पार्टी के नेता गये थे एक याचिका लेकर और सुप्रीम कोर्ट ने उस पर फैसला दे दिया और वह खारिज हो गयी है । विश्वास मत में भी फैसला होने जा रहा है । भारी बहुमत से प्रस्ताव पारित हो गया लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूं उत्तर प्रदेश का स्थान इस देश के अन्दर विशेष रहा है । मैं यह नहीं कहता कि कितने प्रधान मंत्री दिये परन्तु उत्तर प्रदेश का एक विशिष्ट योगदान रहा है यहां की सभ्यता के नाते, यहां के विकास के नाते, दुनिया का चौथे नम्बर का प्रदेश हो गया है उत्तर प्रदेश । एक जमाना था कि जब यह दुनिया का छठा प्रदेश था । हम अपने-अपने दिल पर हाथ रखकर देखें कहां हम सफल नहीं हैं, उत्तर प्रदेश बदनाम हो गया है क्या उत्तर प्रदेश में बड़ा भारी भ्रष्टाचार है ? क्या यह माना जाने लगा है कि उत्तर प्रदेश में गुण्डा-गर्दी होती है ? क्या यह माना जाने लगा है कि उत्तर प्रदेश में पूंजी निवेश के लिए उद्योगपति नहीं आना चाहते हैं ? क्या सच है नहीं है कि यह माना जाने लगा है कि पूंजीपति पैसा निवेश करेंगे तो वह बदमाशों को पैसा देने के लिए कहां से लायेंगे ? क्या यह सच नहीं है कि बिजली संकट के कारण यहां कोई आने को तैयार नहीं है ? क्या यह सच नहीं है कि अराजकता बढ़ने के कारण यहां कोई पूंजी लगाने को तैयार नहीं है । अपहरण होने पर फिरौती कहां से लायेंगे....

(एक सदस्य के कुछ कहने पर)

आप जो कह रहे हैं खड़े होकर कहिए, मैं बैठ जाता हूं ।

श्री रिजवान अहमद खां–

आपने इजाजत दी तो बोल रहा हूं आप इतनी अनियमितता गिना रहे हैं तो कोई अच्छा काम भी गिनवाइये वरना मैं गिना दूंगा ।

(व्यवधान)

श्री कल्याण सिंह–

मैं आभारी हूं जो मैं कहने जा रहा था वह आपने कह दिया । इस सरकार ने अगर तरक्की की है तो एक मामले में की है इसको मैं मानता हूं आप इसको नहीं कह सकते हैं कि कॉमन प्रोग्राम नहीं था हमने मुलायम सिंह जी से बात की है हम कॉमन प्रोग्राम बनाकर चल रहे हैं कानून व्यवस्था ठीक हो, भ्रष्टाचार खत्म हो, प्रशासनिक मशीनरी का जो मनोबल टूट चुका है वह ठीक हो, बेरोजगारों को रोजगार मिले, शिक्षा व्यवस्था ठीक हो, शोषण बन्द हो, यह कॉमन एजेण्डा है, आप यह नहीं कह सकते हैं कि आपका कॉमन एजेण्डा नहीं था, भाजपा और बसपा का कामन एजेण्डा नहीं था इस एजेण्डे के नाम पर आपने अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया और इस तरह कॉमन एजेण्डे के नाम पर भ्रष्टाचार बढ़ा....

(व्यवधान)

[xxx] मैं कहना चाहता हूं इस सदन के विधयकों से विश्वास मत तो मिल ही गया है क्योंकि इस नई सरकार को आम जनता का समर्थन और विश्वास प्राप्त हो रहा है.....

(मेजें थपथपाई गईं)

अगर आपकी सरकार इतनी ही अच्छी थी तो आपके जाने के बाद दीवाली क्यों मनायी गयी ।

(मेजें थपथपाई गईं)

भाजपा के मित्रों से पुराने सम्बन्ध रहे हैं, मिलकर रहे हैं, बातचीत करते रहे हैं, अगर यह समझते तो इस घुटन और गुमनामी से कब की निजात मिल गयी होती मैं भाजपा मित्रों से कहता हूं कि उनसे थोड़े अच्छे सम्बन्ध हैं, छोटों से स्नेह है और बड़ों का सम्मान करता हूं, निराश होने की आवश्यकता नहीं है उनको भी जल्दी आजादी मिल जाएगी । तो यह जो चल रहा है, लोग पूरे प्रदेश के अन्दर खुशियां मना रहे हैं । सबसे बड़ी खुशी का कारण है, पुरानी सरकार का जाना । गुलामी की काली छाया का अन्त हो गया । आज सत्ता पक्ष की तरफ हम बैठे हैं, कल आप बैठे थे । लोकतन्त्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष बदलते रहते हैं । कल तक आप इधर थे, आज आ उधर हैं, यह तो चक्र है चलता रहता है । वर्तमान युग में कम से कम 10 साल ऐसे ही चलेगा, बिना गठबन्धन के देश में राजनीति नहीं हो सकती है । यह राजनीतिक मजबूरी है, एक गठबन्धन की सरकार गयी, दूसरी गठबन्धन की सरकार आ गयी । देश में भी 24-24 दलों की सरकार है । बिहार में, महाराष्ट्र में, केरल में, त्रिपुरा और जम्मू कश्मीर में भी गठबन्धन की सरकार है । केन्द्र में गठबन्धन की सरकार है । इसे कोई नकार नहीं सकता । इसे बेमेल कहना । [xxx] बहुत ही अखरने वाला शब्द है । आप में से कोई भी अकेले नहीं आ सकता है । हम मिलकर अपना दायित्व पूरा करें, सरकार के सकारात्मक कदम का हम सहयोग करें । मुलायम सिंह जी ने घोषणा की हैं उसमें कोई मतभेद नहीं है, सबकी अपेक्षा है कि वह पूरी करें । तो आप भी बतायें कि कैसे पूरी करें ? यह हम सब का मिला दायित्व है और जो जनहित की घाषणायें हैं यदि कमी है तो आप बतायें । मेरा कहना है कि सत्ता पक्ष और विपक्ष मिलकर जिस स्तर पर प्रदेश था, वहां ले जाने का प्रयास करें । आज प्रदेश पिछड़ रहा है । आप बाहर जायेंगे उत्तर प्रदेश का नाम ले लेंगे तो बड़ी अच्छी नजर से नहीं देखा

---

नोट :– [xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

जाता है । यह हृदय स्थल प्रदेश है और सत्ता पक्ष तथा विपक्ष का दायित्व है कि प्रदेश की खोयी हुई गरिमा और गौरव को अर्जित करें और दुनिया को दिखा दें कि हम सब मिलकर खोई हुई गरिमा को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं । केवल नुक्ताचीनी करने और मीन-मेष निकालने से काम नहीं चलेगा । मैं आपकी सारी बातों का जवाब नहीं देना चाहता । विपक्ष के लोग बैठे हैं, सभी सम्मानित सदस्य हैं, मिलजुलकर इस प्रदेश की घटती हुई गरिमा, घटते हुए सम्मान को कैसे वापस लाया जाये इस ओर सोचना है । इस प्रदेश में जो अराजकता का राज था, जो काली छाया थी, उसमें परिवर्तन हुआ है जो बसपा के बन्धु आये हैं, सच पूछो तो इस बदल में उन्होंने क्रान्तिकारी कदम उठाया है । मैं इसके लिए उन्हें बधाई देता हूं और उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूं जब वे भाजपा के अपने मित्रों को बधाई देंगे । क्या रखा है, मुझे तकलीफ होगी, आप जानते हैं कि मैं भाजपा का कितना बड़ा विरोधी हूं लेकिन जब 40 साल की बात को याद करता हूं तो एक बड़ी टीस उठती है कि क्या हो गया है उत्तर प्रदेश के भाजपा के नेताओं को, क्या हो रहा है ? मान्यवर, एक पत्रकार ने हमसे पूछा कि यह गठबन्धन कब तक चलेगा तो मैंने कहा कि जब तक तत्कालीन [xxx]

श्री अध्यक्ष–

यह सर फटने वाला शब्द कार्यवाही से निकाल दिया जाये ।

श्री कल्याण सिंह–

अब कभी भी बसपा प्रदेश में सरकार नहीं आ सकती और भाजपा भी कभी नहीं आ सकती । मैं भाजपा से कहना चाहता हूं कि यदि आप भाजपा को सरकार में देखना चाहते हैं तो शर्त यह है कि आप मेरे साथ आ जायें और हम जीतने की गारन्टी देंगे । जल्दी नहीं है । खूब सोच लें समझ लें लेकिन ज्यादा देर करेंगे तो हमें कठिनाई हो जायगी । मैं सभी मानीय नेताओं से कहना चाहता हूं कि बहुत बदनामी प्रदेश की हो गयी, बहुत गरिमा गिर गयी, गौरव गिर गया है । उसका मान-सम्मान दिलाकर उसे उच्च स्तर पर ले चलें ये दुनिया का चौथे स्थान पर उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनायें । इसमें आपके, हमारे संकल्प की आवश्यकता है । इन्हीं शब्दों के साथ मैं माननीय मुलायम सिंह जी के विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

* श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, आपने मुझे नेता सदन द्वारा रखे गये विश्वास प्रस्ताव के विरोध में बोलने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं । नेता सदन ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें बहुमत पहले था आज भी है । बहुमत का परीक्षण मई, 2002-2003 के बाद हुआ था उसमें परीक्षण में यह सिद्ध हुआ था कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी को बहुमत नहीं था और बहुमत न होते हुए भी सबसे बड़े दल के

---

नोट :– [xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

आधार पर बनाने वाले लोगों ने 1996 में श्री कल्याण सिंह को जब भारतीय जनता पार्टी ने सबसे बड़े दल का नेता चुना था तो उन्हें आमंत्रित करने की आवश्यकता नहीं महसूस हुयी । जब विपक्ष में रहते हैं तो लोकतंत्र की दुहायी देते हैं और जब सत्तापक्ष में होते हैं तो लोकतंत्र के सारे पायदान तोड़ने का काम करते हैं । निश्चित रूप से इससे लोकतंत्र आगे नहीं बढ़ता बल्कि कलंकित ही होता है । मैंने इस विधान सभा में देखने और सुनने का काम किया है । माननीय कल्याण सिंह जी अभी बहुजन समाज पार्टी की सरकार के बारे में तमाम विश्लेषणों का उदाहरण दे रहे थे । उनके पुराने भाषणों को श्री स्वामी प्रसाद मौर्या जी ने पढ़कर सुनाया । नेता सदन के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश मे दो बार सरकार बनी और 1989 में जिस तरह से लोकतंत्र को कलंकित किया गया उसकी बानगी के रूप में 20 नवम्बर, 1990 को कल्याण सिंह ने कहा था कि

(घोर व्यवधान)

(सत्ता पक्ष के कई सदस्य उठकर अपनी बात कहने लगे जिससे सदन में व्यवधान उत्पन्न हो गया इस कारण से माननीय श्री लालजी वर्मा जी की बात नहीं सुनाई पड़ी )

(इस समय 3.00 बजे अधिष्ठाता श्री माता प्रसाद पाण्डेय पुनः पीठासीन हुए)

मान्यवर, उस समय भी इन्होंने इस बात को कहा था । मान्यवर, इसी तरह से 6 फरवरी, 95 को भी इसी विधान सभा में पेज नम्बर–120 पर माननीय श्री कल्याण सिंह जी ने कहा था कि यह सरकार एक जातिवादी सरकार है अपराधवादी सरकार है, नरसंहारवादी सरकार है, अपराधवादी सरकार है, बलात्कारी सरकार है, तो इस तरह से कुछ विशेषणों को लगाने का काम माननीय कल्याण सिंह जी ने किया था । इसी तरह से माननीय कल्याण सिंह जी ने इस सरकार के बारे में कहा था कि यह जो सरकार पदारूढ़ हुई है इससे पूरे प्रदेश में गृह युद्ध की स्थिति बन गयी है ।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

कृपया शांत रहें ।

श्री लालजी वर्मा–

आज कल्याण सिंह जी ने और नेता सदन ने कहा कि आज यह सरकार जब पदारूढ़ हुई है तो इससे प्रदेश के जनमानस में खुशहाली आयी है । मैं तो यह कहना चाहूंगा कि इससे प्रदेश में खुशहाली नहीं बल्कि प्रदेश के गुन्डों में खुशहाली आयी है और आज वह दीवाली मनाने का काम कर रहे हैं । जनता तो मासूम है लेकिन गुण्डे पूरे प्रदेश में दीवाली मनाने का काम कर रहे हैं । मान्यवर, आज लोकतंत्र की दुहाई देने वाले जब रामपुर तिराहा काण्ड हुआ था तो उस समय उनको लोकतंत्र नजर नहीं आया था । जब लखनऊ में तारा देवी जिला पंचायत कांड हुआ था तब उनको नजर नहीं आया था ....

(व्यवधान)

माननीय किरनपाल सिंह जी जो उस समय जनता दल में थे तो उन्होंने विधान सभा में इस जंगल राज की बात उठायी थी । मैं उसका उद्धरण देकर सदन का समय बरबाद नहीं करना चाहूंगा । लेकिन आज जिस तरह से बदले की भावना से आतंक फैलाकर विधायकों को तोड़ने की साजिश रची जा रही है और जो यह सरकार अनैतिकता के आधार पर बनी है वह कभी नैतिक नही हो सकती है ।

(व्यवधान)

मान्यवर, मैं आपके सामने खुली चुनौती देना चाहता हूं जो यह आरोप भ्रष्टाचार का मुझ पर लगा रहे हैं अगर एक पैसे का भी यह उदाहरण दे देंगे तो मैं विधान सभा से इस्तीफा दे दूंगा । मैंने अपने राजनैतिक जीवन में एक पैसे का भी भ्रष्टाचार नहीं किया है । मान्यवर, कुछ नेता हमेशा दूसरी सरकारों को क्रूरवादी, आतंकवादी और जातिवादी कहते हैं और यह इनकी आदत है । निश्चित रूप से आज जिस तरह से लोकतंत्र का गला घोटने का काम किया, जिस तरह से भेड़ बकरियों की तरह विधायकों को खरीदने का काम किया है, यह एक काले अध्याय के रूप में याद किया जाता रहेगा ।

(व्यवधान)

(कई सदस्य खड़े होकर अपनी-अपनी बात कहने का प्रयास करने लगे जिससे व्यवधान उत्पन्न हो गया)

श्री अधिष्ठाता–

कृपया सदस्य गण बैठ जायें और शान्तिपूर्वक सुनें । अब आपका समय समाप्त हो रहा है, आप बैठ जायें ।

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, श्री प्रमोद कुमार तिवारी जी जो राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता हैं, उनसे मैं पूछना चाहता हूं कि 1980 में दस स्टेटों में सरकार को किसने भंग करके लोकतंत्र को बहलाने का काम किया था, यह भी आपके संज्ञान में होगा, मान्यवर, पूरे प्रदेश में भ्रष्टाचार के पनपने का जो काम कांग्रेस ने अपने शासन काल में .....

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

आपको सिर्फ सात मिनट बोलने के लिए दिए गएं थे, आप अब समाप्त करें और बैठ जायें ।

(व्यवधान)

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, 1947 से 1977 तक कांग्रेस की सरकार उत्तर प्रदेश में रही, किसी भी गांव की एक भी सड़क के विकास का काम उन्होंने किया हो तो वह बतायें, बहुजन समाज पार्टी ने 12625 गांवों में सड़कों को बनवा करके लेपन कार्य करा करके गांवों में विकास कार्यों को पहुंचाया है और उत्तर प्रदेश को विकास के रास्ते पर ले जाने का काम किया है, इस प्रदेश में गुण्डा राज खत्म करके भयमुक्त समाज

बनाने का काम किया है बहुजन समाज पार्टी और पूरे प्रदेश की जनता ने भयमुक्त होकर दीवाली मनायी है, इसी के साथ मैं धन्यवाद प्रस्ताव का विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं , धन्यवाद ।

* श्री विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह–

मान्यवर, अभी लालजी वर्मा जी बोल रहे थे कि हम बड़े ईमानदार हैं, मैं कहना चाहता हूं कि मेडिकल कालेज की एम०बी०बी०एस० आदि परीक्षाओं में उन्होंने दस-दस लाख रुपये ले करके काम किया है ।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

आप संक्षेप में अपने आरोप का खण्डन करें आप इसे स्वीकार करते हैं या नहीं ।

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, मेरा....

(व्यवधान)

(अनेक सदस्य एक साथ खड़े होकर बोलने का प्रयास करने लगे जिससे व्यवधान उत्पन्न हो गया )

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, जो आरोप लगाया गया है उसे या तो आप कार्यवाई से निकलवा दें या मेरा वर्जन आने दें ।

श्री अधिष्ठाता–

जो आरोप लगाया है उसका स्पष्टीकरण करने का आपको अवसर दिया गया है । अब माननीय कुंवर रेवतीरमण सिंह जी खड़े हैं बोलने के लिए ।

श्री लालजी वर्मा–

आप मुझे कहने का अवसर दें ।

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, एक माननीय सदस्य ने माननीय लालजी वर्मा पर आरोप लगाया कि फलां भर्ती में रुपया लिया गया है या तो आप उसे कार्यवाही से निकलवा दें । या इन्हें अपनी बात कहने दें ।

श्री अधिष्ठाता–

इसको देख लिया जायेगा ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(व्यवधान)

श्री उदयराज–

मान्यवर, कार्यवाही से यह नहीं निकाला जायेगा । पैसा लिया गया है ।

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, यह स्पष्ट आरोप मेरे ऊपर लगाया गया है । आप विधान सभा की एक कमेटी बनायें और अगर यह बात प्रमाणित हो जाए किसी परीक्षा में एक नया पैसा भी चला हो तो निश्चित रूप से मैं राजनीति से सन्यास ले लूंगा । यह आरोप अर्नगल है बेहूदा आरोप है ।

* कुंवर रेवती रमण सिंह–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने माननीय मुलायम सिंह यादव सरकार के विश्वासमत पर मुझे बोलने का मौका दिया । मान्यवर, अभी जो यह विवाद चल रहा था इसमें मैं आपसे आग्रह करूंगा कि माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह कर लिया जाय आपकी तरफ से कि इस प्रकरण पर जांच करवा लें और जो भी दोषी हो उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाई करें । सी०पी०एम०टी०, एमडी और एमएस की परीक्षा में जो धांधली हुई है आरोप-प्रत्यारोप हुए हैं मैं आपसे आग्रह करूंगा कि माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा इसमें जांच करा ली जाय और जो भी दोषी हो उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाय ।

मान्यवर, अभी माननीय मुलायम सिंह यादव जी की सरकार बने मात्र एक सप्ताह हुआ है मैं तो यह उम्मीद कर रहा था कि इस प्रस्ताव पर पूरा विपक्ष एक मत होकर इस सरकार में विश्वासमत पर सहमत होकर एक मत से विश्वासमत पारित करेगा इसलिए मान्यवर, कि अभी एक सप्ताह के अन्दर जितनी भी घोषणाएं माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया है उसका केवल सत्तापक्ष हो लोगों ने ही नहीं बल्कि आम जनता ने भी सराहा है । मेडिकल कालेजों और अस्पतालों में पर्चा 8 रुपये से एक रुपये में चाहे भर्ती का मामला हो चाहे पलंग की फीस माफी का मामला हो, अस्पतालों में चाहे फीस वृद्धि कम करने का मामला हो चाहे छात्र यूनियनों के चुनाव कराने का मामला हो, चाहे गन्ना किसानों को जो बरसों से भुखमरी की कगार पर थे के भुगतान का मामला हो, माननीय मुख्य मंत्री जी ने घोषणा करके न केवल घोषणा किया बल्कि उनको गन्ने का बकाया भी मिलने लगा । मैं समझता हूं कि इधर से उनको बधाई देने का लोग कार्य करेंगे लेकिन मुझे अफसोस हुआ, लालजी वर्मा चले गये, मौर्या जी बैठे हैं मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि एक साल के अन्दर इस गौरवशाली विधान सभा में आपने कै दिन विधान सभा चलाई थी ? मात्र चार दिन विधान सभा चलायी थी । मान्यवर, मैं वह बातें नहीं दोहराना चाहता हूं जो अन्य हमारे साथियों ने कहीं है लेकिन मौर्या जी मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि इतना हीं नहीं तमाम विधायकों के ऊपर गैंगस्टर और पोटा लगा दिया गया, उनकी जुबान पर लगाम लगा दी गयी, यह काम तो इमरजेन्सी में भी नहीं हुआ था । उसमें भी हम लोगों ने विरोध किया था उसमें उस व्यक्ति के अलावा उसके परिवार के ऊपर कोई कार्यवाही नहीं हुई थी । लेकिन मान्यवर, यहां पूरे परिवार

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

को प्रताड़ित करने का काम किया गया और इतना ही नहीं कोई आदमी विरोध करे दो सौ -चार सौ लोगों के ऊपर गैंगस्टर लगा दिया । क्या यही लोकतंत्र है ? माननीय टण्डन जी मैंने कार्य मंत्रणा की मीटिंग में कहा था कि इतना बड़ा पाप है और उसमें कहीं न कहीं आपकी भागीदारी है । आपने कहा कि क्या आत्महत्या कर लें, मैंने कहा कि आत्महत्या न करो प्रदेश को बचाओ । इस प्रदेश में बैकलाग के नाम पर जो भर्तियां हुई हैं हजारों की संख्या में, मैं इस विधान सभा में मांग करता हूं कि उसकी जांच करा ली जाय अगर उस बैकलाग की भर्ती में बिना धन दिये, बिना पैसा दिये एक भी लड़के की भर्ती की गयी हो, चाहे वह अनुसूचित जाति का ही क्यों न हो तो मैं विधान सभा से इस्तीफा दे दूंगा । इस प्रदेश में लूट का राज चल रहा था, आप कहते हैं कि कानून का राज चल रहा था, अगर कानून का राज चल रहा होता तो इतनी बड़ी संख्या में आपके सदस्य हमारे दल में न आये होते । आपने विधायकों की हैसियत कम कर दी, तानाशाह की तरह से आप लोग विधान सभा चला रहे थे, सरकार चला रहे थे, यह लोकतंत्र है तानाशाह तंत्र नहीं है । एक ओर तो आप लोग दलितों के हितों की बात करते हैं और अगर बजट देख लें तो दलितों को उनकी लड़कियों की शादी का बजट बहुजन समाज पार्टी की सरकार में एक तिहाई किया गया । मैं कहना चाहता हूं कि जिनकी यह दुहाई देते हैं 20 हजार रुपये में कौन सा दलित का मकान बन जायेगा इस बात को जरा आप बता दें । मौर्या जी आप बनवा सकते हैं आप तो विश्वकर्मा जी से बड़े हैं । इस प्रदेश में गरीब आदमियों को किस तरह से गुमराह किया गया उसकी मिसाल कहीं और नहीं मिलेगी ।

अधिष्ठाता जी पिछली विधान सभा में मुझे याद है कि कार्य मंत्रणा में हम लोग चिल्लाते रहे कि 4 दिन की विधान सभा बुलायी गयी है और 4 दिन में उसी दिन श्री राज्यपाल का अभिभाषण उसी दिन विश्वासमत और उसी दिन बजट, मैंने 30 साल के संसदीय इतिहास में ऐसा कभी नहीं देखा । मैं इस बात का गवाह हूं और पूरा सदन इस बात का गवाह है कि हम लोग मांग करते रहे कि वोटिंग होनी चाहिए, पूरा विपक्ष कहता रहा कि लाबी डिवीजन कराइये लेकिन पहली बार बिना वोटिंग के, बिना हाथ उठाये और मान्यवर, हां, नहीं, तक नहीं कराया गया और कहा गया कि सब काम खत्म हो गया, अब हम उठते हैं फिर कब मिलेंगे पता नहीं और जब मिले तो स्वरूप ही बदल गया ।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि क्या ताज मामले की जांच मुलायम सिंह ने शुरू की या कल्याण सिंह जी ने करायी अथवा प्रमोद तिवारी ने करायी, इसे तो सर्वोच्च न्यायालय ने कराया । सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर सी०बी०आई जांच शुरू कर रही थी उसमें उत्तर प्रदेश सरकार का कोई योगदान नहीं था । तब फिर इतना भयभीत क्यों हैं ? उन्होंने विधान सभा से इस्तीफा भी दे दिया और बाकी लोग बेचारे बिना नाव-पतवार के हो गये, इसलिए यह लोग डूबती हुई नाव को देख करके उतर लिये । अभी बड़ा विरोध हो रहा था कि टीना मुनीम आयीं अम्बानी आये, गोदरेज आये, मौर्या जी ने चश्मा लगा करके देखा था । आपकी सरकार 16 महीने चली । आप हमको एक बात का जवाब दे दें कि एक भी पैसे का पूंजी निवेश किसी पूंजीपति ने उत्तर प्रदेश में किया हो । माननीय टण्डन जी, मैं आपसे पूछना चाहता हूं आप तो नं० 2 के मंत्री थे, मैं आपका बड़ा आदर करता हूं ।

श्री प्रमोद कुमार–

मैं टण्डन जी के लिये यह आरोप बर्दाश्त नहीं कर सकता कि यह नं० 2 के आदमी हैं, कृपया इनको नं० 2 का न कहें ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, उसके पहले डेढ़ साल भाजपा की सरकार चली, 1991 में । फिर 1996 से 5 साल की सरकार चली, उसके बाद 16 महीने फिर चली । लेकिन इतने दिनों में हुआ क्या, मैं एक उद्धरण देना चाहूंगा और माननीय टण्डन जी से इसका जवाब भी चाहूंगा । क्या एक भी पावर हाउस, एक भी बिजली घर इन लोगों ने लगवाया और क्या किया इन्होंने, ऊंचाहार बेच दिया, टांडा को भी बेच दिया । यह दोनों ही पावर हाउस इलेक्ट्रानिक्स कम्प्यूटराइज पावर हाउस थे । इसका नतीजा क्या हुआ जो बिजली हम सवा रुपये प्रति यूनिट बनाते थे, वह अब हमें साढ़े–3 और चार रुपये प्रति यूनिट की दर से खरीदनी पड़ रही है । मैं पूछना चाहता हूं कि इस प्रदेश को दुर्दशा में किसने पहुंचाया ? आज माननीय मुलायम सिंह जी ने यहां कई घोषणायें की, उस पर माननीय टण्डन जी ने कहां कि हम आपको इस पर समर्थन देंगे लेकिन यह बताइये कि बिजली आयेगी कहां से ? हम उनको यह बताना चाहते हैं कि हम लोग अनपरा-सी को बनवाकर चलवायेंगे, पारीछा में 420 मेगावाट का पावर हाउस चलवायेगे और इलाहाबाद में प्रतापपुर में 1000 मेगावाट का प्रस्तावित है, वह भी बनवाकर हम चलवायेंगे । इतना ही नहीं जो हमारा सेंट्रल शेयर है, उसके लिये हम सरकारी खर्चों में कटौती करेंगे और अपने हिस्से की बिजली अवश्य खरीदेंगे और उत्तर प्रदेश के किसानों को, यहां के शहरों को और उद्योगों को बिजली देने का काम करेंगे । मैं अपनी बात खत्म करता हूं लेकिन टण्डन जी से यह जरूर आग्रह करूंगा, स्वामी प्रसाद मौर्य जी से भी कहना चाहूंगा कि डिबेट चाहे जितनी कर लें, लेकिन सब बातें मत कहलवाइये, अगर कहलायेंगे तो मैं उदाहरण के साथ पूरे विस्तार से सब बता सकता हूं । अभी लालजी वर्मा ने कहा कि ददुवा अपराधी हो सकता है तो उसका भाई भी तो हो सकता है । मैं बताना चाहता हूं कि इलाहाबाद के अन्दर एक साल में इनकी सरकार के रहते करोड़ों रुपये लूटने का काम उसके द्वारा किया गया है । इतना ही नहीं, मेडिकल कालेज के डाक्टरों को बन्दूक की नोंक से पीटा गया, वहां पर 3 दिन तक हड़ताल रही, लेकिन इस सरकार को मैं इस बात की बधाई दूंगा कि इन्होंने ऐसा नुक्ता निकाल लिया था कि एफ०आई०आर० नहीं हुयी । न लेखा न बही, जो उस समय की सरकार कहे वही सही ।

मान्यवर, मैं एक उद्धरण नहीं दर्जनों बल्कि पचासों उद्धरण दे सकता हूं । मैं एक बात कहकर अपनी बात खत्म करूंगा । मेरी हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना है कि इस गौरवशाली विधान सभा की जो मर्यादायें हैं जो परम्परायें हैं उसके अनुसार इस विधान सभा को चलने दीजिए । सरकार क्या करती है, क्या नहीं करती है । एक साल के बाद फिर आपको मौका मिलेगा, आप विश्लेषण करियेगा, आलोचना करियेगा लेकिन एक साल का समय सरकार को दीजिए । इसका नतीजा आपको ही नहीं उत्तर प्रदेश की पूरी जनता को मिलेगा । इसी के साथ मैं विश्वासमत पर पूरा समर्थन देता हूं और आशा करता हूं कि आज पूरा विपक्ष एक होकर पूरा समर्थन करेगा । धन्यवाद ।

श्री राम इकबाल सिंह–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, आपने माननीय मुलायम सिंह जी की सरकार के विश्वासमत पर बोलने का मुझे जो अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं । महोदय मैं तो पहली बार विधान सभा में आया हूं लेकिन उत्तर प्रदेश की कोई ऐसा दल नहीं है जिसने पूर्व मुख्य मंत्री मायावती से गठबन्धन न किया हो और फिर पता नहीं क्यों गठबन्धन टूट जाता है और फिर नये गठबन्धन के लिए नयी पैमाइश शुरू हो जाती है । हम आपसे भी पूछ रहे हैं माननीय तिवारी जी से भी पूछ रहे हैं और आम सबसे पूछ रहे हैं कि ऐसा बार-बार क्यों होता है ?

(सत्तापक्ष की तरफ से आवाज आयी कि टण्डन जी से पूछो)

मान्यवर, यह अपने आप में उलझा हुआ प्रश्न है । अनेक बार कसमें वादे खाकर 8-10 सालों से यह गठबन्धन की सरकारें चल रही हैं । कभी कोई किसी सरकार को देवता बनाता है, फिर उसे राक्षस सिद्ध करने लगता है । जो परिस्थितियां इस प्रदेश में बार-बार बन रही हैं उससे कहीं न कहीं लोकतंत्र घायल हो रहा है । यह बात सही है कि जब हम इस विधान सभा की फ्लोर पर कोई बात कह रहे हैं तथा इसमें कोई दो रांय नहीं कि मुलायम सिंह जी को आज कोई प्रचण्ड बहुमत नहीं मिलने वाला है फिर भी कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो चाहे विपक्ष की हो या पक्ष के हों यदि बहस हो रही है तो स्वस्थ बहस होनी चाहिए । निश्चित रूप से हम पिछले दिनों की कुछ घटनाओं पर प्रकाश डालना चाहेंगे । हो सकता है कुछ लोग न सहमत हों । मार्च 2002 में जब किसी एक दल की सरकार नहीं बनी थी तो एक गठबन्धन हुआ, यह निश्चित था कि उस गठबन्धन को जनादेश नहीं था, लेकिन प्रदेश की जनता को चुनावी बोझ से बचाने के लिए भारतीय जनता पार्टी की लीडरशिप ने गठबन्धन सरकार बनाने का फैसला लिया था । इसमें भी कोई दो राय नहीं थी कि चाहे विधायक हों या जनता सभी इस बात से सशंकित थे कि मुख्य मंत्री तो वही हैं । मैं सदैव इस बात का पक्षधर हूं कि जिन्दगी में किसी की परीक्षा एक बार लेनी चाहिए, दो बार नहीं । जबकि यह तो मायावती जी के साथ तीसरा चौथा प्रयोग था । तीन बार वह धोखा दे चुकी थी । एक बार लोक सभा में एक वोट से बाजपेयी सरकार गिर गयी और हजारों करोड़ रुपयों का बोझ देश की जनता को उठाना पड़ा लेकिन प्रदेश को चुनाव से बचाने के लिए फिर मई 2002 में वही प्रयोग किया गया, ये धोखा भरा हुआ कदम था और हम लोग अंधी गली में घुस गये थे । बसपा के हमारे कई साथियों ने कहा कि [xxx] शुरु हो गया है । [xxx] मैंने इतिहास में नहीं पढ़ा है ।ऐसी कोई नारी नहीं हो सकती जिसके पास थोड़ी सी ममता न हो और थोड़ी दया न हो । जन प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं को जेलों में बंद किया गया । उनके बच्चे गेट पर मिलने के लिए तड़पते रहें यह कहां का लोकतंत्र है ? हम तो सीखने के लिये आपके बीच आये हैं । हमारे इलाके की एक घटना है । गरीब के घर का सवाल था । अनुसूचित जाति में भी दो तरह के लोग हैं एक तो क्रीमी लेयर वाले और दूसरे नान क्रीमी लेयर वाले । मेरे यहां उस गरीब के पास एक इंच जमीन नहीं थी वह खलिहान की जमीन में घर बनाकर रह रहा था । उसके साथ 18 और परिवार थे जो वहां पर 40 वरस से रह रहे थे । लेकिन उनमें से सिर्फ एक श्री ओम प्रकाश को उजाड़ दिया गया इसलिये कि वह बी०जे०पी० का झंडा अपने

---

नोटः [xxx] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

मकान पर क्यों लगाये है ? वह दिन 23 मई, 2003 का था । मेरे पास एफ०आई०आर० है । बेचारे एक गरीब परिवार को 50 हथियार बंद लोगों ने उजाड़ दिया और आजतक उनकी गिरफ्तारी नहीं हुयी है । 27 जून को मैंने एनेक्सी में मायावती जी से कहा कि गरीब का मकान गिरा दिया गया है तो उन्होंने कहा कि वह बदमाश था ब०स०पा० को छोड़कर भा०ज०पा० में भाग गया था । ऐसी बात किसी मुख्य मंत्री के लिये शोभा नहीं देती । कोई नागरिक किसी दल में शामिल होकर उसका कार्यकर्ता हो सकता है ? मैंने मुख्य मंत्री जी से कहा कि उसके पास घर नहीं है, ऐसा नहीं होना चाहिये कि उसका घर गिरा दिया जाय और उसी के खिलाफ कार्यवाही भी हो लेकिन मुख्य मंत्री ने कहा कि मैं कुछ नहीं कर सकती । इस पर मैंने कहा कि मैं जनता के बीच जा रहा हूं । मैं जनता के बीच गया और अपनी बात लोगों के सामने रखी । मेरी बात सुनकर हजारों लोगों ने मेरा साथ दिया । 10 हजार लोगों ने गांधी जी की प्रतिमा के नीचे धरना दिया । 17 जुलाई को हमारे क्षेत्र में मुख्य मंत्री अम्बेडकर गांवों के संबंध में जांच करने के लिये गयीं । प्रदेश की आय, किसानों, व्यापारियों, सरकारी नौकरों से जो टैक्ससेशन होता था वह पूरे का पूरा अम्बेडकर गांवों पर खर्च किया जाता था और अम्बेडकर गांव सिंचित किये जा रहे थे । ऐसा लगता था कि हिन्दुस्तान में और लोगों ने आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी है । अम्बेडकर गांवों को वन साइडेड तरीके से सहायता दी जा रही थी । जब मुख्य मंत्री हमारे यहां गयीं तो उन्होंने मंच से कहा कि यहां का विधायक घृणित राजनीति कर रहा है और गैर दलितों को उकसा रहा है और उन्होंने मुझे जेल में ठूंसने की बात भी कही । आप सोच सकते हैं कि वैसी परिस्थिति थी । हमारे जिले के एम०एल०ए० विपक्ष में भी हैं । मेरे क्षेत्र में जिले के सिकन्दरपुर में गुलाब होता है । मैं मुख्य मंत्री के स्वागत में फूलों का गुलदस्ता लेकर गया । मैंने सोचा कि मेरे क्षेत्र में मुख्य मंत्री जी आयीं हैं उनका स्वागत करना चाहिये ।

मैं जिन हाथों में फूल देकर आया था,

उन्हीं के हाथ के पत्थर मेरी तलाश में थे ।

मैं इक कतरा ही सही अलग मेरा अलग एक वजूद तो है,

हुआ करे समुन्दर जो मेरी तलाश में था ।

मान्यवर, मैं बलिया जिले का हूं । मुझे गर्व है कि आजादी की लड़ाई में सबसे पहले आजाद होने का गौरव उसे प्राप्त है । मान्यवर, सब जानते हैं कि अधिकारियों को मंच से निलम्बित किया जाता था और कुछ समय बाद उनकी बहाली हो जाती थी । इस बीच में क्या राग, क्या होता था, इसकी सबको जानकारी है कि कैसे अधिकारियों को फिर से बहाल कर दिया जाता था । मैं किसी अलोकतांत्रिक तरीके को बर्दास्त नहीं कर सकता । मैंने उनकी चुनौती स्वीकार किया और बलिया में 1 लाख लोगों का प्रदर्शन हुआ । 19 तारीख को 5 हजार लोगों ने थाने पर धरना दिया । [ वहां पर भाषण सुनने के बाद लोग नारे लगा रहे थे, [x x x] मेरे ऊपर हरिजन उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज हुआ जबकि मैं वहां पर नहीं था । 10 आदमियों को और मुलजिम बनाया गया । ]

---

नोट :–[x x x] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

मायावती जी की सभा में उनको मेरे खिलाफ विष वमन सुनकर उनके कार्यकर्ता अति उत्साह में मेरे कार्यालय के सामने अटल, आडवाणी मुर्दाबाद तथा राम इकबाल को गिरफ्तार करो आदि नारे लगाते हुए जा रहे थे । फलस्वरूप भा०ज०पा० ब-स०प० में संघर्ष हुआ । मैं मौके पर नहीं था परन्तु मेरे साथ अन्य 10 लोगों पर भी हरिजन उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज हुआ वहीं दूसरे पक्ष के दर्जनों कार्यकर्ताओं को 25 हजार से 50 हजार तक मुख्यमंत्री के स्वविवेकाधीन कोष से दिया गया जिनको कहीं भी चोट नहीं लगी थी उनको भी दिया गया । दलित के नाम पर मुख्यमंत्री द्वारा लूटने का काम किया गया । जिन्होंने विरोध किया उनको जेल में भेजने का काम मुख्यमंत्री द्वारा किया गया । हमने लोक तांत्रिक ढंग से इस चुनौती को स्वीकार किया । ताजोपुर में किसानों के ऊपर हमला बोला गया । किसानों के ऊपर रासुका लगाई गई । 70 से ऊपर किसानों के ऊपर कार्यवाही हुई है । एक तरफा कार्यवाही हुई है । स्वविवेकाधीन कोष से 15 लाख रुपए बांट दिए गए । स्वविवेकाधीन कोष का जम कर दुरुपयोग किया गया जिन्होंने अपने हाथ में जरा सी चोट दिखाई उनको 25 हजार रुपए दिए गए 6,750 रूपए समाज कल्याण विभाग की ओर से दिए गए । 25 हजार रुपए मुख्यमंत्री कोष से दिए गए ; यह न्याय व्यवस्था थी ? इसको समाज माफ नहीं कर सकता है । इससे हम एक स्वस्थ लोकतंत्र की उम्मीद कैसे कर सकते हैं ? जो हमारे मित्र दल हैं उनसे भी अनुरोध है । उनका भी कुछ इतिहास ऐसा रहा है सदन में हिंसा हुई, हाई कोर्ट पर हमला बोला गया रामपुर तिराहा काण्ड हुआ अनेकों घटनाएं हुई जो नहीं होनी चाहिए थीं । उस पर अफसोस करते हुए एक नई राजनीति की दिशा शुरू होनी चाहिए । पक्ष और विपक्ष के बीच मुद्दों के आधार पर स्वस्थ चर्चा होनी चाहिए । इसी के साथ मैं अपनी पार्टी की नीतियों के अनुसार इस विश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

(अनेक सदस्यों द्वारा एक साथ बोलने पर व्यवधान)

श्री घूरा राम–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री अधिष्ठाता–

क्या व्यवस्था है ?

श्री घूरा राम–

माननीय अधिष्ठाता महोदय आपने मुझे बोलने का अवसर दिया....

श्री अधिष्ठाता–

बोलने का अवसर नहीं दिया, व्यवस्था बताइए ।

श्री घूरराम–

[x x x]

---

नोट :– [x x x] से अध्यक्ष श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री अधिष्ठाता–

यह सब लिखा नहीं जाएगा ।

श्री घूराराम–

मैं इस विश्वास के प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

डा० अशोक बाजपेई–

अधिष्ठाता महोदय, मैं नेता सदन के द्वारा प्रस्तुत विश्वास के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । पक्ष और विपक्ष में बैठे मेरे मित्र बड़ी देर से लोकतंत्र की दुहाई दे रहे थे । मान्यवर, आज मैं उनका ध्यान 5 सितम्बर, 2002 की घटना की ओर ले जाना चाहता हूं जिस दिन सदन की ओर से अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था । माननीय अध्यक्ष द्वारा अविश्वास प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था । प्रश्न केवल इतना था कि अविश्वास के प्रस्ताव पर चर्चा की जाय । पक्ष और प्रतिपक्ष के लोग अपनी बात कहें । उस समय सत्ता में बैठे लोगों और तत्कालीन मुख्यमंत्री जी को यह गंवारा नहीं था कि वे आलोचना सुन सकें । जोड़-तोड़ कर बनी सरकार को भय था कि अविश्वास के प्रस्ताव पर मत होगा तो सरकार सदन में गिर जायेगी । कुंवर साहब कह रहे थे कि लोकतंत्र में 10 मिनट में राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद, अविश्वास प्रस्ताव और उसके अलावा लेखानुदान उसका पारण और मत विभाजन, विनियोग जिन पर मतदान होना था, पांच मिनट में पारित कर लिया गया । आज इनको बधाई देनी चाहिए कि सरकार ने सत्ता में बैठकर विश्वास मत प्रस्तुत करके उस पर सबको बात कहने का अवसर दिया है । लोकतंत्र को मजबूत करने का काम किया है । आज आप सरकार की आलोचना कर रहे हैं और लोकतंत्र की दुहाई दे रहे हैं । पिछली सरकार एक ऐसी सरकार थी जो तिकड़म से गठजोड़ से बनी थी जिसकी आस्था न लोकतंत्र में थी और न संविधान में थी । वह सरकार अपने पागलपन में चूर थी । प्रदेश को अपनी सम्पत्ति मानकर जिस तरह से एक मदान्ध राजा राज्य करता था । उस तरह से कार्य कर रही थी । रास्ते चलते कोई विचार मन में आ गया, तो उसको लागू करा दिया । बाबा साहब का नाम लेकर उनके सपनों और आदर्शों को भूल गई । हिन्दुस्तान के लोकतंत्र में कोई सरकार ऐसी नहीं रही होगी जिसने संविधान की इस तरह से दुर्दशा की हो । इनको कोई अधिकार नहीं है बाबा साहब का इस तरह से नाम लेने का । उन्होंने कुछ स्वप्नों के साथ संविधान की रचना की होगी, लेकिन कि उसका अनुपालन इस तरह से होगा यह कभी नहीं सोचा होगा । लेकिन तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उस संविधान से ऊपर उठकर, सदन से ऊपर होकर कार्य किया है जिसके लिये कोई कानून नहीं था । आज जो लोग बढ़-चढ़कर बोल रहे हैं उनकी उस समय हिम्मत नहीं थी कि उनके सामने कोई बात कह सके । मुख्य मंत्री के सामने एक गुलामों की फौज इकट्ठा थी जो उसके इशारे पर काम करते और चलते थे । सत्ता पक्ष में बैठने वालों को मुख्य मंत्री के इशारे पर काम करना होता था कोई बराबर में बैठ नहीं सकता था, कोई विचार नहीं व्यक्त कर सकता था । एक गुलामों की तरह उनके साथ आचरण होता था। कोई खुलकर सांस नहीं ले सकता था । आज प्रदेश में खुली हवा आई है और इसलिये दल में भगदड़ मची है । इसका कारण यह है कि वे आतंकित प्रताड़ित और भयभीत थे । सता का मद समाप्त होते ही उनमें इस तरह से भगदड़ मच गई । बैक लाग के नाम पर दलितों को नियुक्ति देने का काम किया गया हजारों की संख्या में रिक्तियां निकाली गई चाहे विभाग में उतने लोगों की आवश्यकता थी या नहीं थी ।

यह मानकर निकाली गई कि भविष्य में हो जायेंगीं । गरीब लोगों के मन में एक उत्साह जागा कि हमको नौकरी मिल जायेगी । हजारों की संख्या में लोगों ने आवेदन-पत्र भरे । कुछ को आवेदन-पत्र मिले कुछ को नहीं मिले । एक चपरासी के पद के लिये दो-दो लाख रुपये लिये गये और यह कहा गया कि यह पांचवीं मंजिल तक जायेगा हमको 50 हजार रुपये मिलेगा । कुछ लोगों को नियुक्ति पत्र मिल गये और कुछ को नहीं मिला । आज लोग तत्कालीन मंत्रियों का पता पूछ रहे हैं कि हमको कम से कम हमारा पैसा ही वापस मिल जाये । मेरा कहना है कि तत्कालीन मंत्रियों ने जिन्होंने पैसा लिया है उन गरीबों को उनका पैसा वापस कराया जाय । आज तक कभी ऐसा नहीं होता था मुख्य मंत्री जी अपना जन्मदिन मनाती हैं सरकारी खजाने से पैसा खर्च होता है । राजा रजवाड़ों में तो राजा राजकोष से अशर्फियां लुटाता था लेकिन यहां तो मुख्यमंत्री अपना जन्म दिन सरकारी खजाने से मनाती हैं । उनके निमंत्रण पत्र सरकारी खजाने से छापे जाते हैं । हीरे भेंट किये जाते हैं उनको सोने का मुकुट पहनाया जाता है । करोड़ों रुपया जन्म दिन पर बर्बाद किया जाता है । मुख्य मंत्री इस तरह तिसारत करने का काम करें । ऐसे दिन प्रदेश ने देखे हैं इसकी जांच होनी चाहिए । मैं नेता सदन से जानना चाहूंगा कि क्या किसी मुख्यमंत्री को अधिकार है कि गरीब जनता की गाढ़ी कमाई, जिससे सरकारी खजाना बनता है उसका निजी सुविधा के लिए, निजी वैभव को बढ़ाने के लिये, निजी अहंकार को बढ़ाने के लिए, उस पैसे को बरबाद किया जाए ? इसकी जांच होनी चाहिए । एक और दर्द है नेता सदन को इतनी खस्ता हालत में प्रदेश मिला है, ऐसी हालत में मुलायम सिंह यादव जी को प्रदेश की बागडोर सौंपी गई है, श्रीमन् सबसे ज्यादा विडम्बना यह है कि प्रदेश की कार्यपालिका, जो व्यवस्था के हाथ-पैर होते हैं जिस कार्यपालिका की वचनबद्धता और कमिटमेंट प्रदेश के प्रति होता है उसको दल विशेष का बनाने का काम किया है । जिस तरह से मंच से जिलाधिकारियों को निलम्बित किया जाता था, बैठक में ताली बजाकर उनको अपमानित करने का काम किया जाता था, मुख्य सचिव, आयुक्त निलम्बित होते थे इस तरह की चीजों से पूरी कार्यपालिका का मनोबल गिर चुका है, उनका मनोबल टूट चुका है, उनकी अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता समाप्त हो गई है इस कार्यपालिका को खड़ा करने का काम कैसे किया जाएगा, जो काम इस [x x x] ने किया है जिसको नियम, संविधान से कोई मतलब नहीं था.....

(व्यवधान)

श्री लालजी वर्मा–

इस तरह के शब्दों का प्रयोग अशिष्टातावश किया जा रहा है ।

डा० अशोक बाजपेई–

मैंने किसी का नाम नहीं लिया है । मुझे दो मिनट सुन लें । माननीय अधिष्ठाता महोदय अम्बेडकर उद्यान में 100 करोड़ लगा दिया जिसकी कोई वित्तीय स्वीकृति नहीं थी, जिसकी कोई प्रशासनिक स्वीकृति नहीं थी, जिसकी कोई तकनीकी स्वीकृति नहीं थी । मन में आया, स्वप्न आ गया कि अम्बेदकर उद्यान पर 100 करोड़ खर्चा करने हैं और गरीब जनता की गाढ़ी कमाई को उद्यान पर खर्चा कर दिया । मैं दावे

---

नोट :–[x x x] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

के साथ कह सकता हूं हिन्दुस्तान के इस प्रदेश के अलावा कोई ऐसा प्रदेश नहीं होगा जहां बिना बजट में प्राविधान किए बिना विधायी स्वीकृति के, बिना वित्तीय स्वीकृति के 100 करोड़ रुपया उद्यान में लगा दिया। 25–25 करोड़ रुपया वित्त विभाग से बिना स्वीकृति के निकाला गया। पूरी कार्यपालिका पंगु हो गई। ऐसा कहीं नहीं देखा कि किसी राष्ट्रीय नेता किसी महापुरूष का अपमान करके, जहां इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान बनाया गया था, जिसकी 25 एकड़ जमीन थी जिसकी बाउन्ड्री वाल भी बन गई थी उसको अम्बेदकर उद्यान में मिला लिया गया उसके लिए रातोंरात इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान की जमीन कब्जा कर ली गई इससे घृणित कार्य और नहीं हो सकता है। मुख्य मंत्री जी जहां जाती थीं जिला बना देती थीं एक जिला बनाने में एक हजार करोड़ रुपया लगता है मुख्य मंत्री जी जहां खुश होती थी वहां जिला घोषित कर देती थीं। जिलों का नाम बदल देती थी, किसी संस्था का नाम बदल दिया, जिन महापुरूषों के नाम नहीं जानती थी उनकी मूर्तियां लगवा देती थीं, मेडिकल कालेज का नाम बदल दिया जैसे पूरे उत्तर प्रदेश की जागीर इनके नाम लिख गई हो, मैं चाहूंगा कि मुख्य मंत्री जी इन सारे निर्णयों पर विचार करें जो प्रदेश के हित में हों उन्हीं को लागू किया जाए। प्रदेश की जनता अपेक्षा करती है कि जो घोषणायें गन्ना के भुगतान के संबंध में, 14 घंटे बिजली देने के संबंध में हुई हैं, उस समय जब गन्ना किसानों ने कहा था कि गन्ने का भुगतान कर दिया जाए तो मायावती जी ने कहा था कि हमारा वोटर गन्ना नहीं बोता है इसलिए गन्ने से हमारा कोई वास्ता नहीं...(व्यवधान)

लोगों ने कहा बिजली नहीं मिलती है तो उन्होंने कहा हमारा वोटर बिजली नहीं लेता है हमारा वोटर उद्योग नहीं लगाता है। मान्यवर, उनका वोटर अनुदान और पट्टे लेता है। लेकिन बाकी जनता क्या करेगी, इस पर कोई ध्यान नहीं दिया ? गांव के गरीबों की दुहाई देकर केवल एक वर्ग विशेष के लिए सारे कानून-व्यवस्था को तिलांजलि दे दी जाए और मनमाने ढंग से सरकार को चलाने का काम किया जाए यह कौन सा न्याय है। पिछली सरकार में यह सब किया गया। उन काले कारनामों की चर्चा कहां तक की जाए ? पूरे प्रदेश में अपहरण और भ्रष्टाचार का साम्राज्य था, जिलाधिकारी यदि मुख्यमंत्री से मिलने के लिए आता था और 25 लाख से कम लेकर जाता था तो उसे भगा दिया जाता था। मान्यवर, यह स्थिति थी....

(बसपा के कई सदस्यों के एक साथ बोलने पर व्यवधान)

डा० अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, मैं माननीय सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं, नोयडा में जितनी भी रजिस्ट्री हुई हैं, 100 रुपये स्क्वायर मीटर के हिसाब से मुख्य मंत्री के लिए सीधे वसूला जाता था, इसमें जांच की आवश्यकता है। मान्यवर, जो विश्वास मत का प्रस्ताव लाया गया है, उसे सारी जनता का समर्थन प्राप्त है और मैं भी इस विश्वास मत के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। लेकिन जो सवा साल तक प्रदेश को लूटा गया, स्थापित परम्पराओं को तिलांजलि दी गयी है, उसको पटरी पर लाने और इस अवधि में हुए भ्रष्टाचार की जांच कराने की मैं इस सदन से मांग करता हूं। इसके साथ ही मैं पुनः सदन में रखे गये विश्वास मत के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

* श्री ओम प्रकाश (ओ०पी० सिंह)–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, आपका दिल से आभारी हूं। माननीय नेता सदन द्वारा रखे गये मंत्रि-परिषद के प्रति विश्वास के इस प्रस्ताव के विरोध में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मान्यवर, जो लोग छीटा-कशी कर रहे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं "रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जायें पर वचन न जायी", मान्यवर, यह बचन इन्होंने दिया था...

(सत्ता पक्ष की ओर से कई सदस्यों के बोलने पर व्यवधान)

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं, जो हमारे प्रेरणा के स्रोत हैं, कहा करते थे कि जन-आन्दोलनों की कोख से ही विधायक और सांसद पैदा होते हैं, कभी उनसे जनान्दोलन नहीं पैदा होता। कुछ लोग चले गये हैं लेकिन जन आन्दोलन अपनी जगह खड़ा है।

(सत्तापक्ष के कई सदस्य एक साथ बोलने लगे)

इन शब्दों के साथ मैं माननीय नेता सदन द्वारा रखे गये विश्वास मत के प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करता हूं।

श्री इकबाल महमूद–

मान्यवर, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। इस सदन के अन्दर धूम्रपान मना है लेकिन माननीय विधायक पान खा कर बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

(श्री राम स्वरूप सिंह, श्री राजेन्द्र सिंह राणा अपने स्थान पर खड़े हो गये माननीय अधिष्ठाता द्वारा श्री राजेन्द्र सिंह राणा को बोलने की अनुमति देने पर श्री राम स्वरूप सिंह अपने स्थान पर बैठ गये।)

श्री राजेन्द्र सिंह राणा–

मान्यवर, आपने मुझे माननीय नेता सदन के विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मान्यवर, लोकतंत्र के इस पावन मंदिर में मैं जब विधायक चुनकर आया तो मुझे आशा थी कि लोकतंत्र के इस पावन मंदिर में विधान सभा में हमें जनता की समस्याओं के बारे में अपनी बात बोलने का मौका मिलेगा लेकिन जब इस विधान सभा का गठन हुआ तो पता चला हमारी पार्टी हमें बोलने की इजाजत नहीं देती है। हम लोगों को बोलने का कोई अधिकार नहीं था। मान्यवर, मैं सदन के सामने बताना चाहता हूं कि हम लोग जिस बसपा में थे वह मायावती प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी थी। जो लोग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कि रघुकुल रीति सदा चली आयी। रोज पार्टी बदली रोज पार्टी बनायी। मान्यवर, आज प्रदेश के 70 जिलों के अंदर हाहाकार मचा है। यदि आप उनकी हालत देखेंगे तो शर्म से माननीय विधायकगण का सिर झुक जाएगा और शर्मसार आदमी शर्म से पानी में डूबकर मर जाएगा। इस विधान सभा में राजा भइया, अखिलेश सिंह, अतीक अहमद के ऊपर

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जो विभिन्न एक्ट लगाकर जेल भेजा गया है क्या ये लोग विधायक नहीं हैं । ब०स०पा० द्वारा इन लोगों ने एक साल से अंदर रासुका में बंद कराया । यह मुंह और मसूर की दाल मैं बताना चाहता हूं कि एक शेर और शेरनी की शादी हो रही थी चूहा बहुत नाच रहा था लोगों ने पूछा कि इतना क्यों नाच रहे हो तो वह बोला कि शादी से पहले मैं भी शेर था ? इसी तरह से बसपा ने भाजपा से शादी की, हनीमून मनाया और फिर आपके साथ टण्डन जी ऐसा विश्वासघात हुआ जैसा किसी के साथ नहीं हुआ । बहुजन समाज पार्टी ऐसी गाड़ी है जिसका इंजन पीछे जुड़ता है डिब्बे आगे जुड़ते हैं । न आँख है, न सुनती है बस चलती है । जो आगे आया उसे रेलमपेल कर देती है । प्रदेश के 70 जिलों का हाल देखें । केवल विधायक नहीं प्रदेश के जितने मंत्री थे, अधिकारी थे वह कुर्क अमीन का काम कर रहे थे ?प्रदेश को लूट खसोट रहे थे ।

हम लोग क्या कर रहे थे । बहुजन समाज पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी के साथ धोखा किया, समाजवादी पार्टी के साथ धोखा किया, काँग्रेस के साथ धोखा किया ब०स०पा० तो दलितों को समाज से काटने का काम किया । आपको चिंतन करना होगा, अपने गिरेबान में झाँककर देखना होगा कि कितना पाप हमने किया ?

(व्यवधान)

सहारनपुर में एक करोड़ का घपला खनन विभाग आई मैं हुआ । उसमें किसका हाथ था यह तो सबको मालूम ही होगा ? थानों की बोलियां लगती थी, तहसीलों की बोली लगती थी, तहसीलदरों की बोलियां लगती थी पटवारियों की बोली लगती थी, तो यह सब क्या था । इससे शर्मनाक क्या हो सकता था ? पांच अनुसूचित जातियों को जो नौकरी मिली थी तो उन्होंने अपने घर गिरवी रखकर पैसा दिया था तब जाकर उनको नौकरी मिली थी । ब०स०पा० को दलितों की बात करने ये अब शर्म आनी चाहिए ।

(व्यवधान)

मान्यवर, ग्रेटर नोयडा की बात आयी ग्रेटर नोयडा में पचास लोग धन उगाही का काम करते थे । मान्यवर, मैं इसी के साथ विश्वास मत का समर्थन करता हूं ।

श्री अम्बिका चौधरी–

माननीय अधिष्ठाता जी, जो भी आप सदन का समय आवंटित करेंगे और जो क्रम तय करेंगे सम्मानित सदस्य उसी क्रम से बोलेंगे । एक अनुरोध मैं करना चाहूंगा कि संख्या बल भी आप देख लें । और अगर यही क्रम चलता रहा कि विपक्ष के दो सदस्य और सत्ता पक्ष का एक सदस्य, तो एक समय स्थिति ऐसी आयेगी जब विपक्ष का कोई भी सदस्य नहीं रह जायेगा और सत्ता पक्ष के ही बोलेंगे । तो आपसे अनुरोध है कि यहां से दो तीन सदस्य को बोलने दें और तब प्रतिपक्ष का एक सदस्य बोलने दें ।

श्री अतीक अहमद–

माननीय अधिष्ठाता जी, आपने मुझे विश्वास मत प्रस्ताव पर बोलने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं । माननीय अधिष्ठाता जी, मैं बहुत लम्बा भाषण नहीं करना चाहता हूं लेकिन यह तय हो चुका है कि विश्वास मत का भारी बहुमत है । जहां तक विश्वास मत की बात है पूरे

प्रदेश का मत माननीय मुलायम सिंह जी के साथ है। जो दिक्कत हो रही है और जो चिन्ता की बात है वह यह है कि आज प्रदेश इस स्थिति में मिल रहा है, हालांकि हमारे नेता सदन बहुत अनुभवी हैं और हम लोगों का पूरा विश्वास है कि वह हर स्थिति से निपट लेंगे और कसौटी पर खरे उतरेंगे, वह गम्भीर चिन्ता की बात है। आज सारे लोग इस बात को जानते हैं कि प्रदेश को ऐसी जगह पर खड़ा कर दिया है कि जहां काम करने वाले हाथ बेकार हो गये हैं। आज ब्यूरोक्रेट का मनोबल गिर गया है, आज ब्यूरोक्रेट बाहर से लाये जायेंगे, माननीय नेता सदन को उन्हीं से कार्य चलाना है, इतने पाप हो चुके हैं कि अगर उनकी जांच पर ही इन्हें लगा दिया जाय तो काम करने वाले लोग नहीं मिलेंगे। मैं पांचवीं बार विधान सभा में आया हूं। अपने जीवन में मैंने इतना बड़ा समर्थन किसी सरकार के साथ नहीं देखा और इसीलिए आज सदन में कुछ बोलने का मन भी नहीं हो रहा है कि जिनके सब कारनामें हैं वहीं नहीं हैं, पलायन कर गए, जो बेचारे बैठे हैं उनके न आंख है, न कान है और न मूंह है, इसलिए कुछ बोलने का औचित्य भी नहीं रह जाता है। हम तो अपने सभी साथी विधायकों से कहेंगे कि सरकार चलाने के लिए हर स्तर पर उनको सहयोग देना पड़ेगा। माननीय लालजी टण्डन जी के सहयोग से सरकार चल रही थी आपने भी कुछ नहीं बताया और न ही बहुजन समाज पार्टी ने कुछ बताया अगर कुछ बताया गया तो सिर्फ यह बताया गया कि गुण्डे छूट गए हैं और वह सड़क पर आ गए हैं इसके अलावा कुछ नहीं बताया। लालजी वर्मा जी हों या अन्य कोई हो हम सिर्फ इतना कहना चाहेंगे कि लगातार प्रदेश की परिस्थितियां बदलती रहती हैं और बदलती रहेंगीं और दस साल पहले कौन सा भाषण किसने पढ़ा था, उसको नहीं दिखाना चाहिए, लेकिन वह पढ़ा गया, यह गलत हैं। इस सदन के अन्दर बड़े सम्मानजनक तरीके से हमने कहा था कि आपके साथी ही आपकी आंखों में आंसू लायेंगे, हमने ठीक ही कहा था और आज वही हो रहा है।

माननीय अधिष्ठाता महोदय इस प्रदेश की गरीब जनता चीत्कार कर उठी थी। इस सरकार को और किसी ने नहीं पलटा इस सरकार को पलटा है अदालत ने। मान्यवर, जेल में भर कर मेरे ऊपर दो सौ मुकदमें लगा दिए गए हैं। 504–506 जैसे मुकदमों में मुझे लखनऊ से गिरफ्तार कर लिया गया, कम से कम 20 गाड़ियां मुझे पकड़ने के लिए आयी थीं, बताईये कितना खर्च हुआ होगा, क्या मैं कहीं भाग जाता ? मान्यवर, जब पकड़ कर ले जा रहे थे तो रास्ते में ही धाराएं बनना शुरू हो गयीं, रास्ते में ही गैंगेस्टर एक्ट भी लगा दिया गया, धारा–504 और 506 में बताईये शान्ति भंग हो रही थी ? न जाने कितने मुकदमे लगाये गये, जिनकी कोई तादात ही नहीं है। एक बात बड़ी मजबूती से यहां कही गयी है। आज पूरा प्रदेश सुन रहा है आज मीडिया के साथी भी यहां हैं यह सरकार जो गई है, यह संदेश देना चाहते हैं कि गुण्डे सड़क पर आ गए हैं, जिनको जनता ने चुन कर भेजा। मन्दिर, मण्डल और तमाम तरह के जातीय समीकरणों को देखते हुए लोग यहां पर आते हैं। माननीय रघुराज प्रताप सिंह, यहां बैठे हुए हैं। इन्होंने पाप किया था, लेकिन मेरे बूढ़े बाप जिनकी उम्र 85 साल है उनको तीन बार जेल में डाल दिया गया। हम पर क्या बीती होगी ? मैं उस जेल के अन्दर अपने बाप का सामना नहीं कर सका।

माननीय मौर्या जी आपको शर्म नहीं आती है यह कहते हुए कि कानून अपना काम कर रहा है।

(घोर व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

कृपया जल्दी समाप्त करें।

श्री अतीक अहमद–

जो गलती करेगा वह जेल में जायेगा। मैं गया, रघुराज प्रताप जी गये लेकिन मेरे बाप-दादा ने क्या गलती की थी। 250 लोग जेल में बन्द किए गये। रघुराज के पिता जी भी जेल भेज दिए गये। कहा गया कि मुकदमें पुराने थे मुलायम सिंह जी और कल्याण सिंह जी के जमाने के थे। मान्यवर, हमारे पास लिखित में मौजूद है क्राइम नम्बर मौजूद है। मुझे गिरफ्तार करने के बाद मेरे ऊपर 182 मुकदमें दर्ज किए गये। अभी कहा गया कि सरकार बनते ही गुण्डे सड़कों पर टहलना शुरू हो गये हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जब शपथ ली उससे एक दिन पहले एडवाइजरी से एन०एस०ए० विघटित हुआ। सुप्रीम कोर्ट ने मोहर लगाई है, नोटिस जारी किया, पर्सनल नाम से उन्हें नोटिस दी गयी है। सुप्रीम कोर्ट की नोटिस मेरे पास आयी थी कि आप मायावती जी का पर्सनल एडरेस बता दें क्योंकि मैंने मुख्यमंत्री जी को पार्टी बनाया था नाम से। मैं इलाहाबाद में मीटिंग कर रहा था कि मुझे नोटिस मिली कि आप मायावती जी का लखनऊ का एडरेस बता दें। अब अगर वह बिल में भी घुस जाए तो भी सुप्रीम कोर्ट और सी०बी०आई० से बचने वाली नहीं हैं।

मान्यवर, सरकार गिरी मुझे खुशी नहीं हुई, सरकार बनी, मुझे खुशी नहीं हुई। अब तो मुझे किसी गम में भी गम नहीं होता। मैं उस दिन लेटा हुआ था जब समाचार से पता चला कि उनकी सम्पत्ति की भी जांच होगी। अब मान्यवर, हाए ये पैसा अजगर हो जायेगा। पाप हो जायेगा। हमें कोई ताज्जुब नहीं होगा कि यदि कुछ दिन बाद धुँआ निकलता दिखे नोटों के जलने का, जेवर के जलने का।

मान्यवर, यह कहा जा रहा है कि मुझे सरकार ने छोड़ दिया। आज पूरा प्रदेश सुन रहा है जो यह सरकार पर लांछन लगाया जा रहा है। हां सरकार ने एक काम जरूर किया एन०एस०ए० जब हटा तो अब अगर पुरानी सरकार होती तो दो मुकदमें और लग जाते, सरकार बदली तो इन्साफ मिला। मुकदमें फर्जी नहीं लगे और जमानत हो गई।

मान्यवर, सरकार बदलने से अन्याय बन्द हुआ है आज हमारे तमाम साथी जेलों से बाहर निकले हैं। मान्यवर, होता क्या था, पांचवें तल पर बैठ कर अधिकारी मानीटरिंग किया करते थे कि कितने मुकदमें में जमानत हो चुकी है और कितने मुकदमें लगाये जांए। मौर्या जी मैं तो जेल में था हमारे दो विधायक थे उनसे कह दिया गया कि बात करेंगे उसके बाद डरा-धमका कर सीधे भेज दिया गया बहन जी के पास और वहां बुला लिया अखबार वालों को और उन्हें बता दिया कि इन्होंने बहुजन समाज पार्टी ज्वाइन कर ली है। वह पहली मर्तबा जीत कर आये थे धोखा खा गये और अखबार में छप गया कि उन्होंने बहुजन समाज पार्टी ज्वाइन कर ली। अधिष्ठाता महोदय, हम आपके माध्यम से प्रदेश की पूरी जनता को एक बात जरूर कहना चाहते हैं कि बहुत बड़ी आशा लोग लगाये हुए हैं, बहुत बड़ी संख्या में लोग जुट गये हैं। हम तो कहेंगे अपने नेता माननीय मुलायम सिंह यादव जी से कि उन्हें ताज भी मिला है तो कांटों भरा मिला है। उनसे बहुत सी आशायें और अपेक्षायें हैं इसलिए इस मंत्रिमण्डल में, इस सरकार में अपना विश्वास व्यक्त करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

* श्री जगदम्बिका पाल–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने नेता सदन और माननीय मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी द्वारा मंत्रि परिषद् में विश्वास मत के लिए प्रस्तुत प्रस्ताव पर बोलने का अवसर दिया । मैं बैठकर बहुत देर से अपने तमाम सम्मानित साथियों की बात सुन रहा था । आप भी इस सदन में काफी लम्बे समय से प्रतिनिधित्व कर रहे हैं । कदाचित् इस सदन में बहुत महान-महान परम्परायें बनी हैं । उत्तर प्रदेश सदन की परम्परायें, उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा स्थापित की गयी परम्पराओं को न केवल उत्तर प्रदेश में बल्कि देश के अन्य राज्यों के लिए इस सदन के निर्णय, इस सदन की परम्परायें, इस सदन की मर्यादायें दूसरे राज्यों के सदन के लिए, सरकारों के लिए मार्ग दर्शन का काम करती हैं । यह कदाचित् पहला अवसर होगा जब किसी सदन में विश्वास मत पर इस तरह से हमारे सम्मानित विधायक जो चुने हुए जनप्रतिनिधि हैं वह पिछली सरकार मैं अपनी आप बीती का बयान कर रहे हैं । इससे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात और नहीं हो सकती । आप इस सदन के साक्षी हैं । माननीय लालजी टण्डन जी बैठे हैं । मौर्या जी ने एक वकील की तरह से एक कमजोर केस को मजबूती के साथ रखने का प्रयास किया है । मैं यह कह सकता हूं कि इस सदन में सत्तापक्ष या प्रतिपक्ष को किसी स्थिति पर कभी कोई उत्पीड़न की कार्यवाही प्रशासन के द्वारा हो गयी होगी तो यह सदन इस बात का गवाह रहा होगा कि इस सदन में उन तमाम राजनीतिक विचारधाराओं से ऊपर उठकर, उस सदस्य के लिए सम्पूर्ण सदन एकजुट हुआ होगा और सम्पूर्ण सदन में उस उत्पीड़न के खिलाफ एक आवाज उठी होगी । आज इस सदन में माननीय मुलायम सिंह यादव के विश्वास मत पर जब तमाम सम्मानित सदस्य खड़े हो रहे हैं तो किस तरह से मुकदमें पर आप बीती की कहानियां सुना रहे हैं । मैं समझता हूं कि कई दिन लग जायेगें अगर सभी लोग आप बीती बतायेंगे । मुझे तो चिन्ता इस बात की है कि पिछले 15 माह में उत्तर प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के गठबन्धन की सरकार में जो परम्परायें टूटी हैं, जो सदन की मार्यादा टूटी है, जो सरकार को उस समय जिस तरह से संविधान में अपने उत्तरदायित्व का पालन करना था, जो विधि सम्मत कानून चलाना था, जो परम्परायें टूटी, संविधान की धज्जियां उड़ायी गयीं, जो कानून का उल्लंघन हुआ है उसका उल्लेख करना चाहता हूं । हमारे मौर्या जी बात कर रहे थे, इसी सदन के सदस्य हैं, दल के नेता हैं उन्हें याद नहीं है कि इसी सदन में जहां परम्परा यह रही है कि नेता सदन जब आये तो शिष्टाचार निभाया गया, लालजी टण्डन जी आपने इस परम्परा को नहीं तोड़ा आपकी नेता ने उस परम्परा को तोड़ा । सदन में आना उन्होंने बन्द कर दिया अगर सदन के प्रति आस्था न हो और कर्तव्य का निर्वहन न हो तो प्रदेश की 17 करोड़ जनता की प्राथमिकताओं के साथ क्या चर्चा करते । यह सदन केवल मंत्रियों से चलता रहा और 9 महीने में केवल 5 दिन चला । इतिहास साक्षी है कि नेता विरोधी दल मो० आजम साहब को एक लब्ज भी नहीं बोलने दिया गया था तथा मतदान भी नहीं हुआ, फिर भी आप परम्परा टूटने की बात करते हैं । प्रदेश की मुख्य मंत्री दलितों की बात करती थी गरीबों की बात करती थीं । मुख्य मंत्री बनने के बाद उन्होंने कहा कि जनता दरबार नहीं लगेगा । किसी व्यक्ति को यदि शासन-प्रशासन से न्याय नहीं मिला तो वह मंत्री के पास जाता है और उसके बाद मुख्य मंत्री के पास जाता है । यह सब समाप्त हो गया । कन्टीजेन्सी से विवेकाधीन कोष से तमाम बहुजन

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

समाज पार्टी के कार्यालयों के लिए पैसा मिल सकता था लेकिन कोई गरीब दलित भी यदि मर रहा है तो उसके लिए अस्पताल में पैसा नहीं मिल सकता था । आज उत्तर प्रदेश में बदले की भावना की बात की जा रही है । हमारी सरकार बदले की भावना से काम नहीं करती है यह सभी सहयोगी दलों की सरकार है, यह मौर्या जी की भी सरकार है और आप बदले की भावना की बात करते हैं । आप अपने कुकर्मों पर पर्दा डालने की बात करते हैं । आपकी सरकार में एक दिन में 150 मुकदमें दर्ज किये गये यह इतिहास की बात है । आप कहते हैं कि आपकी सरकार में बदले की भावना से कार्रवाई नहीं हुई, जय प्रकाश यादव आपकी पार्टी से चुने गये थे उन्होंने केवल एक बयान दे दिया, जिनके ऊपर जीवन में कभी 107 तक का मुकदमा नहीं चला, वह अच्छे व्यवसायी थे, प्रतिष्ठित व्यक्ति थे आपकी सरकार ने गुण्डा ऐक्ट में बन्द कर दिया । इसके पहले यदि उनके ऊपर एक भी 107 का मुकदमा होता तो मैं विधान सभा से इस्तीफा देकर चला जाता । जिस तरह से आपने उत्तर प्रदेश में जनप्रतिनिधियों के ऊपर पोटा कानून का दुरुपयोग किया उसकी कोई मिसाल नहीं मिलेगी । जिस समय यह कानून पास हो रहा था उस समय भी लोगों ने इसका विरोध किया था कि इसका दुरुपयोग किया जायेगा और सबसे पहले यदि कहीं इसका दुरुपयोग हुआ तो आपकी नेता के द्वारा इसका दुरुपयोग किया गया । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर आपने कुठाराघात किया प्रदेश में जिस विधायक ने आपके विरोध में बोल दिया वह ठीक से घर भी नहीं पहुंच पाया । जिस तरह से अधिकारियों को निलम्बित किया गया, आई०ए०एस०, आई०पी०एस० अधिकारियों को निलम्बित किया गया और उन्हें अपमानित किया गया । आपने जो किया वह गठबन्धन का धर्म नहीं है, धोखे से कह दिया कि हम विधान सभा को भंग करने की सिफारिश करते हैं । एक बार आपने धोखा खाया मैं तो कहता हूं कि जो एक बार धोखा खा ले वह दुबारा उस पर विश्वास नहीं करता । लेकिन जो दो बार धोखा खाया हो, उस व्यक्ति को मूर्ख कहा जाता है और जो तीसरी बार भी धोखा खाया हो उसे मूर्ख नहीं महामूर्ख की श्रेणी में रखा जायेगा । यह दुर्भाग्य है कि उत्तर प्रदेश की जनता को इतने दिन यह दुर्दिन देखने पड़े । आज जिन मतदाताओं के वोट के आधार पर अटल बिहारी जी प्रधानमंत्री बने हैं, आज जिन मतदाताओं के वोट पर आप सरकार में थे, आप उनको कैसे मुंह दिखायेंगे । अगर कदाचित बुलन्दशहर में किसी एक दरोगा से मायावती के पिताजी के साथ कहा सुनी हो गयी, मैं नहीं जानता कि गलती दरोगा की थी या इनके पिताजी की थी, गलती किसी की भी हो, मान लो दरोगा की ही थी तो उस दरोगा को निलम्बित किया जा सकता था, लेकिन यह क्या कि उस जिले में जितने ठाकुर दरोगा थे, जितने जाट दरोगा थे, सबको हटा दिया गया । मैं कभी भी इतने कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करता, लेकिन पूरे उत्तर प्रदेश में जिस तरह से मायावती जी ने जातिवादी परम्पराओं को बढ़ाने का काम किया, जिस प्रकार जाति के आधार पर लोगों को प्रताड़ित किया, उसके बारे में बताना चाहता हूं । किसी जाति विशेष के आधार पर पूरे प्रदेश में किसी दरोगा को, किसी आई०जी० को प्रताड़ित किया जायेगा ऐसा कभी देखा नहीं गया । माननीय टण्डन जी, आपको पूरे 10 वर्षों से इस शहर की जनता ने वोट दिया है, लेकिन आपने उनके विश्वास को, आस्था को भी मायावती के चरणों में गिरवी रख दिया, आप किस तरह अपनी जनता को मुंह दिखायेंगे । आप आज कहते हैं कि विधायकों की पीड़ा थी, ठाकुर विधायकों की पीड़ा थी, बहुजन समाज पार्टी के ठाकुर विधायकों की पीड़ा थी, लगातार 15 महीने तक अन्याय होता रहा और आप चुप बैठकर सब देखते रहे । आज जनता को इस कुशासन से आजादी मिली है ।

(सत्ता पक्ष और विपक्ष की ओर से टोकाटाकी पर व्यवधान)

आदरणीय लालजी वर्मा यहां बैठे हैं, आदरणीय स्वामी प्रसाद मौर्य जी बैठे हैं, किस मुंह से आप कह रहे हो कि उत्तर प्रदेश में कानून का राज नहीं है, किस मुंह से कह रहे हो कि गुन्डों का राज आ गया है । आपकी भारतीय जनता पार्टी के मेयर इसी शहर के डा० एस०सी० राय ने बयान दिया है कि आज पहली बार कोई मुख्य मंत्री ऐसा मिला, मुलायम सिंह यादव, जिन्होंने पूरा सम्मान दिया और मैं लखनऊ की जनता की ओर से उनका लखनऊ महापालिका में अभिनन्दन करूंगा । उन्होंने यहां तक कहा कि माननीय मुलायम सिंह यादव जी मुझे मोटर तक छोड़ने आये, यह है हमारा आचरण । लेकिन आप उस पार्टी के विधायक हैं, जिसकी मुख्य मंत्री महीनों तक मिलती नहीं थीं । मोती सिंह जी यहां बैठे हैं, वह बता दें, कभी उनको मुख्य मंत्री जी ने बैठने तक को नहीं कहा होगा । अगर कभी किसी विधायक से बैठने को कह दिया हो तो मैं अपने शब्द वापस ले लूंगा । क्या जन प्रतिनिधि किसी की व्यक्तिगत जागीर है, मैं आपके दल की बात कह रहा हूं । यह कोई जगदम्बिका पाल की टिप्पणी नहीं है, समाजवादी पार्टी की टिप्पणी नहीं है, कांग्रेस की टिप्पणी नहीं है, लोकदल की टिप्पणी नहीं है बल्कि यह टिप्पणी जस्टिस विष्णुकान्त सहाय की है । यह टिप्पणी उन्होंने उस दिन की थी, जब माननीय मुलायम सिंह यादव जी के ऊपर एक दिन में 150 मुकदमें दर्ज कराये गये थे । उन्होंने यह भी कहा था कि क्या इस प्रदेश में कानून का राज नहीं है, इस प्रदेश में पूरा जंगल राज हो गया है । उनसे कहा गया कि आपका यह आब्जरवेशन समाचार-पत्रों में जायेगा तो जिस तरह विष्णु कान्त सहाय ने कहा कि मैं यह टिप्पणी इसलिए कर रहा हूं कि यह पूरे प्रदेश में सार्वजनिक हो और समाचार-पत्रों में छपे । अगर आपमें शर्म होती तो चुल्लू भर पानी में डूब मरते यह शर्म की बात करते हैं ।

श्री अधिष्ठाता–

पाल साहब अब समाप्त करिये ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मान्यवर, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से अगर कोई सदस्य बोलने के लिए नाम देता तो उसे आप समय देते, वह समय जगदम्बिका पाल जी को दे दीजिए ।

श्री अधिष्ठाता–

माननीय तिवारी जी, मुख्य मंत्री जी को 5.00 बजे बोलना है और अब आधे घण्टे का समय शेष है । अभी कुछ दलों के नेता बचे हैं उन्हें भी बुलवाना है ।

श्री जगदम्बिका पाल –

मान्यवर, आप सोशलिस्ट पार्टी में रहे हैं, सोशलिस्ट पार्टी में हमेशा आन्दोलन करते थे ।

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है जब मौर्या जी बोल रहे थे तब यह अनुरोध किया था कि हमारे पार्टी के और दूसरे माननीय सदस्यों का समय मौर्या जी को दे दीजिए तब पीठ से अनुरोध को स्वीकार नहीं किया गया था ।

श्री अधिष्ठाता–

पाल जी, अब आसन ग्रहण करिये ।

श्री जगदम्बिका पाल–

मान्यवर, हमारी संविधान में आस्था है, संसदीय परम्पराओं में आस्था है तथा सामाजिक मान्यताओं के प्रति हम प्रतिबद्धता से काम करते हैं । ये संसदीय परम्पराओं की बात करते हैं । एक और बात कहना चाहता हूं कि माननीय मुलायम सिंह जी के भतीजे की डेथ हो गयी और अगर कोई वहां चला गया तो उसे निलम्बित कर दिया गया । पूर्व मुख्य मंत्री अगर किसी जनपद में जाता है तो सामान्य शिष्टाचार के नाते कलेक्टर, एस०पी० उससे मिलता है, इसमें कोई दिक्कत नहीं है लेकिन भूतपूर्व मुख्य मंत्री जी के कार्यकाल में अगर कोई पूर्व मुख्य मंत्री किसी जनपद में चला गया तो एक सामान्य शिष्टाचार का भी पालन नहीं किया गया । यह सदन गवाह है आजम खाँ साहब नेता प्रतिपक्ष थे, उनको एक मकान इनकी सरकार ने नहीं दिया, यह इनके सरकार की नैतिकता थी । नेता प्रतिपक्ष का संविधान में नेता सदन के बाद सबसे बड़ा दर्जा होता है । लालजी टण्डन जी फिर भी चुप रहे । मैं टण्डन जी का बहुत सम्मान करता हूं लेकिन कहना चाहता हूं कि जिस तरह से आप देखते रहे वह उचित नहीं था । मान्यवर, अगर कोई विधान सभा के लिए एक बार चुना गया है तो जब तक वह राज्य सभा या लोक सभा में नहीं चुना जाता है तब तक पाव टू रिकाल नहीं होना चाहिए । सुश्री मायावती जी ने तो विधान सभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर इस गौरवशाली सदन का अपमान किया है क्योंकि कोई जनप्रतिनिधि 5 साल के लिए चुना जाता है और वह तब तक अपने पद से इस्तीफा नहीं देता है जब तक वह लोक सभा या राज्य सभा में न चुन लिया जाय । आज वह सदन में नहीं आ रही हैं जबकि वह न लोक सभा की सदस्य हैं, न राज्य सभा की सदस्य हैं । मान्यवर, अम्बेडकर मैदान बन रहा था तो कोई उनकी जागीर नहीं थी । अम्बेडकर मैदान में सारा पैसा जनता की गाढ़ी कमाई का लगा लेकिन वह अम्बेडकर मैदान और किसी को नहीं दिया गया । मैंने अम्बेडकर मैदान बाबा जय गुरूदेव के लिए मांगा था यहां के कलेक्टर से कहा कि अम्बेडकर मैदान को दे दें, वहां पर बाबा जय गुरूदेव का समागम होना था, अम्बेडकर मैदान पर जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा लगा है लेकिन उसको एलाट नहीं किया गया ।

मान्यवर, सचिवालय के अगल बगल सारे मंत्रियों के मकान बने हैं । मैं मुख्य मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि अगर बहुजन समाज पार्टी के कार्यालय पर कंटीजेंसी से पैसा खर्च हुआ है तो निश्चित तौर पर उस बंगले को खाली कराया जाय । मान्यवर, मैं टण्डन जी से कहना चाहता हूं कि यह एक गठबन्धन की शुरूआत है । हम आपको सिखायेंगे कि कैसे कोयलीशन की राजनीति होती है । आपकी भा०ज०पा० तथा ब०स०पा० की जब सरकार थी तो आपका संवाद अखबारों के जरिये होता था । हम लोग आपस में संवाद करेंगे और यह सरकार 3 साल 9 महीने चलेगी । मान्यवर, इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के सम्बन्ध में मैं

कहना चाहता हूं । दुनिया में इंदिरा जी से बड़ा नेता और कोई नहीं होगा जिन्होंने दुनियां का भूगोल बदल दिया और बंगला देश का उदय हुआ । लेकिन इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान की भूमि पर कब्जा किया गया । माननीय उच्च न्यायालय ने निर्णय किया है कि आप प्रतिष्ठान को जमीन देकर उसको बनाने का काम करिये । मान्यवर, इन्हीं शब्दों के साथ मैं विश्वास मत का समर्थन करता हूं ।

* डा० राधा मोहनदास अग्रवाल–

मान्यवर, आपने माननीय पाल साहब को 23 मिनट का समय दिया है । मैं विश्वास करता हूं कि उतना ही समय मुझे देंगे । मान्यवर, माननीय नेता सदन द्वारा प्रस्तुत विश्वासमत के प्रस्ताव का मैं विरोध करने के लिये मैं खड़ा हुआ हूं । मैं आपकी दो बातों की प्रशंसा करता हूं । पहली बात तो यह है कि पहली बार कोई मुख्य मंत्री सदन के वेल में घूमा और हर विधायक से मिला । दूसरी बात यह है कि आप पहले मुख्य मंत्री हैं जो लगातार सुबह से लेकर अभी तक इस बहस में मौजूद हैं । मुझे विश्वास है कि यह परम्परा आगे भी जारी रखेंगे और यह केवल आज की बात नहीं रहेगी । अधिष्ठाता महोदय यहां पर डाक्टर लोहिया की बात हुयी है इसलिये उनके बारे में मैं 2 बातें कहना चाहता हूं । सदन में लोहिया जी ने कहा था कि इस देश का मजदूर रोज 12 आने कमाता है । कर्मचारी, 2 रुपया कमाता है और देश का सबसे बड़ा औद्योगिक घराना 30 हजार रुपये रोज कमाता है लेकिन प्रधानमंत्री जी पर रोज 30 हजार रुपया व्यय होता है । तो आप यह बता दें कि इस प्रदेश के मुख्य मंत्री पर रोज कितना व्यय होगा । आप लोहिया जी के शिष्य रहे हैं आप इसको बतायेंगे । मान्यवर, दूसरी चीज डाक्टर लोहिया जी ने सदन में कहा था, तत्कालीन प्रधानमंत्री जी के ऊपर आरोप लगाते हुये कहा था कि जातिवाद और परिवार वाद को कहीं चस्पा करना है तो मैं उसे प्रधानमंत्री पर चस्पा करूंगा । मान्यवर, इस प्रदेश के 6 मुख्य मंत्रियों की सूची हैं, उनके नाम बता दें ताकि पता चले कि परिवार वाद कहां से शुरू होता है और कहां खत्म होता है ? आपने कुछ घोषणायें की हैं । एक बात आपने कही कि छात्रसंघ के चुनाव होंगे । कानपुर आप गये थे, ''राष्ट्रीय सहारा'' में छपा है कि कोई छात्र पढ़ता न हो, अगर वह छात्रसंघ का सदस्य होगा तो चुनाव लड़ने का अधिकारी होगा ।

यह सदन यह जानना चाहता है कि इसका क्या मतलब है ? क्योंकि संविधान यह कहता है कि एक बार भी व्यक्ति छात्रसंघ का पदाधिकारी हो जाए तो वह आजीवन छात्रसंघ का सदस्य हो जाता है । इसका मतलब एक बार कोई छात्र संघ का पदाधिकारी हो जाए तो वह विश्वविद्यालय में पढ़े या न पढ़े उसे चुनाव लड़ने का अधिकार दिया जाएगा । हम लोगों ने छात्र संघ के चुनाव रोकने का काम नहीं किया । इस देश में सबसे पहले छात्रसंघ को भंग करने का काम चौधरी चरण सिंह की सरकार ने किया था । यह एक तथ्य है इसे जानना चाहिए । आपने अस्पतालों से शुल्क हटा दिया था कम कर दिया लेकिन प्रश्न यह है कि आपने यह जानने की कोशिश की कि गोरखपुर मेडिकल कालेज में इन्सेफलाइटिस के मरीजों को बेड नहीं मिला, बेड मिला तो दवा नहीं मिली उनकी हालत आप जानते हैं । उनको आप क्या सुविधा देते हैं । इसको आपको बताना चाहिए था कि जो गरीब अस्पतालों में भर्ती होंगे उनको यह-यह सुविधा देंगे । पिछले सात दिनों में गोरखपुर में 7 मरीज डायरिया के कारण मर गए । इसमें पांच-पांच

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

साल के बच्चों से लेकर औरतें तक शामिल हैं । आप विश्वविद्यालय में प्रवेश शुल्क घटा देंगे और उसे जून, 95 तक ले जाने की बात करेंगे आप जून, 90 तक उसे ले जाएं लेकिन यह भी तो देखें कि लखनऊ कानपुर, काशी विद्यापीठ और गोरखपुर यूनीवर्सिटी को छोड़कर ऐसी कितनी यूनीवर्सिटी को ग्रान्ट देते हैं ? आप ग्रान्ट देते नहीं फीस कम करेंगे, तो कैसे विश्वविद्यालय चल पाएंगे कैसे टीचर को फीस मिलेगी, कैसे छात्रों के लिए कुर्सी की व्यवस्था होगी इसकी भी घोषणा करनी चाहिए थी ? यह सरकार इस बात की घोषणा करती कि विश्वविद्यालयों में जाने वाला कोई भी छात्र बिना कुर्सी के नहीं बैठेगा तब कोई बात होती । किसानों को 14 घंटे बिजली देने की बात आपने कहीं मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं आप कहां से बिजली लाएंगे ? आनपरा व परीक्षा की बात की गई है कि कहां पर विद्युत उत्पादन होगा उससे बिजली दी जाएगी यह सब 2006 के पहले बिजली उत्पादित नहीं कर पाएंगी ? पाल जी ने पहले कहा था कि बिजली हम नहीं खरीदेंगे और जो सरकार बिजली खरीदती है वह इस प्रदेश के विकास में अवरोध पैदा करती है । इस बात से मैं सहमत होते हुए इस विश्वास मत के प्रस्ताव का विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

*श्री राम स्वरूप सिंह–

अधिष्ठाता महोदय, नेता सदन ने जो विश्वास मत प्रस्ताव पेश किया है मैं उसका समर्थन करता हूं । विपक्ष के लोग बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे आप पिछले 8 साल से सत्ता में हैं आपने क्या किया ? उसके बारे में कुछ बताने की कृपा नहीं की । यह नहीं बताया कि हमने शिक्षा पर खर्च में कितने प्रतिशत की वृद्धि की । स्वास्थ्य पर कितना प्रतिशत खर्च किया व कितनी वृद्धि की । प्राइमरी स्कूलों में 300–500 छात्र हैं लेकिन एक भी अध्यापक नहीं हैं । यह दलितों के मसीहा बनते हैं । दलितों के नाम को इन्होंने कलंकित करने का काम किया है । और दलितों के साथ जितना अत्याचार इस सरकार में हुआ भारत वर्ष के इतिहास में उत्तर प्रदेश के किसी भी मुख्य मंत्री के काल में नहीं हुआ । शर्म आनी चाहिए इनको । यह कैसा गठबन्धन है टण्डन जी बैठे हैं और इनकी बहिन जी गायब हैं । इन्होंने अपनी बहिन को क्या सिखाया ? तानाशाह, जालिम और साम्प्रदायिक बनाया । यही सिखाया है इन्होंने अपनी बहिन को । तानाशाह बन गई । मैं तो यह मान लेता हूं कि डा० अम्बेडकर और डा० हेडगेवार की फोटो एक जगह रख दो कि दोनों एक ही बाप की औलाद हैं । दोनों के सपने क्या थे ? उसूल क्या थे ? इन लोगों ने दलितों के मसीहा होने का नाम लेकर उनके साथ खिलवाड़ किया । एक देश को तोड़ना चाहते थे कि हिन्दुस्तान को पाकिस्तान बना दिया जाय । तीन हिस्से हिन्दुस्तान के कर दिये जायं ? मैं कहना चाहता हूं कि इनका इतिहास क्या था ? इनका प्रोग्राम क्या था ? राष्ट्रीय आन्दोलन में इनका क्या योगदान था ? मैं जानता हूं और इस प्रदेश की जनता को बताना चाहता हूं कि यह इस देश के टुकड़े करना चाहते थे । मैं ज्यादा न कहते हुए इतना कहना चाहता हूं आपका सफाया चुनाव के बाद होने जा रहा है । पता नहीं लगेगा आपका, इस प्रदेश और देश के अन्दर । आप कुछ सीखिये, कुछ समझिये इन्सानियत और मानवता । मौर्या साहब आपकी सरकार थी आपने गरीबों को दलितों को पट्टे नहीं दिये और उनकी जमीन आप लोगों ने ले ली । आप बतायेंगे कि आपके पास पहले कितनी सम्पत्ति थी और बाद में कितनी हो गयी ? कहीं कोई लेखा जोखा देंगे । हमारी सम्पत्ति की जांच करवायें क्या आप ऐसा लिखकर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मुख्यमंत्री जी को देंगे । ज्यादा न कहते हुए मैं इन्हीं बातों के साथ माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विश्वास के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

* श्रीमती गुलाब देवी–

मान्यवर, मैं केवल इतना जानना चाहता हूं कि इन महोदय को मालूम है कि इनके बाप कौन हैं, यह तो मां का आश्वासन होता है कि वह किसका...

श्री अधिष्ठाता–

आप बैठ जायं । मैंने आज़म खां साहब को बुला लिया है ।

*मंत्री (श्री मोहम्मद आज़म खां)–

अधिष्ठाता महोदय, मैं नेता सदन द्वारा रखे गये प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं ।

हकीकत कह रहा हूं खुशबयानी मत समझ लेना

बहारें लौट आयेंगी बना दो बागवां मुझको ।

आज बागवां बदला है बहारों के लौटने का यकीन है और उसकी शुरूआत हुई है । मैं नेता विरोधी दल के तौर पर जब सदन में दाखिल हुआ तो मैंने नेता सदन का आचरण देखा । एक तो शर्मायी हुई निगाह होती है, जो किसी से नहीं मिलती । एक निगाह मुज़रिम की होती है, तो किसी से नहीं मिलती । उस वक्त के नेता सदन की निगाह मुज़रिम की थी न नेता विरोधी दल से मिली थी और न किसी सदस्य से । सारी परम्पराओं का कत्ल हुआ था ।

(इस समय 4 बजकर 50 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए)

सारे अखलाक दम तोड़ गए विधान सभा के अन्दर, पहले इतना आभास हो गया था कि इस सरकार के पास कोई जर्फ नाम की चीज नहीं है । याद होगा इस सदन में मैंने कहा था सत्ता चलाने वालों, ज़मीन वालों पर रहम करो, इंसाफ करो इनके साथ, क्योंकि कुदरत का निजाम यह है जब जमीन पर इंसाफ नहीं होता है तो इंसाफ आसमान से होता है और जब इंसाफ आसमान से होता है तो इसी तरह से होता है । करोड़ों लोग दुखी हैं हजारों परिवार ऐसे हैं इस महिला के प्रकोप से, उसके जुल्म से, उसकी नाइंसाफी का निशाना हुए हैं । क्योंकि बहुत बड़ी भागीदारी साथियों की नही है यह आसमान वाले का इंसाफ है...(मेजें थपथपाई गई) और उस जुल्म का इंतकाम है जो जुर्म हुआ है उसका अंजाम आज सदन का बदला हुआ माहौल है । बदले हुए माहौल ने साबित कर दिया है कि कोई ऊँचाई से गन्दे नाले का पानी गिरता है तो बड़ा शोर होता है गन्दा नाला समझता है कि मेरी ऊँचाई से गिरने का शोर है । जब कि महान समन्दर जब बहता है तो बहुत खामोशी के साथ बहता है, शायद पहली बार तो लोकतांत्रिक परम्पराओं को उठाने की बात इस सदन में हुई, जो बहते हुए खामोश समन्दर की तरह है और एक दलित महिला गन्दे नाले के गिरते हुए शोर की तरह थी । एक महिला ने अपने को दलित महिला कहकर, दलित की बेटी कहलाकर, असत्य बोलकर, बदले की भावना से, व्यक्ति–व्यक्ति को तोड़कर एक ऐसा प्रदेश, ऐसा दुखी प्रदेश बना दिया जिसकी हाय आसमान से जाकर टकराई और माहौल

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बदल गया । मैं मज़हब को मानने वाला रहा हूं इंशाअल्ला कोई ऐसे लोग हों जो ईश्वर में, अल्लाह में, महजब में, ईमान रखते हों । जब दिल से निकली हुई आह आसमान से टकराएगी, वह जब तक टकराएगी जब तक वह इंसाफ नहीं करेगा, यह वह आहें हैं, उन परिवारवालों की आहें हैं जिनका पुलिस के हाथों से कत्ल हुआ । यह उनके खानदान की आहें हैं जिनको, दलित की बेटी ने, मेहनतकश किसान का रुपया इसलिए बरवाद कर दिया कि उसके नाम पर सड़क बननी थी उसके नाम का पत्थर लगता था ताकि वह जहांपनाह के नाम से जानी जाएं लेकिन इस तरह से कोई जहांपनाह के नाम से नहीं जाना जाता जहांपनाह तो शाहजहां था जिसने ताजमहल बनवाया था । ताजमहल दुनिया का अजूबा है–

"मोहब्बत के लिए कुछ ख़ास दिल मखसूस होते हैं,
ये वो नग्मा है जो हर साज़ पर गाया नहीं जाता ।।"

किसी एक से मोहब्बत हो जाए काफी नहीं है रोज-रोज दिल बदलने वाले व्यक्ति बैठे हैं । मान्यवर, जिसके पेट में रोटी नहीं है, पहनने के लिए कपड़ा नहीं है, दुखी है, दरिद्र है हजारों साल से, मैंने जहां टण्डन जी बैठे हैं वहीं से कहा था कि अभी भी समय है, मैंने अपने भाषण में कहा था नेता सदन से, अभी भी समय है जो सैकड़ों हजारों साल के सताये लोग हैं वह गलत ढंग से सरकार चला रहे हैं इनको किसी और के साथ होना चाहिए । इन्होंने सोचा कि ऐसे ही एक साथ चलेंगे तो लखनऊ से लेकर दिल्ली की राजगद्दी पर उपेक्षित लोगों का राज्य होगा । उस समय नेता सदन ने एक खंजर धोखे से माननीय मुलायम सिंह यादव जी की कमर में भोंक दिया....

चलती हुई सरकार खत्म हो गयी । इस विश्वासघात की शुरूआत जिस दिन से हुई थी, उसी दिन से समाज के उस दलित वर्ग जिसकी वह दलित बेटी थी, उसी दिन उसकी पीठ में खंजर भोंक दिया गया । ताजमहल की बुनियादों पर पानी पहुंच गया, उसकी बुनियाद कमजोर हो गयी, एक साजिश के तहत्, एक साम्प्रदायिक सोच के तहत्, यह ताज नहीं रहना चाहिए, ताज गिर जायेगा और यहां पर दो मूर्तियाँ खड़ी रह जायेंगी । इतिहास गिरे हुए ताज को याद रखेगा और इन दो खड़ी हुई मूर्तियों को देखेगा । पार्कों पर जनता की गाढ़ी-कमाई का करोड़ों रुपया फूंका गया और जब इसे [ x x x ] कहा गया तो धिक्कार रैली बुलायी गयी थी अपने सीने पर हाथ रख कर सोंचे, कुछ साथी साथ छोड़कर चले आये हैं लेकिन समाजवादी अपना डेरा छोड़कर उस राजमहल में नहीं गया । कुछ तो था । एक तरफ एक ऐसा नेता जिसके चेहरे पर भोलापन, जिसकी वाणी में प्यार ऐसे व्यक्ति पर 150 मुकदमें कायम हुए । जमीन खिसक जाती, दो बार मुख्यमंत्री रहा हुआ व्यक्ति, देश की शरहदों की रखवाली कर चुका व्यक्ति 150 मुकदमों का मुजरिम बना दिया गया । उस समय बहुजन समाज पार्टी को सोचना चाहिए था, नहीं सोचा गया, लावा पकने लगा और वह एक चिनगारी जिसके लिए मैंने कहा था कि वह एक चिनगारी जो किसी शमा को रोशन करके पूरे हिन्दुस्तान की राजनीति को बदल सकती है और अगर वही एक शमा झोपड़ी में आग लगाने का काम करे तो एक घर से दूसरा घर, एक गांव से दूसरा गांव और इसी प्रकार पूरा हिन्दुस्तान जलकर राख हो जायेगा । आज इलेक्ट्रानिक मीडिया के जमाने में जो कुछ हो रहा है, उस पर पर्दा नहीं डाला जा सकता है । पंचम तल के कमरों में आई०ए०एस० अधिकारी कमरों में बैठकर नोटों की गड्डियां गिनें, आई०ए०एस० गाड़ियों से गड्डियां उतारने का काम करें इससे ज्यादा शर्म की बात क्या होगी ? यह कहना कोई भी शर्म नहीं है कि इन कपड़ों को पहन कर जब रेलवे स्टेशन से गुजरते हैं जब सार्वजनिक स्थल पर जाते हैं, लोग माँ-बहन की गाली देते हैं, लेकिन हम अपना हृदय उन्हें नहीं दिखा सकते, वह लोग हमें उस काबिल समझते हैं । इस लूट-घसोट का जिम्मेदार कौन है, उन गरीब को बर्बादी की कगार पर खड़ा कर देने वाला कौन है ?

---

नोट :–[ x x x ] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

मान्यवर, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के नाम को कलंकित किया गया है । उनके नाम को डिस्प्यूटेड बनाया जा रहा है । एक महान व्यक्ति के साथ नाइंसाफी हो रही है । यहां सारे साथी वह हैं जो या तो बाप हैं या भाई हैं । अगर एक बाप अपनी चार औलादों में से किसी एक औलाद को ज्यादा प्यार करने लगे उसको ज्यादा गोद में बैठाने लगे उसके नाम एक बिगहा खेत ज्यादा कर दे तो बाकी के भाई उससे नफरत करने लगेंगे । इसमें उस बाप की गलती है जो अपनी एक औलाद को ज्यादा प्यार देकर दूसरी औलादों को उसका दुश्मन बनाता है । यह जुर्म किया है इस प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री ने । मान्यवर, एक रुपये का पर्चा क्यों हुआ ? अम्बेडकर मैदान के नाम पर जहाँ सैकड़ों एकड़ जमीन पर दलितों के लिए मकान बन सकते थे, अस्पताल बन सकता था वहाँ पर अय्यासी के नाम पर हजारों करोड़ रुपये बहा दिये गये । इन हजारों करोड़ रुपयों से उनके नाम पर यूनिवर्सिटी बनायी जा सकती थी, दलितों के लिए हास्टल बनाये जा सकते थे जिसमें कि सिर्फ दलितों के लोगों को ही जाने की इजाजत होती और दलित की बेटी के अलावा कोई दूसरा न जाता, कोई और नहीं पढ़ेगा । तो हम ऐसे प्रस्ताव को ध्वनि मत से पास कराने के लिए तैयार हैं । दलितों के साथ सजा हुई, नाइंसाफी हुयी । 8 रुपये के पर्ची की कीमत उस दलित की बेटी को कैसे मालूम होगी जिसके जिस्म पर बने हुए कपड़े पर एक-एक हीरा एक-एक करोड़ की कीमत वाला होगा । हीरों की चमक ने जो पुर्जो जोड़े हैं उससे उसके इंसानी अहसास को काटकर फेंक दिया । उसे क्या पता दर्द क्या होता है, परिवार क्या होता है ? माँ की कोख से बच्चा पैदा होकर मर जाता है तो माँ का दर्द क्या होता है ? उसे क्या मालूम कि एक रिक्शा चलाने वाला, मजदूरी करने वाला, खेत में खेती करने वाला रोज 25-50 रुपये कमाने वाला जिसके परिवार को बुखार है, मां, बाप, बेटी, बहन बीमार है चार कोस अस्पताल दिखाना है तो 8×4=32 रुपये का पर्चा बनेगा । यह सरकारी अस्पताल खैराती अस्पताल कहा जाता है इसका पर्चा नहीं होना चाहिए । नेताजी तो एक रुपये के भी विरोधी थे लेकिन पर्चा में कागज, छपायी होती है इसलिए उसका मूल्य एक रुपये रखा गया । अस्पतालों की हालत को भी देखना होगा । जहां बिस्तर नहीं है, चादर नहीं है, दीवारों पर पान की पीक थूकी हुयी है । यह गंदगी को भी साफ करना होगा । उस हाथ को जिसने पूरे प्रदेश को बरबादी में लाकर ढकेल दिया है उस हाथ को भी काटकर फेंकना होगा । तभी इंसाफ होगा । इसलिए मान्यवर, यह व्यवस्था चल रही है । जो सरकार गयी है वह नाइंसाफियों की सरकार थी यह नाइंसाफियों का पुलिंदा थी । पूर्व मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि मदरसे आई०एस०आई० के अड्डे हैं लेकिन जी०ओ० मायावती के जमाने में हुआ । मुख्यमंत्री का कथन काफी था किसी भी मदरसे पर छापा लग सकता था । मेरे शहर के मुस्लिमों के खिलाफ पोटा का इस्तेमाल हुआ । एक दिन कहा था बतायें तो मैंने उस दिन नहीं कहा था । आज मैं कह रहा हूँ कि हमारे यहाँ के मस्जिद के एक मौलाना पर पोटा का कानून लगा था और इसलिए लगा था कि उसने दूसरा पासपोर्ट बनाया था । मैंने इस सम्बन्ध में राष्ट्रपति जी को और भारत सरकार को चिट्ठी लिखी थी । उन्होंने यह किस लिए बनाया था क्योंकि उनके मकान पर आज भी दरवाजा नहीं है । उसकी जवान बेटी को शोहर इसलिए मय्यसर नहीं हो पा रहा था क्योंकि उसके पास दहेज देने के लिए धन नहीं था, उसके घर में खाने के लिए रोटी नहीं थी । हमारे नेता जी को मुल्ला मुलायम सिंह कह दिया, क्यों कह दिया, क्यों कह दिया क्योंकि उन्होंने पार्लियामेंट में यह कह दिया था कि अलकायदा में कोई भी मुसलमान आतंकवादी नहीं है । वह भी देश के गृह मंत्री ने जब कहा था तो उन्होंने जवाब दिया था । ऐसे में मान्यवर, यह मुख्यमंत्री क्या यह हक रखते हैं कि जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी जिम्मेदारी । जब मान्यवर, विश्वास मत रखा गया था उस दिन जुम्मा

का दिन था और यह 14 विधायक जिनके बल पर सरकार बनी थी तो मैंने उससे यह सवाल किया था कि कितने पार्क बने, कितने जिले बने अकलियतों के नाम पर । जब बाबरी मस्जिद गिरी थी तो उस समय पूर्व मुख्यमंत्री ने यह कहा था कि मुसलमानों तुम हमारे साथ आओ और परवाह न करना मैं इसका बदला लूँगी और बदला यह लिया गया कि नोटिफिकेशन नहीं हुआ, मदरसों की तलाशी ली गयी । मान्यवर, मैं यह कहना चाहूँगा कि जुर्म की नाव बहुत दिन नहीं चलती । मेरे जैसे व्यक्ति जिसके परिवार को तोड़ा गया, जिसके खानदान पर सरकारी मुलाजिमों ने यातनाएं दीं, उन्होंने यह कहा कि अगर हमारे परिवार में यह नेता पैदा न हुआ होता तो हम लोग बरबाद हो जाते । तो यह नीचता है, क्रूरता है । ऐसा व्यक्ति और ऐसी महिला जिसके सीने में दिल नाम की कोई चीज नहीं है जिसके सामने सिर्फ एक ही मकसद है और वह मकसद है धन जमा करना । उसे यह मालूम था कि समाज उसके काले कारनामों को एक दिन जरूर देखेगा और उसे मालूम था कि जिस समय उसके पास राजनीतिक धन नहीं रह जायेगा उस समय यह लूट का धन काम आयेगा । आज उसका अन्त हुआ है । मान्यवर, मैं आपसे इसलिये कह रहा हूँ कि मैंने विदेश में जाकर आपके साथ आपको जाना है इसलिए कह रहा हूँ । आपके पास काबलियत है, आप एक अच्छे वकील है और पढ़े लिखे एक अच्छे नेता हैं, आपकी सोच अच्छी है और आपने समझने की शक्ति है । अगर यह न हुआ होता तो मेरे जैसे लोगों का कुदरत के इंसाफ से भरोसा उठ जाता । मैं आज भी उधर के साथियों से यह कहना चाहूँगा कि अभी भी वक्त है कि आप उस डूबती हुई नाव से इधर चले आओ । मैं बड़ी ईमानदारी से कहना चाहता हूँ कि समाजवादी पार्टी वह पार्टी है कि जिस लम्हा आप दाखिल हुए उसके दूसरे लम्हा आप उसका हिस्सा बन जाते हैं । आपको उसकी पैदाइश मान लिया जाता है । अभी भी वक्त है आप इधर चले आओ । जब नेता सदन, सदन में नहीं आती थीं, आपको याद होगा, आप सत्ता में थे, उस वक्त एक मौके पर मैंने जिद कर ली थी, हठ कर ली थी, तो नेता सदन को बुलवा कर माना, लेकिन नेता सदन मुश्किल से शायद पूरे बजट भाषण में कुल-मिलाकर 4-5 घन्टे ही हाऊस में मौजूद रहीं, लोकतंत्र के लिए, लोकतांत्रिक परम्पराओं के लिए, व्यवस्थाओं के लिए उनकी आस्था का यह अम्लियाँ है । आज बहुत कुछ बदला है, मिल्कियत से लेकर माहौल तक बदला है, लोगों का बर्ताव बदल गया, जिलों के अधिकारी केवल पूरी तरह से नहीं बदले हैं, इसमें देर लगेगी, लेकिन बदल जायेंगे, और गरीब व्यक्ति को लूटने वाले क्या वह रहने चाहिए ? बिल्कुल बदले जाने चाहिए, चाहे कमिश्नर, चाहे जिलाधिकारी, चाहे पुलिस अधिकारी, इसलिए भेजा गया है, हम जिम्मेदार होने के नाते कहना चाहते हैं .....

(व्यवधान)

(कई सदस्य एक साथ अपनी बात कहने का प्रयास करने लगे)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग कृपया शान्त रहें ।

श्री मोहम्मद आजम खाँ–

हमने एक अधिकारी से पूछा, तुम तो भले आदमी हो, इसलिए ऐसा क्यों करते हो, उसने बताया कि हम इतना पैसा देकर आये.....

(व्यवधान)

लाल जी वर्मा जी आप राजभर जी की भाषा न बोलें, [× × ×]

श्री लाल जी वर्मा–

हमें आपसे सर्टिफिकेट लेने की जरूरत नहीं है, कि हम कैसे हैं।

मोहम्मद आजम खाँ–

मुझे खुशी है [× × ×] और नहीं बोले।

(व्यवधान)

श्री लाल जी वर्मा–

मान्यवर, इन्होंने असंसदीय भाषा का प्रयोग किया है।

श्री अध्यक्ष–

कोई भी शब्द अगर अशोभनीय होगा, तो उसे कार्यवाही से निकाल दिया जायेगा।

श्री मोहम्मद आजम खाँ–

मान्यवर, मैं पूर्व नेता सदन के बारे में कह रहा था, मैं एक घर में रहता था, उसका नम्बर था, 13 माल एवेन्यू, मंत्री थे, जब उस व्यक्ति के साथी ने मेरे नेता की पीठ में खन्जर घोंपा था, जब मैं मंत्री था उस दिन नेता सदन को मेरा घर पसन्द आ गया था, मेरा सामान निकाल कर फेंक दिया गया था। मान्यवर, उस वक्त मुझे इस बात का दुःख नहीं था कि मेरा सामान निकाल कर फेंका गया बल्कि मुझे खुशी इस बात की है कि मेरे घर में घरवाली हो गयी हैं वह, मुझे यह देखकर कि मेरे घर में घरवाली हो गयी, मुझे बड़ी सजा हो गयी, उस वक्त से आज तक मुझे विधायक निवास में घर नहीं मिला। मैं नेता प्रतिपक्ष हो गया, मुझे रहने को घर नहीं मिला और जब नेता सदन समाज के धक्कों से और अदालत की ठोकरों से बाहर निकाल दी गयीं इस सदन से तब मुझे दारुलशफा में मेज कुर्सी मिली बिस्तर मिला, उस वक्त तक कुछ नहीं था। (सत्तापक्ष की ओर से शेम-शेम की आवाजें) ऐसे चलाया है नेता सदन ने सदन को। ऐसे चलाया है प्रदेश को और ऐसा लूटा है प्रदेश को। इसी अम्बेडकर पार्क में आज भी जो स्थिति है (व्यवधान) उसकी जो हदें हैं, इतना जरूर है कि वह सारी जमीन पर उस जमीन अयाश पर घोड़े पर बैठ कर निकला जाए तो एक घण्टे का समय लगेगा उसमें कुछ विकास का काम होना चाहिए था।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

इतने बड़े महापुरुष के नाम पर बनी हुई इमारत के बारे में आप ऐसी बातें कह रहे हैं। यह उचित नहीं है।

(घोर व्यवधान)

---

नोट :–[×××] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री अध्यक्ष–

कृपया शान्ति बनाये रखिये ।

श्री मोहम्मद आजम खाँ–

मान्यवर, केवल, लखनऊ, नोएडा और ग्रेटर नोएडा की जमीनें जो कब्जाई गयी हैं, जो नाजायज तौर पर ली गयी हैं ऐसी जमीनों के लिए मैं माननीय नेता सदन से इस बात के लिए निवेदन करूंगा...मैंने कोई गलत बात नहीं कही है राजभर जी उन जमीनों पर जिन जमीनों पर आपने कब्जा किया है उन पर सिर्फ अपने नाम का पत्थर लगाया ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

आपको तो कुछ ज्ञान ही नहीं है ।

(व्यवधान)

श्री मोहम्मद आजम खाँ–

मेरे पास तो सिवाय इस मण्डी के कुछ नहीं है ।

श्री अध्यक्ष–

मैं आजम जी के बाद माननीय जगदीश राय जी को मौका दूँगा उसमें आपको जो कुछ कहना है कह लीजियेगा ।

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, आखिर कितना बर्दाश्त किया जाए ।

श्री मोहम्मद आजम खाँ–

आप बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर को छोटा मत कीजिये ।

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, बाबा साहब के नाम पर अगर कुछ बना है किसी की जमीन नहीं हथियायी गयी है । अगर बहन जी ने कुछ बनवाया है तो सम्मान बढ़ा है ।

मान्यवर, यहाँ यह नहीं होना चाहिए कि एक महापुरुष का अपमान हो ।

(घोर व्यवधान)

(बहुजन समाज पार्टी के अधिकांश सदस्यों द्वारा एक साथ बोलने का प्रयास करने पर घोर व्यवधान ।)

मान्यवर, बाबा साहब के बारे में यह बोलें, हमारी नेता के बारे में बोलें और हम चुप रहें यह कैसे हो सकता है । इस तरह के अपमानजनक शब्द बोलें यह ठीक नहीं है (व्यवधान)

(अनेक सदस्यों के एक साथ बोलने का प्रयास करने पर घोर व्यवधान बना रहा ।)

श्री अध्यक्ष–

संसदीय लोकतन्त्र में धैर्य और सहिष्णुता आवश्यक है इस सदन में जब हम यहाँ बैठकर चर्चा करते हैं तो कोई वर्तमान सरकार की आलोचना करेगा, कोई पिछली सरकार की आलोचना करेगा, कोई अपने कृत्य को अच्छा कहेगा, कोई पिछली सरकार के कृत्यों को बुरा कहेगा तो इतना सुनने का धैर्य रखना चाहिए । हाँ इतना जरूर है कि जो असंसदीय शब्द होगा, अशोभनीय शब्द होगा, गैर मर्यादित बात होगी तो कार्यवाही से निकाल दी जायेगी लेकिन दोनों पक्षों से मेरी प्रार्थना है कि धैर्यपूर्वक एक-दूसरे को सुनें, आलोचना सुनना भी स्वयं को शक्ति देता है ।

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, सरकार की आलोचना जितनी किया है उसमें कोई बात नहीं है लेकिन बाबा साहब के बारे में इस तरह की बात कहेंगे तो हम धैर्य नहीं रख पायेंगे । (व्यवधान)

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, महापुरुषों के बारे में जो अपमान जनक शब्द का प्रयोग किया है वह नहीं होना चाहिए ।

श्री अध्यक्ष–

मैं स्पष्ट करवाये देता हूँ ।

(व्यवधान)

माननीय आजम खाँ जी के भाषण को जितना हमने सुना, आपने भी सुना है उनके भाषण के पूर्व अंश को देखा तो डा० अम्बेडकर के सम्मान की ही बात कही है । डा० अम्बेडकर के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रही है । यह स्पष्ट कर दें ।

श्री मोहम्मद आजम खाँ–

मान्यवर, बहुजन समाज पार्टी के पास उनका टेण्डर नहीं निकल आया है कि यही इमारत बनायेंगे, ऐसा नहीं है कि इनके नाम टेण्डर मिल गया है । ये तो यह समझ रहे हैं कि टेण्डर इनके नाम मिल गया है । सारे पार्क यहाँ बनायेंगे । हमने भी टेण्डर डाला हुआ है । कुछ हमें भी बनाने दीजिये, आपने तो लूट मचा रखी है और हम यह नहीं चाहते हैं । हमारा भी टेण्डर है जरा खुलने दीजिये । आपने अपना टेण्डर खुद खोल दिया, नोएडा को बेंच दिया और ले गये सारा धन स्वीटजरलैण्ड । मान्यवर, अगर वह धन देश में ही रहता तो कम से कम सी०बी०आई० की जाँच में जो 35 करोड़ की कोठी, जो फार्म हाउसेज और सैकड़ों करोड़ रुपये के हीरे....

(व्यवधान के मध्य)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

जब मैं सी०बी०आई० की जांच का स्वागत कर चुका हूँ उसके बाद भी इस तरह से कहा जा रहा है यह ठीक नहीं है इससे इसकी मानसिकता जाहिर हो रही है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, मैं चाहता हूँ कि अपनी बात जल्दी खत्म कर दूँ और मुझे अच्छा लगा कि इन्होंने सी०बी०आई० जांच का स्वागत किया है, मुझे और अच्छा लगेगा जब वह इस बात का भी स्वागत करेंगे कि सुश्री मायावती के नाम, उनके पिता के नाम, भाई के नाम और बहनोई के नाम जो सम्पत्ति की पकड़ हो गयी है, उसके लिए भी स्वागत करें ताकि जेल के दरवाजे पर और अच्छी तरह से स्वागत कर सकें। यह सारी बहस जो इस सदन में इस पक्ष और उस पक्ष से हुई है, नेता सदन के द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत के प्रस्ताव पर, मान्यवर, खास तौर पर यहाँ बैठ करके और अपने कक्ष में बैठ करके आपने देखा और सुना है। अगर उधर के साथियों से प्रतिशत निकालेंगे तो बहुजन समाज पार्टी के कुछ सदस्यों को छोड़कर बाकी ने विश्वासघात के खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहा है। इसलिए कि कल जो उनके साथ थे, उन्हें उस साथ का पछतावा है। सदन को याद होगा, मैंने शुरू में कहा था कि यह गठबन्धन नापाक गठबन्धन है और उसका नतीजा वही हुआ जो आज सदन के सामने है। आज एक ऐसा व्यक्ति प्रदेश का मुखिया है, जो किसान का बेटा है, एक ऐसा व्यक्ति प्रदेश का मुखिया है, जिसने अपने हाथ से हल चलाया है, एक ऐसा व्यक्ति प्रदेश का मुखिया है जिसके परिवार के लोगों को उन्हीं के खेतों में लाठियों से पीटा गया, एक ऐसा व्यक्ति प्रदेश का मुखिया है जिसका सगा भतीजा इसलिए दुनिया से चला गया क्योंकि दवा की सहूलियतें उस गाँव में उसे नहीं मिल सकीं, एक ऐसा व्यक्ति प्रदेश का मुखिया है जिसके ऊपर सैकड़ों और हजारों करोड़ रुपये की चोरी का इल्जाम नहीं है, उसके कपड़ों पर हीरा नहीं जड़ा हुआ है, उसकी बात में जमीन को दहला देने वाली धाक नहीं है, उसकी वाणी में आग उगलने वाले शब्द नहीं है, देख लेने जैसी बातें नहीं हैं। उनसे जनता को काफी उम्मीदें हैं और इसलिए जिन लोगों ने आज टीका-टिप्पणी की है कि फलाँ फिल्म के सितारे थे, जो इस सदन के सदस्य नहीं हैं.....जिनके परिवार से, जिनके बुजुर्गों के काम से यह देश जाना जाता है। हिन्दुस्तान की सरहदों के बाहर, सरहदों पर जो रोज झगड़ा करते हैं, पाकिस्तान, जहाँ से हर वक्त जंग के हालात बने रहते हैं, ऐसे मुल्क के हर चौथे घर में अमिताभ बच्चन की तस्वीर टंगी मिलती है। जो सख्सियतें, जिनके नाम से, जिनकी तस्वीरों से यह देश पहचाना जाता हो, उन पर उंगुली उठाकर, आप अपनी ताकत का, अपनी वाणी का और सदन का नाजायज इस्तेमाल करना, इतना ही सीखा आपने। बकौल प्रमोद तिवारी के, वह लाखों लोग प्रदेश से उमड़ी जनता इन्हें नजर नहीं आयी, जिसे केवल एक दिन का समय मिला था, यदि 3-4 दिन का समय मिला होता, एक हफ्ते का समय मिला होता और मालूम होता कि नेताजी शपथ लेने जा रहे हैं। यह भीड़ कोई पंचम तल का अधिकारी लेकर नहीं आया था और न सरकारी खजाने से पैसा खर्च करके भीड़ लायी गयी थी। इसलिए आज इस सरकार को, जो जनता की सरकार है, जो गरीबों की सरकार है, किसानों की, मेहनत करने वालों की, बीमारों की सरकार है, उसके मुखिया को विश्ववास मत हासिल होता है, उसके लिए मैं भी पूरे मन से, अपने साथियों से यही दरख्वास्त करना चाहूँगा कि ऐसे मौके कभी ही आते हैं, हमारी सदन की कटुता, सदन में शब्दों की बौछार यहीं तक है। जब मैं नेता विपक्ष के रूप में उधर बैठा करता था तो कभी मेरी बात माननीय अध्यक्ष जी को नागवार लग जाती थी और कभी मुझे उनकी बात नागवार लग जाती थी, लेकिन कभी मैंने उनकी बात का बुरा नहीं माना। जैसे अदालत में मुकदमें में दो वकील होते हैं और उसके बाद एक-दूसरे के साथी, उसी तरह से हमारा आपका भी यही रिश्ता होना चाहिए। नेता सदन ने आज यही कहा कि हम सब, एक-दूसरे के भाई-बहन हैं, इसी रिश्ते

को हमें निभाना है । वरना आप किस-किस को मारोगे, किस-किस पर पोटा लगायेंगे, किस-किस को जेल में भेजेंगे और किस-किस को नौकरी से बर्खास्त करेंगे और कितने खानदानों को तोड़ेंगे, कहाँ तक भाई और भतीजों को लड़ायेंगे । इसलिए मैं आपको बताना चाहता हूँ, आपसे कहना चाहता हूँ कि नफरत की बोई हुई खेती से सिर्फ नफरत ही जन्म लेगी । आप नीम के पौधे से मीठे आम तोड़ना चाहते हो, सैलाब के पानी से घरों को बचाने का काम करते हो, मैं कहना चाहता हूँ कि नफरत से नफरत को मिटाया नहीं जा सकता, कभी आग से आग को बुझाया नहीं जा सकता, उसके लिए पानी की जरूरत होती है । आज इस नफरत को मिटाने की जरूरत है, यहाँ पर हम 400 हैं, यदि हम 400 एक साथ मिल बैठ नहीं सकते तो कैसे इस प्रदेश की जनता को एक करेंगे । तो आइये मोहब्बत के इस वातावरण की शुरुआत करें और सबसे पहले मेरा निवेदन आपसे है । आज हर व्यक्ति ने कुछ न कुछ कहा है, लेकिन सभी साथी किसी न किसी तरह से कभी न कभी उसका नेताजी से वास्ता रहा है । चाहे उनके जिले के रहे हों, चाहे उनके मंत्रिमण्डल में रहे हों, चाहे उनकी पार्टी में रहे हों, काम लेना या काम देने के लिए एक दूसरे से वास्ता रहा है, आप नेताजी को अच्छी तरह जानते हैं, उनके तरीके को जानते हैं, आज हमने एक हाथ बढ़ाया है, इस हाथ पर इतने हाथ रख दो कि कोई बड़ी से बड़ी ताकत इस हाथ को तोड़ने में कामयाब न हो सके, तभी इस प्रदेश का भला होगा । इन्हीं शब्दों के साथ, उत्तर प्रदेश के विकास के लिए, मैं नेता सदन द्वारा रखे गये विश्वास मत के प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ, दिल से करता हूँ, दिमाग से करता हूँ और अपनी पूरी ताकत और पूरी शक्ति के साथ और इन दुआओं के साथ करता हूँ कि नेता जी ने बचे हुए वक्त के लिए सरकार बनाकर चुनाव की तरफ धकेले जाने की साजिश को नाकाम किया है । प्रदेश में आने वाले तीन-साढ़े तीन साल तक खुशियों के साथ आगे बढ़े और आगे आने वाले 5 सालों में फिर यहीं बैठे हुए मिले और वहाँ से लेकर दिल्ली तक का रास्ता साफ करने में आप हमारी मदद करें । धन्यवाद ।

श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी"–

मान्यवर, एक छोटी सी बात कहनी है । आज इस सदन में दो महापुरुषों के बारे में गलतबयानी कर दी गयी है उससे मेरे मन को सदमा पहुंचा है । हमारे कम्युनिस्ट के नेता ने कहा कि डा० हेडगेवार और डा० भीमराव अम्बेडकर ने आजादी के आन्दोलन में कोई सहयोग नहीं दिया । मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि दोनों महान देशभक्त थे तथा दोनों ने आजादी के आन्दोलन में बड़ा योगदान दिया । डा० हेडगेवार कलकत्ता में रहकर क्रान्तिकारी आन्दोलन का संचालन करते रहे और कांग्रेस के आन्दोलनों में कई बार जेल भी गये । उनका आजादी की लड़ाई में योगदान तथा देश भक्ति प्रमाणित है हमारा यह कथन तथ्यपूर्ण है । डा० भीमराव अम्बेडकर ने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से महान कार्य किये हैं । डा० अम्बेडकर ने वह काम किया जिससे देश एक और विभाजन से बच गया । जिन्ना ने अलग देश राज्य की मांग की उस समय अंग्रेजों ने एक चाल चली लेकिन डा० अम्बेडकर उनकी चाल में नहीं आये और हमारे देश के अनुसूचित जाति के लोग थे वह भारत के साथ ही जुड़े रह गये, इसमें सबसे बड़ा योगदान डा० अम्बेडकर का था । यह कहना कि डा० हेडगेवार और डा० अम्बेडकर का आजादी की लड़ाई में कोई सहयोग नहीं था मैं समझता हूँ कि यह गलत है । मैं इसका खण्डन करता हूँ । माननीय सदस्य को भी इसका अध्ययन कर लेना चाहिए था ।

*श्री विद्या सागर गुप्ता–

माननीय सदस्य तो डा० हेडगेवार का पूरा नाम क्या है, यह भी नहीं जानते होंगे ।

श्री राम स्वरूप सिंह–

मान्यवर, जिन्ना साहब, डा० हेडगेवार और डा० अम्बेडकर का मैंने नाम लिया है । जिन्ना साहब का कहना था अलग पाकिस्तान बने जबकि हेडगेवार हिन्दू राष्ट्र बनवाना चाहते थे ।

श्री अध्यक्ष–

मा० राम स्वरूप सिंह जी, हम विवादों को जन्म नहीं देना चाहते हैं, इसलिए कृपया बैठिये, मेरे पास जो माननीय सदस्य इस चर्चा में भाग लेना चाहते हैं उनकी बहुत बड़ी सूची है । अभी तक जो माननीय सदस्य एक-एक दल का प्रतिनिधित्व करते हैं उनको समय नहीं मिला है, निर्दलीय सदस्यों को भी समय नहीं मिला, बहुजन समाज पार्टी के दो माननीय सदस्य और भारतीय जनता पार्टी के एक सदस्य बाकी हैं और माननीय नरेश अग्रवाल जी उधर से बाकी हैं । कुल 6 लोगों को मौका दूँगा । ठीक 6.15 बजे माननीय मुख्य मंत्री जी को उत्तर देने के लिए आमंत्रित करूंगा । उसके पहले समय रहा तो एक-एक दो-दो मिनट में कुछ माननीय सदस्य अपनी बात रख देंगे ।

*श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने माननीय नेता सदन तथा प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय मुलायम सिंह यादव द्वारा रखे गये विश्वास मत के प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए अवसर दिया, श्रीमन् मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि इस विधान सभा में बैठे हुए माननीय सदस्यों से कि एक ऐसी सरकार जो उत्तर प्रदेश की जनता की सरकार बन गयी है उसको सर्वसम्मति से विश्वास मत हासिल करा दें । अगर ऐसा नहीं करते हैं और जो सदस्य इस सरकार को विश्वास मत हासिल करने में योगदान नहीं देगा तो जब वह सदन से बाहर जायेगा । इस प्रदेश की जनता उसे माफ नहीं करेगी । मुझे तो बड़ा ताज्जुब हुआ जब बहुजन समाज पार्टी के साथियों ने इस बात को कहा कि इस सरकार के आने के बाद गुण्डा राज कायम हो गया है और गुण्डे लखनऊ की राजधानी में घूम रहे हैं । वर्मा जी जब आपके हाथ चरखे की तरह घूमेंगे तो लखनऊ की धरती पर गुण्डे जरूर घूमेंगे । जब कोई जनता या हिजड़ा आदमी ताल ठोंककर कहता है तो बड़ा आश्चर्य होता है कि वह अपने स्वभाव के विपरीत क्या बात कह रहा है । इसीलिए मैं सभी साथियों से कह रहा हूँ कि इस सरकार को समर्थन देना चाहिए । पिछली जो सरकार 15 महीने रही है उस सरकार ने जनता को चूर-चूर कर दिया था । जैसे 1974 में लोक नायक जय प्रकाश नारायण द्वारा आन्दोलन करके इमरजेंसी से देश की जनता को राहत दिलायी गयी थी और लोगों ने उस समय जिस प्रकार खुशियाँ जाहिर की थीं उसी तरह से इस तानाशाही, लोकतन्त्र विरोधी, भ्रष्टाचार करने वाली जनता से दुर्व्यवहार करने वाली सरकार जब से सत्ता से हटी है तब प्रदेश की जनता ने खुशियाँ मनायी हैं । हम जानते हैं कि बहुजन समाज पार्टी के साथी जो हैं वह हयादार हैं लेकिन उनकी बातों को सुनने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हयादार के आगे ''वे''

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

शब्द बढ़ा दिया जाए । प्रदेश की जनता को कराहने पर मजबूर करने वाले लोग किस तरह से शान से सदन में बैठे हैं और बोल रहे हैं यह आप देख लें । बहुजन समाज पार्टी के नेता बोल रहे थे वे मेरे मित्र हैं, मैं उनका सम्मान करता हूँ । पूरे प्रदेश के छात्रों के अभिभावकों को यह चिन्ता थी कि उनके लड़के कैसे शिक्षा ग्रहण करेंगे, कैसे पढ़ेंगे लेकिन पिछली सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगी । जैसे ही माननीय मुलायम सिंह यादव जी ने मुख्य मंत्री का पद सम्भाला वैसे ही उन्होंने शुल्क वृद्धि वापस लेने की घोषणा की । उत्तर प्रदेश के छात्रों में इतनी ज्यादा खुशी है इसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता । जहाँ तक भ्रष्टाचार की बात है उस समय की सरकार में बहुजन समाज पार्टी के मंत्री से लेकर जिले में इनके दुअन्नियाँ चवन्नियाँ नेता थे वह भी एस०पी०, कलेक्टर और दरोगा से पैसे वसूलने का काम करते थे ।

श्री सुखदेव राजभर–

यह झूठ है ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

यह सही है । इन्होंने पूरे प्रदेश को लूटा है ।

श्री अध्यक्ष–

इस तरह का भाषण नहीं किया जाता । यह भाषण का तरीका नहीं है ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

मान्यवर, जिनके पास टूटी साइकिल भी नहीं थी वह आज आठ-आठ लाख, बारह-बारह लाख की गाड़ियां चमका रहे हैं और इसको झूठ कह रहे हैं । किसकी हैसियत थी कि 12-12 लाख की गाड़ी खरीद ते कैसे यह गाड़ी खरीदी गयी ?

श्री अध्यक्ष–

अब समाप्त करिये ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

कलेक्टर, एस०पी० की पोस्टिंग 18-20 लाख से लेकर 50 लाख रुपये तक में की गयी । श्री टण्डन जी नेता, विरोधी दल हैं । उनकी प्रतिष्ठा है मैं उनका सम्मान करता हूँ लेकिन इनके साथ आपकी भी महिमा घटी । महिमा घटी समुद्र की । जब लोकतन्त्र के प्रहरी होकर इस तरह से इस्तीफा देकर चले जाएं तो क्या होगा । अध्यक्ष जी आप गवाह हैं, आप सदन के संरक्षक हैं मुख्य मंत्री मायावती के शासनकाल में सदन की गरिमा समाप्त हो गयी थी । सदन के सदस्यों को यह गुण्डा अपराधी कह रहे हैं यह चुनकर आये हैं इनको जाति प्रमाण-पत्र, चरित्र प्रमाण-पत्र देने का अधिकार है ।

श्री अध्यक्ष–

समाप्त करें ।

श्री राम गोविन्द चौधरी-

यह दोअन्नियाँ लोग सदस्यों को गुण्डा कहते हैं । इनको माफी माँगनी चाहिए । इस प्रदेश के कम से कम 10 मुख्य मंत्रियों का शपथ ग्रहण हमने देखा है । श्री राम नरेश यादव, श्री बनारसी दास यादव, श्री विश्वानाथ प्रताप सिंह, श्रीपति मिश्र, श्री बीर बहादुर सिंह, मुलायम सिंह यादव, कल्याण सिंह इतने लोगों का शपथ ग्रहण हमने देखा है मैं 1977 से इस विधान सभा में चुनकर आ रहा हूँ । प्रधान मंत्री तक का शपथ ग्रहण हमने देखा है लेकिन इतना जयनाद कभी नहीं देखा ।

श्री अध्यक्ष-

अब लिखा नहीं जाएगा ।

श्री राम गोविन्द चौधरी-

[xxx]

* श्री अखिलेश कुमार सिंह-

अध्यक्ष महोदय, आपने विश्वास प्रस्ताव पर बोलने का अवसर दिया इसके लिए आपका हृदय से आभारी हूँ । इतिहास में विगत 15 महीने का शासन एक काले अध्याय के रूप में लिखा जाएगा । उत्तर प्रदेश की विधान सभा में हम लोगों को महसूस ही नहीं होता था कि हम लोग विधायक हैं । आज कश्मीर की सरहद पर आतंकवाद है लेकिन उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य था जहां पर राजनीति का आतंकवाद इस प्रदेश की मुख्य मंत्री की तरफ से था । हम लोग तो छोटे से कार्यकर्ता हैं । हमारे प्रदेश के बड़े-बड़े नेताओं को अपमानित करना और उनकी हत्या करने का प्रयास किया गया । माननीय मुलायम सिंह और अमर सिंह जैसे राष्ट्रीय नेताओं के ऊपर 150 मुकदमें दर्ज किये जा रहे थे तो उस प्रदेश में लोकतन्त्र की क्या हैसियत रही होगी इसका नतीजा इसी से लगाया जा सकता है । एक बात की हमको खुशी है हमारे साथी मौर्या जी हमारे जनपद के वह विधायक हैं और विधायक बनने के बाद ही आप मंत्री बने । जहाँ तक अपमान की बात है मौर्या जी झूठ मत बोलियेगा मैंने अपने कानों से सुना और आंखों से देखा है, प्रमोद तिवारी जी भी हमारे साथ थे मायावती इनसे कह रही थीं कि मौर्या तू चुप रह, तेरी औकात क्या है । मुझे खुशी है कि जब प्रदेश में लोकतन्त्र का इतिहास लिखा जायेगा, लोकतन्त्र के खिलाफ संघर्ष का इतिहास लिखा जायेगा तो अतीक अहमद, राजा भैय्या, धनंजय सिंह और अखिलेश सिंह (मेरा) का नाम भी लिखा जायेगा । हम लोगों ने सिर नहीं झुकाया । अफसोस इस बात का है लोकतान्त्रिक व्यवस्था में न जाने कितने परिवारों को नुकसान उठाना पड़ा । मैं चार महीने फरार रहा हूँ । टण्डन जी एक बात कहना चाहता हूँ कि इस मामले में आप और आपकी पार्टी दोषी है । एक साल पहले जब 1500 रुपये का इनाम मायावती ने मेरे लिए घोषित किया था तो मैंने कहा था कि कल ऐसा दिन भी आयेगा जब आप लोगों के ऊपर डेढ़ लाख का इनाम होगा । आपने सत्ता उनसे छीनी है । [xxx]

---

नोट :- [xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अध्यक्ष–

यह अशोभनीय है, यह नहीं लिखा जायेगा ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

चार महीने मैं भूमिगत रहा और मेरे को यह मालूम था कि जब रोज सुबह होती है तो होने वाला सूर्यास्त मेरे जीवन का सूर्यास्त तो नहीं होगा । उस समय शिवपाल और अमर सिंह जी ने मुझे सहारा दिया । मैं उनका आभारी हूँ कि उन्होंने ऐसे समय में मुझे मानसिक संतोष दिया । मैं पूछना चाहता हूँ कि भाई अतीक अहमद का क्या दोष था ? वे विधान सभा में अपना भाषण दे रहे थे । मुख्य मंत्री को उनकी जबान अच्छी नहीं लगी और वे 14 महीने जेल में रहे । इनके 85 साल के पिता जेल में रहे । राजा भैय्या का क्या दोष था ? लोकतंत्र में सत्ता बदलती है । आज सत्ता बदल गई है । मायावती की हैसियत नहीं बनी कि वह सदन फेस कर सकती । हम लोग अपने बल पर जीत कर आये हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी मैंने आपको समर्थन दिया है । विधान सभा के जिन सदस्यों के साथ मायावती ने और उनके अधिकारियों ने जो जुल्म किये हैं उसका क्या हिसाब होगा ? हम चार महीने फरार रहे । गोमतीनगर में मेरे मकान के सामने बुलडोजर खड़ा था मेरे मकान को गिराने के लिए । वह तो टण्डन जी ने मना कर दिया हमारा मकान गिरवाने से । मेरी टण्डन जी से बात हुई मैंने उनसे कहा कि आप मुख्यमंत्री जी से कह दें कि आप मेरे घर को एक-एक ईंट गिरवा दीजिये लेकिन मेरा खून कलंकित नहीं होगा । मेरा सिर नहीं झुकेगा । सुभाष चन्द्र बोस राजनीतिक न्याय के नायक थे । अम्बेडकर जी सामाजिक न्याय के नायक थे । [ × × × ] जातिवाद के खिलाफ कभी आन्दोलन चलाया ?

श्री लाल जी वर्मा–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है । आरोप लगाने की एक प्रक्रिया है ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

आप बैठ जाइये ।

श्री अध्यक्ष–

इतना हिस्सा निकाल दिया जायेगा ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, आज मायावती होती इस सदन के अन्दर तो हमारा जो आक्रोश है, उसका आप अनुमान लगा सकते हैं । मायावती को सजा मिलेगी अगर यहाँ नहीं तो हम दिल्ली जायेंगे ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

सजा मिलेगी ।

---

नोट :–[ ×××] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री अध्यक्ष–

समाप्त करें ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

सजा कानून से मिलेगी । सजा दिलाकर रहेंगे ।

(व्यवधान)

श्री सुखदेव राजभर–

सजा दिलाकर रहेंगे इस तरह की बात आपके सामने हो रही है ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

मेरे यहाँ कुर्की के आदेश एक दिन पहले लिए और दूसरे दिन यानि 24 घंटे के बाद, 28 घंटे बाद कुर्की हुई । यह प्रयास करते रहे कि इनके मंत्रिमंडल में शामिल हो जाऊँ । उस वक्त मैं चित्तौड़ में था । मैंने चित्तौड़ से आई०ए०एस० से कहा कि मैं चित्तौड़ में हूँ वहाँ कोई किला नहीं है वहाँ खंडहर हैं मेरा किला गिराना है तो गिरा दें । एक आदेश निकाला गया आपकी पुलिस मुझे पकड़ नहीं पाई क्योंकि आपकी पुलिस घूसखोर है । पुलिस ने नेताओं पर ही अत्याचार नहीं किए उसके परिवार वालों के साथ भी अत्याचार हुए हैं राजा भैय्या की माताजी आ रही थीं उनको एक घंटा जमीन पर खड़ा रखा गया उनसे जब कहा गया इनको क्यों खड़ा किया जा रहा है तो यह कहा गया कि ऊपर से आदेश हैं एक घंटा खड़ा रखो ।

(शेम-शेम की आवाजें)

जो बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों का ख्याल नहीं रख सकती है वह महिला बहादुर नहीं है । इस तरह से जुल्म करना कोई बहादुरी नहीं है ।

(सत्तापक्ष के सदस्यों ने मेजें थपथपाई)

वह तो कमजोर और डरपोक महिला है वह तो इतनी डरपोक है जिसकी कोई सीमा नहीं है । अब उसको पता चलेगा इन जुल्मों की क्या सजा है जब कानून से उसको जेल में पड़वायेंगे ।

(व्यवधान)

मेरे जिले में ढाई सौ घर गिरे हैं ताकि अखिलेश सिंह जेल पहुँच जाएं ।

(व्यवधान)

मायावती को जुल्मों का हिसाब कानून को देना पड़ेगा । अगर मायावती को सत्ता से हटाने के लिए भाजपा को समर्थन देना होता तो मैं देता क्योंकि |× × ×|

(व्यवधान)

---

नोट :–|×××| यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री अध्यक्ष–

इसको कार्यवाही से निकाल दिया जायगा ।

श्री अखिलेश कुमार सिंह–

राजा भैया, अतीक अहमद पर जुल्म करके यह सत्ता में बने नहीं रह सकते ।

(व्यवधान)

यह बहुत ही क्रूर महिला है मांए बच्चों से कहती है कि बच्चों सो जाओ नहीं तो मायावती आ जाएगी ।

(व्यवधान)

जो शिवपाल जी ने और अमर सिंह जी ने सहारा दिया उसका मैं और मेरा परिवार जीवन भर आभारी रहेगा । मायावती ने मेरा मकान गिराने के लिए कहा मेरे मकान के आगे बुल्डोजर नहीं खड़ा किया गया टण्डन जी बैठे हैं बतायें, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ इससे मेरी बात क्या टेलीफोन पर नहीं हुई यह बता दें । जवाब दें ।

(व्यवधान)

मैंने टण्डन जी से कहा था कि मायावती जी को बता दीजिए मैं घर जाऊंगा लेकिन सरेंडर नहीं करूंगा । राजा भैय्या की माँ जी से मैं पैर छूकर माफी माँग लूंगा । अध्यक्ष महोदय, मैं कभी क्षत्रिय सम्मेलन में नहीं गया मैं कभी साम्प्रदायिक सम्मेलन में नहीं गया मैंने इस भावना से काम किया था कि एक दलित भी प्रधानमंत्री बने, लेकिन मायावती नहीं । मैं माननीय मुलायम सिंह जी से क्षमा मांगता हूँ, पिछली सरकार 6 महीने चलवाने के लिए । इन्हीं शब्दों के साथ मैं विश्वास मत प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ ।

* श्री धनंजय सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय नेता सदन द्वारा रखे गये विश्वास प्रस्ताव पर मैं कुछ शब्द बोलना चाहता हूं । मैं पहली बार सदन में आया हूं । तमाम विद्वान सदस्यगण पिछली सरकार के विषय में काफी कुछ कह चुके हैं । मान्यवर, जो दल केन्द्र में सरकार चला रहा है और अपने आप को लोकतंत्र का हिमायती कहता है, मायावती जी ने कुछ अप्रत्यासित नहीं किया है, भाजपा पिछले तीन बार से मायावती का प्रयोग कर रही है । मायावती को भाजपा ने एक प्रयोगशाला के रूप में प्रयोग किया है, जिसका खामियाजा उत्तर प्रदेश की जनता को भोगना पड़ा है । जिसका परिणाम 25 अगस्त को देखने को मिला जिस दिन भाजपा ने उस सरकार से समर्थन वापस लिया और मायावती ने विधान सभा भंग करने की सिफारिश की । जिस तरह से इराक में अमरीकी सेनाओं के प्रवेश के बाद सद्दाम हुसैन के पुतले और होर्डिंग्स जलाये गये थे उसी प्रकार से उत्तर प्रदेश में भी देखने को मिला । मान्यवर, यह सरकार 15 महीने पहले बननी चाहिए थी, माननीय मुलायम सिंह जी को 15 महीने पहले ही मुख्यमंत्री बनना चाहिए था । कुछ लोगों की विवशता कहें या मजबूरी कहें, प्रदेश का लोकतांत्रिक संकट बताकर एक गैर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

जिम्मेदाराना सरकार का गठन किया जिसकी मुख्यि माननीय मायावती जी थीं । मान्यवर, जब नेतृत्व विवश और मजबूर हो तो उसे नेतृत्व का अधिकार नहीं होता है । यह बात मैं टण्डन जी के लिए कहना चाहता हूँ । जिनकी वजह से पिछली सरकार चली थी । मान्यवर, बहुजन समाज पार्टी के लोगों ने अभी कहा कि सारे प्रदेश में गुण्डे छोड़ दिए गये हैं, मैं उनका जवाब देना चाहता हूं । उस पार्टी के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहता, उस पार्टी के अन्दर संवैधानिक विचलन और लोकतांत्रिक भटकाव है । पिछले बजट सत्र के दौरान आप थे । मैंने एक सवाल किया था पूर्व संसदीय कार्य-मंत्री यहाँ बैठे हैं । मैंने कहा था कि इस प्रदेश में युवाओं के रोजगार के लिए इस सरकार के पास कोई योजना या नीति है तो तत्कालीन संसदीय कार्यमंत्री ने कहा था कि हमारे पास ऐसी कोई नीति नहीं है । इस संदर्भ में मैने मुख्यमंत्री जी से बात की तो उन्हेंने कहा कि ऐसे ही चल रहा है और ऐसे ही चलेगा तो हमने कहा कि ऐसे नहीं चलेगा जनता के प्रति हमारी भी जवाब देही है । इसके बाद जो भी विचारधारा से जुड़े लोग थे बागी हो गये या यों कहें कि विद्रोही हो गये । वह सब हमारे पास आये उसका नेतृत्व राजा भैया कर रहे थे । हम लोग मिले और उसमें यह हुआ कि परिस्थिति हमारे प्रतिकूल भी जा सकती हैं । हो सकता है कि इसके बाद हमें जेल भी जाना पड़ेगा । उस समय राजा भैया ने यही कहा कि परिस्थितियाँ भले ही प्रतिकूल हों परन्तु हमें स्थितियों को आम जनता के अनुकूल बनाना होगा इसके लिये हमें प्रयास करना चाहिए । और इसका खामियाजा हमें मिला हम लोगों पर मुकदमें कायम किये गये और 10 माह हम लोग जेल में रहे उसकी हमें व्यक्तिगत पीड़ा नहीं है लेकिन 10 महीने जो पीड़ा जनता ने भुगती है उसकी हमें पीड़ा है । अरेस्टिंग के बाद स्थितियों में चेकिंग हो गया हमें लगा कि हमने अंधेरे में छलाँग लगायी है । परन्तु उस समय माननीय मुलायम सिंह जी ने हमारी बातों को समझा और उचित जगहों पर हमारी बातों को रखा । मैंने उसके राजनीतिक जीवन को देखा है उससे यही विश्वास हुआ कि राजनीतिक व्यवस्था को उसकी सही स्थिति तक माननीय मुलायम सिंह जी ही ले जा सकते हैं । मान्यवर, पिछली सरकार ने जो किया सो किया उसका खामियाजा सभी ने भुगता है । अभी इस संदर्भ में कई माननीय सदस्यों ने कहा । आज हमें प्रदेश ऐसी स्थिति में मिला है वहाँ पर शिक्षा और स्वास्थ्य का बाजारीकरण किया जा रहा हो । माननीय, श्री मुलायम सिंह यादव जी से जनता को काफी उम्मीदें हैं । जिसके लिए उन्हें कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ेगा । लोग उनके साथ रहेंगे और हैं भी । जो स्थिति आज प्रदेश की है उसके उत्थान के लिए माननीय मुलायम सिंह जी ही पूरी तरह से उसको नई दिशा दे सकते हैं ।

(इस बीच राजा भइया सहित कई सदस्य बोलने के लिए खड़े हो गये ।)

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

मान्यवर, मैं कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता लेकिन जिस पर जुल्म हुआ है अगर वह थोड़ी सी अपनी पीड़ा व्यक्त कर दें तो उचित होगा ।

श्री अध्यक्ष–

हमें कोई ऐतराज नहीं है आपको ही प्रतीक्षा करनी होगी ।

* श्री घनश्याम शुक्ला–

माननीय अध्यक्ष जी, आपने हमें विश्वास मत के प्रस्ताव के विरोध में बोलने का अवसर दिया इसके लिए आपका आभारी हूँ । मान्यवर, नेता सदन ने जो भी घोषणाएं की हैं चाहे छात्रों के हितों की हों, चाहे वह अस्पतालों के पर्चे के सम्बन्ध में हो, चाहे वह गाँव में चौदह घंटे बिजली देने के सम्बन्ध में हो हम उनको इस बात का जरूर समर्थन करते हैं । लेकिन इस बढ़ती हुई आबादी और घटते हुए संसाधनों के बीच और आज के इस कम्प्यूटर के युग में नौजवानों को जो भत्ता देने की बात कही है, कैसे हम प्रदेश को आगे बढ़ायेंगे इस पर सबको मिलकर गम्भीर विचार करना होगा । जो हमारे प्रदेश का आर्थिक ढाँचा है और जो प्रदेश की जर्जर व्यवस्था है उसके परिप्रेक्ष्य में भी हमको देखना होगा । आज हमारी आबादी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है । नयी सरकार का गठन हो गया है । लेकिन मैं नेताओं को देख रहा हूँ कि हमारे जो वह नेता है वह इस टिप्पणी में लगे हुए हैं कि किसने क्या किया, किसने गन्दा काम किया, किसने अच्छा काम किया । आज सदन में इस बात की बहस होनी चाहिए कि जो हमारे प्रदेश की जर्जर व्यवस्था है, चाहे जिस नाते मिला हो, वह कैसे ठीक हो । हम प्रदेश को कैसे आगे बढ़ाये इसके बारे में विचार करने की आवश्यकता है । आज इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि जो गाँव में गरीब है, किसान है और शोषित है तो आज की परिभाषा इस बात की होनी चाहिए कि गरीब को गरीब माना जाय । चाहे पट्टे का मामला हो, सुख सुविधाओं का मासला हो, गरीब को गरीब माना जाय यह मैं माननीय नेता सदन से कहना चाहता हूँ । गाँव में लोगों को अधिकार दिये जाने चाहिए । निश्चित रूप से तभी सामाजिक समरसता का वातावरण उत्पन्न होगा । हमारे नेता सदन ने जो घोषणाएं की हैं, मैं यह कहना चाहूँगा कि जो सहकारी संस्थाओं का कार्यकाल पले पाँच साल का था उसको घटाकर तीन साल कर दिया गया है इससे निश्चित रूप से चुनाव का बोझ हमारी गरीब जनता पर पड़ेगा । दैनिक जागरण में यह छपा है ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

यह किस तारीख का है ।

डा० विनोद तिवारी–

मान्यवर, परसों के पेपर में है कि जो प्रदेश की शीर्ष संस्थाएं,सहकारी संस्थाएं हैं उनका कार्यकाल पहले पाँच साल था उसको घटाकर तीन साल कर दिया जायेगा ।

श्री घनश्याम शुक्ला–

मान्यवर, इस बात पर गम्भीरता से सोचना होगा कि प्रदेश में नये चुनावों का बोझा आज की तारीख में न पड़े । तो ज्यादा अच्छा रहेगा, मान्यवर, जो हमारे नेता आदरणीय लालजी टण्डन जी ने जो प्रस्ताव पेश किया है उसका समर्थन करता हूँ ।

(व्यवधान)

(लाल जी टण्डन को नेता सदन कहने पर सत्ता पक्ष के लोग हंसने लगे ।)

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री घनश्याम शुक्ला–

हमने माननीय नेता प्रतिपक्ष शब्द कहा है, मैं उनका समर्थन करता हूँ, दूसरी चीज मान्यवर, आज मौर्या जी ने अभी सी०बी०आई० जांच की मांग की है मैं कहना चाहता हूँ पूरे सदन की तरफ से यह ध्वनि मत से पारित होना चाहिए कि पूर्व मुख्यमंत्री के कार्यकाल में जितने भी घोटाले किए गए हैं, उन तक घोटालों की जाँच सी०बी०आई० से कराई जाये । जो हमारे नेता मौर्या जी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, उसकी जाँच होनी चाहिए ।

श्री अध्यक्ष–

उन्होंने यह नहीं कहा कि घोटालों की जाँच होनी चाहिए, उन्होंने कहा कि यदि कोई घोटाला हुआ हो, तो उसकी जाँच सी०बी०आई० से होनी चाहिए ।

श्री घनश्याम शुक्ला–

मैं माननीय नेता सदन से कहना चाहता हूँ कि वह कल्याण सिंह जी से जरा होशियार और सर्तक रहेंगे क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अन्तर है । उन्हें यह भी ध्यान रखना होगा कि पूर्व में जब कल्याण सिंह मुख्यमंत्री थे तो किस तरह से रातों-रात शपथ लेने का कार्यक्रम किया गया था । इन्हीं नेता सदन ने कुछ समय पूर्व विदेशी महिला को प्रधानमंत्री पद पर पहुँचने नहीं दिया था । मान्यवर, हम आपको धन्यवाद देना चाहते हैं आज कांग्रेस के लोग यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि हम किधर जायें इधर या उधर बैठें, वह ब्लैकमेल करने की तैयारी कर रहे हैं । आदरणीय टण्डन जी ने जो प्रस्ताव मान्यवर, पेश किया है मैं उसका समर्थन करता हूँ ।

(व्यवधान)

(शुक्ला जी के अन्तिम वाक्यों को सुनकर सत्ता पक्ष के लोग हँसने लगे )

आदरणीय, टण्डन जी ने जो प्रस्ताव पेश किया है, उसका विरोध करते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ ।

(सत्ता पक्ष के लोग इस बात पर फिर हंसने लगे)

मान्यवर, नेता सदन ने जो प्रस्ताव पेश किया है मैं उसका विरोध करता हूँ ।

श्री अध्यक्ष–

समय की कमी है, सभी लोगों को मौका मिलना चाहिए । कितने लोग प्रस्ताव के समर्थन में बोल रहे हैं, कितने लोग विरोध में बोल रहे हैं, सबको मौका दे देंगे ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है । मान्यवर, कार्य-मंत्रणा समिति की सिफारिश के अनुसार महामहिम राज्यपाल के निर्देशानुसार आज सिर्फ एक प्रस्ताव यहाँ पर प्रस्तुत है, वह है मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करने का प्रस्ताव मेरी जानकारी में .....

श्री अध्यक्ष–

आपकी बात सुनने से पहले ही मैं आपकी बात समझ रहा हूँ । एक कहावत है ''खग जाने खगई की भाषा'' । आप कृपया बैठ जाएं । वकील की भाषा वकील समझ लेता है ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, एक ही प्रस्ताव माननीय मुलायम सिंह जी ने रखा है, विश्वास का प्रस्ताव रखा है । अभी घनश्याम शुक्ल जी बोल रहे थे ।

श्री अध्यक्ष–

आप अनावश्वक समय ले रहे हैं । उनकी जबान फिसल गई थी कि माननीय टण्डन जी के प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ । मैंने उसी समय कह दिया था कि टण्डन जी का कोई प्रस्ताव नहीं है ।

श्री प्रमोद कुमार–

[x x x]

श्री अध्यक्ष–

यह कुछ नहीं लिखा जायेगा ।

*श्री जगदीश नारायण राय–

मान्यवर, मैं माननीय नेता सदन द्वारा रखे गये प्रस्ताव के विरुद्ध बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । मान्यवर, इस पर काफी समय से चर्चा हो रही है पक्ष-विपक्ष से इस पर काफी विचार आये हैं । लेकिन एक चीज देखने को मिली कि सारा वाद-विवाद 16 महीने के कार्यकाल पर है । मान्यवर, यहाँ बहुत वरिष्ठ नेता बैठे हैं बहुत लम्बे समय से इस सदन के सदस्य भी रहे हैं । वे दिल्ली में भी रहे । इस प्रदेश में सत्ता में 1990 में और 1995 में वे रहे तब इस विधान सभा में और प्रदेश में अराजकता का माहौल रहा । 16 महीने के कार्यकाल की जब आप बात कर रहे है तो आपको अपना हाथ भी देखना चाहिए । अपने दिल पर हाथ रखना चाहिए । इस प्रदेश में मान्यवर, हमारी जो सरकार थी यह वह सरकार थी जिसने प्रदेश में कानून-व्यवस्था का राज कायम किया । मान्यवर, जब चौदहवीं विधान सभा के लिए चुनाव हो रहे थे तब नेता सदन जी जब बोलते थे तो यही सुनने को रेडियो और टी०वी० पर मिलता था कि हम किसी गुण्डे बदमाश को टिकट नहीं देंगे । लेकिन आज जो माननीय नेता सदन की जो सरकार है, वह उन्ही के बल पर बन रही है ।

मान्यवर, नेता सदन धर्म-निरपेक्षता की बात बार-बार करते थे लेकिन आज क्या बात हो गई कि आप के मुख से एक बार भी धर्मनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग नहीं हुआ । जब से आप प्रदेश के मुख्यमंत्री हुए हैं । जो आपकी मजबूरी है उसको प्रदेश और देश की जनता समझ रही है । माननीय आजम खां साहब मंत्री हो गये हैं विपक्ष के नेता भी रहे उन्होंने नेता विपक्ष के रूप में साल भर केवल बाबा साहब

---

नोटः– [xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

अम्बेडकर के अपमान के ही शब्द यहां कहे, जनता के दुःख दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा । आज सत्ता में बैठकर भी वह वैसी ही बातें कर रहे हैं । उनको शर्म आनी चाहिए । जो अम्बेडकर उद्यान बना है वह मायावती जी का व्यक्तिगत नहीं है बहुजन समाज पार्टी की कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं बनी है । आपको आरोप लगाने से पहले शर्मसार होना चाहिए । आप वरिष्ठ व्यक्ति हैं कोई किसी का मंदिर है, मस्जिद है, कोई आस्था का प्रतीक बनाता है, वह उद्यान लाखों दलितों, गरीबों की आस्था का प्रतीक है । आपको इस तरह से आरोप नहीं लगाना चाहिए । पहले आप अपनी गिरेबान में झांक कर देखें कि इस प्रदेश को आपने क्या दिया । नेता विरोधी दल के रूप में कौन सा विकास का प्रश्न उठाया । हमारी सरकार अच्छी तरह से काम कर रही थी प्रदेश में दलितों के विकास का एजेण्डा लागू कर रही थी । हमारी सरकार ने जबरदस्त तरीके से इस प्रदेश में काम किया है । दूसरी बात यह कही गयी कि नौकरशाही का मनोबल गिराया गया है । आज नौकरशाही की क्या स्थिति है । इस बात पर बात होनी चाहिए । हमारी सरकार में जिलों में कलेक्टर 10 बजे से 12 बजे तक बैठकर जनता का दुःख दर्द सुनते थे, लेकिन जब से सरकार बदली है कोई नहीं मिलता ।

(इस समय 6 बजकर 25 मिनट पर अधिष्ठाता श्री माता प्रसाद पाण्डेय पुनः पीठासीन हुए)

श्री जगदीश नारायण राय–

इस सरकार के बनने के बाद वह मुख्यालय पर बैठना बन्द कर दिये हैं मैं चाहूंगा कि दलगत भावना से ऊपर उठकर यह करायें कि सभी जिलाधिकारी और अधिकारी मुख्यालय पर बैठें । इन अच्छी व्यवस्थाओं को स्वीकार किया जाए । आपसे आशायें हैं, आपने अच्छी बात की है, इसको स्वीकार करिये । हमारे साथियों को तोड़ा गया है और तोड़कर सरकार बनायी गयी है । अगर आपके पास बहुमत था तो पहले सरकार क्यों नहीं बना ली ?

(अनेक सदस्यों के एक साथ खड़े होकर बोलने का प्रयास करने पर व्यवधान)

मान्यवर, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का विरोध करता हूँ ।

* कुंवर रघुराज प्रताप सिंह, राजा भैया–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, आपको धन्यवाद । नेता सदन द्वारा लाये गये विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । एक कहावत है सूप बोले तो बोले छलनी का बोले जिसमें 72 छेद । यह धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ा रहे हैं । आज चाहे अतीक अहमद हों, धनन्जय सिंह हों या अखिलेश सिंह हों जितने विधायक हैं वह आप बीती बताने लगें तो दो-चार दिन लग जायेंगे । मान्यवर, हम अपनी आप बीती बताकर सहानुभूति अर्जित करने के लिए नहीं खड़े हुए हैं । जो काला अध्याय इन लोगों ने शुरू किया है, उसके लिए जनता इनको सबक सिखायेगी । आप कह रहे हैं कि 37 विधायक तोड़कर चले गये हैं तो वह तोड़े नहीं गये हैं, वह धनबल और बाहुबल से नहीं गये हैं । इन 37–40 विधायकों का इन्टरव्यू ले लीजिये आपको पता चल जायेगा । अभी पता नही कितने और विधायक जाने को तैयार

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हैं । अधिष्ठाता महोदय, अभी स्वामी प्रसाद मौर्य जी ने कहां कि जेल से बिना अदालत की अनुमति लेकर कुछ लोग आ गये हैं तो पहले तो इस बात को बताया जाए कि वह कौन से विधायक हैं जो जेल से बिना अदालत की अनुमति से आ गये हैं ? मौर्य जी इसको स्पस्ट करें । यह आरोप लगा रहे हैं यह मैं बैठे-बैठे सुन रहा हूं । जनता सुन रही है, क्या-क्या कृत्य आपके रहे हैं । मान्यवर, हम लोगों के घर पर जानवर, कुत्ता, बिल्ली, घोड़े तक नहीं बचे हैं सबको मारा गया है । पिछले 11 माह से एक टीन की कोठरी में जो एक गोदाम था उसमें मुझे रखा गया है । एक स्पेशल जी०ओ० गृह विभाग का हुआ कि इनको कोठरी से बाहर न निकाला जाए । हम सब जानते हैं कि अगर किसी के ऊपर मुकदमा कायम हुआ है तो 14 दिन के अन्दर उसे बाहर लाया जाता है । मान्यवर, 504, 506, 323 धाराओं का मुकदमा जिसमें तीन माह की सजा है और मुझे 11 माह हो गये हैं जमानत नहीं हो पायी है । मैं आभारी हूं माननीय मुलायम सिंह यादव जी का, अमर सिंह जी का समाजवादी पार्टी का और कार्यकर्ताओं का जिन्होंने सड़क पर जाकर हम लोगों की लड़ाई लड़ी है । पूरी फोर्स, पूरी पुलिस पार्टी को हटा दिया जाता था । रास्ते में जोखिम मारने का यहां 8-10 विधायक बांदा और झांसी एस्कोर्ट करके लाते थे । आज आप लोग लोकतंत्र की बात कर रहे हैं धर्म निरपेक्षता की बात कर रहे हैं, मुलायम सिंह जी को कोई जरूरत नहीं है धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने की, अपने आपको स्पष्ट करने की । मौर्या जी आ गये हैं इनसे पूछा जाय कि वह कौन से लोग हैं कौन से विधायक हैं जो न्यायालय की अनुमति के बिना जेल से आ गये हैं । इसके लिए यह दोषी हैं अगर यह नहीं बता पाते तो इसे कार्यवाही से हटा दिया जाय । आज अखिलेश सिंह के घर के दरवाजे खिड़की निकाल लिये गये । हम लोगों को बहुत कुछ सहना पड़ा है । हम लोगों को नैनी जेल भेजा जाता था, सुबह से खाना नहीं दिया जाता था और वहां पहुंचने पर खाना नहीं मिलता था । रास्ते में 40-45 लोगों ने नारा लगा दिया सभी लोगों पर गैंगेस्टर लगा दिया गया क्योंकि उन्होंने मुझे पानी पिला दिया था । हम विश्वासमत के समर्थन में खड़े हुए हैं आगे के 20 साल तक आप लोग सत्ता में आने का ख्वाब मत देखिये । आज पूरे प्रदेश की जनता को यह सन्देश जाना चाहिए कि क्या-क्या व्यवहार हम लोगों के साथ किया गया है । हम लोगों को जो खाना दिया जाता था, चपरी की दाल, जिस पर स्वास्थ्य विभाग ने बैन लगा रखा है, हम लोगों को वह दाल खिलायी गयी है । लेकिन हां ठीक है, ईश्वर की कृपा से सत्य की जीत हुई है और हमें विश्वास था कि हम लोग जीतेंगे, लाखों माताओं बहनों का आशीर्वाद हमारे साथ था । आप जल्दी से जल्दी मतदान कराइये आप घर जाइये और हमें विजय का जश्न मनाने दीजिए, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री अम्बिका चौधरी–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय नेता सदन द्वारा मंत्रि-परिषद् के प्रति विश्वास प्रकट करने का जो प्रस्ताव रखा गया है और उस प्रस्ताव के समर्थन में जितने सदस्यों ने आज की चर्चा में हिस्सा लिया, औपचारिक तौर पर विरोध की बात छोड़ दी जाय तो सबने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है । इतनी लम्बी चर्चा इतनी देर से चल रही है । मैं बहुत लम्बी बात नहीं कहना चाहता हूं सिर्फ दो-तीन बातें जो भ्रम फैलाने का काम कर रही है उन्हीं को स्पष्ट करूंगा । विपक्ष के साथियों के पास एक भी कारण ऐसा नहीं था जिसको वह कह सकते कि इसके लिए हम विरोध करते हैं । उन्होंनें एक बात कही कि जो हमने किया वही आप भी कर रहे हैं । कल्याण सिंह जी ने कहा कि गठबंधन की राजनीति का यह कालखण्ड है, हमारी गठबंधन सरकार जिस तरीके से विश्वास मत हासिल करने जा रही है । उस गठबन्धन में और

दूसरा एक गठबंधन जिसमें माननीय नेता विरोधी दल इनकी पार्टी ने और माननीय पूर्व नेता विरोधी दल जो परसों तक थे, माननीय स्वामी प्रसाद मौर्य जी, इनकी पार्टी ने गठबंधन किया था। आज जो हमारा गठबंधन है, इन दोनों में बड़ी भिन्नता है, मौलिक भिन्नता यह है कि जिस दिन मायावती जी को शपथ लेना था, उस दिन दोनों ने अलग-अलग प्रेस कान्फ्रेंस की और यह कहा कि हमारा कोई वैचारिक साम्य नहीं है, बहुजन समाज पार्टी ने भी कहा कि हमारा इनसे कोई वैचारिक साम्य नही है, हमारी नीतियां अलग-अलग हैं और एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर हम एक सरकार में आये हैं। यह सरकार इतने दिन तक चलने के बाद पिछली 25 तारीख को समाप्त हो गयी। प्रदेश की जनता और राजनीति के विश्लेषक और विद्वान यह ढूढते रहे कि यह न्यूनतम साझा कार्यक्रम क्या था ? लेकिन इन लोगों ने कभी ठीक से बताया नहीं कई बार इनकी समन्वय समिति बैठी, कई बार पूछा गया कि यह न्यूनतम साझा कार्यक्रम क्या है, लेकिन बताया नहीं गया। इनका न्यूनतम साझा कार्यक्रम सिर्फ एक था कि इस प्रदेश को बेरहमी से लूट ले और कोई दूसरा न्यूनतम साझा कार्यक्रम नहीं था। इस लूट कार्यक्रम में एक दूसरे को रोक पाने की स्थिति में कोई भी नहीं था। हमारे गठबंधन में जितने दल और सहयोगी हैं सब में वैचारिक साम्य है। यह प्रदेश महान प्रदेश है और माननीय नेता सदन ने सुबह विश्वास मत प्रस्ताव को रखने के क्रम में अपनी बात जब रखी थी तो कई महानुभावों के नामों का उल्लेख किया था। पं० गोविन्द बल्लभ पंत, चौधरी चरण सिंह, श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा जी, डा० सम्पूर्णानन्द जी, इन्हीं व्यक्तियों की कड़ी में रफीकुल-मुल्क धरतीपुत्र माननीय मुलायम सिंह यादव जी पुनः नेता सदन की कुर्सी पर विराजमान हुये हैं। बगैर किसी की आलोचना किये बगैर किसी पर आक्षेप लगाये, कहना चाहता हूं कि हम किसी के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर नहीं आये हैं। केवल एक मूल कारण हैं कि उत्तर प्रदेश की पटरी से उतरी हुयी गाड़ी को विकास के रास्ते पर लाने के लिये बहुत भरोसे से, साफ दृष्टि से, अपनी योजना के प्रति क्रियान्वयन की संकल्पबद्धता के साथ माननीय मुलायम सिंह यादव जी की सरकार ने अपने उत्तरदायित्व को ग्रहण किया है, वही पर्याप्त है कि इस सरकार को सर्वसम्मत तरीके से विश्वासमत प्राप्त हो। चुनाव घोषणा पत्र में जितनी बातें समाजवादी पार्टी द्वारा कही गयी थीं, हम लोगों ने उनको केवल वायदे के रूप में नहीं लिया है बल्कि प्रतिज्ञा के रूप में लिया है। इसीलिये शपथ लेने के तत्काल बाद जो घोषणायें माननीय मुलायम सिंह यादव नेता सदन ने की थीं, वह मात्र घोषणायें नहीं थीं। अभी उनका अनुपालन होना शेष नहीं है, वह सब तत्काल पूरी हो गयी और हम यह आश्वस्त करना चाहते हैं कि जिसकी दृष्टि इतनी साफ हो, जिसका संकल्प इतना मजबूत हो, वही आज नेता सदन हैं। आप ध्यान रखियेगा कि अलग-अलग लोगों की अलग-अलग पहचान होती है और हिन्दुस्तान में और हिन्दुस्तान के बाहर सबसे ज्यादा कथनी और करनी एक होने के कारण से यदि कोई जाना जाता है तो उस का नाम जो मुलायम है। जो कहा, वह करके दिखाया और जिसने कभी न झुकना सीखा, उसका नाम मुलायम है, उन्होंने ही आज इस सदन में विश्वास का प्रस्ताव रखा है। इस पूरे सदन को इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित करना चाहिये। जब पूरा प्रदेश जल रहा था और मैं यह बात जोर देकर कहना चाहता हूं कि 25 तारीख को जब साझे की सरकार चली गयी, जिसमें भारतीय जनता पार्टी साझीदार थी तो सबसे पहले भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में मिठाई बांटी गयी। इसीलिये यह बात कहना चाहता हूं कि इस बात से गांव का गरीब बहुत खुश हुआ, यहां का रिक्शा चलाने वाला खुश हुआ, रैन बसेरा में रहने वाला खुश हुआ क्योंकि उस समय पूरा प्रदेश जल रहा था और जैसे किसी बस्ती में आग लगी हो, और कोई दो बाल्टी पानी लेकर आग बुझाने पहुंच जाता है तो उसकी जाति नहीं पूछी

जाती । यह नहीं कहा जाता है कि तुम दूसरी जाति के हो और तुम दो बाल्टी पानी लेकर क्यों आये हो, उसी तरह हम सभी से कहना चाहते हैं । मान्यवर, उत्तर प्रदेश को विकास के रास्ते पर ले जाना है । सबका सहयोग नेता सदन ने मांगा है । हम आपकी जाति नहीं पूछेंगे । आप सब आईये इस यज्ञ में शामिल होईये और प्रदेश को विकास के रास्ते पर ले जायं ।

(श्री सुखदेव राजभर ने कहा कि मिलकर मंदिर बनवाइये)

बजट सत्र में कुमारी मायावती जी ने यह बात नहीं कही है । वैसे देखा जाय तो कौन सा सत्र और कौन सी बात । वर्ष 2002 में 7 सितम्बर को यह सदन अनिश्चितकाल के लिए उठा था । मार्च, 2003 में दो दिन के लिए सत्र हुआ । आज 8 सितम्बर है, 7 सितम्बर 2002 और 8 सितम्बर, 2003 के बीच कुल 4 दिन का सत्र चला । दो दिन सत्र चलने का नाटक हुआ, एक दिन शोकसंवेदना में गया और आज चौथा दिन है । ये प्रदेश की किस समस्याओं की बात करते हैं, किस लोकतंत्र की बात करते हैं । माननीय सदन की स्थापित परम्पराओं को रौंदने का ही नहीं बल्कि नष्ट करने का काम किया है और चन्द टुकड़ों के लिए किया है । क्या कारण थे जो इस प्रकार के फैसले कुमारी मायावती जी ने लिये, उन फैसलों का आधार क्या था ? प्रदेश को लूट लेना, सरकारी सम्पत्तियों को न सिर्फ बेंच देना तथा रुपया बटोरने के अलावा कोई दूसरा कारण नहीं था । कोई राजनीतिक कारण होता तो राजनीतिक तरीके से उसका उत्तर देने का प्रयास करता । लेकिन मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ महामहिम राज्यपाल महोदय को इस बात के लिए कि एक ऐसी स्थिति से प्रदेश को निकालते हुये इस सरकार का गठन करने के लिए माननीय मुलायम सिंह यादव जी को न्यौता दिया । चन्द लोगों ने सहयोग करके इस सरकार को मजबूती देने काम किया है, जहाँ उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ वही अपनी सरकार से एक मांग करना चाहता हूं कि आपने कह दिया है कि बदले की भावना से कोई कार्यवाही नहीं होगी, इसका हम स्वागत करते हैं किन्तु एक बात जरूर कहना चाहते हैं कि इस प्रदेश को बरबाद करने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाही हो । ऐसी जनता की भी इच्छा है और जनता की इच्छा को बड़ी विनम्रता से रखना चाहता हूँ । चाहे एनेक्सी के पंचम तल पर बैठकर अधिकारी या अधिकारियों से इधर हटकर जिन लोगों ने प्रदेश को नष्ट करने, बेचने का, लूटने का काम किया है उनके साथ कोई रियायत नहीं होनी चाहिए । यह रियायत इसलिए नहीं होनी चाहिए क्योंकि निर्दोष लोगों–अतीक भाई, राजा भैय्या, धनन्जय सिंह, अखिलेश सिंह सहित ऐसे हजारों लोग हैं जिनको जेल की सीखचों के पीछे डालकर, उनकी सम्पत्ति को बरबाद कर, परिजनों को अपमानित कर तोड़ने का काम किया गया है । उनको किसी प्रकार की माफी नहीं होनी चाहिए । मैं यह मांग अपनी सरकार से करता हूँ । जिस सरकार ने बिना बजट पास किये अरबों रुपये लूटे यह गम्भीर अपराध है । अन्त में सिर्फ दो बातें एक मिनट में कहना चाहता हूँ । आंकड़ों को देने की कोई आवश्यकता नहीं थी । उनका उल्लेख मात्र कर रहा हूँ । एन०सी०आर०बी० का आंकड़ा है जो अपराधों को रखने का काम करती है, 60 फीसदी अपराध कम करके आंकड़े भेजे जायं, यह पिछली सरकार के निर्देश थे । प्रदेश में कहीं एफ०आई०आर० दर्ज नहीं हुयी लेकिन जो अपराध छिपाये नहीं जा सकते थे जैसे बैंक डकैती उसकी एफ०आई०आर० होनी थी । बैंक डकैती तथा हत्याओं का अपराध छिपाना सम्भव नहीं था जबकि कुछ हत्याओं की एफ०आई०आर० दर्ज नहीं हुई तब भी पिछले 10 वर्षों के मुकाबले औसत आंकड़े में 27 फीसदी की वृद्धि एक साल में हुई है । अपहरण के जितने मामले दर्ज हुये हैं उसमें उत्तर प्रदेश पूरे देश में अव्वल हो गया है । बिहार की बात रोज कहते हैं, बिहार के मुकाबले

आपके यहां अपहरण पौने 2 गुने अधिक दर्ज हुये हैं । आपने आर्थिक स्थिति की बात कही, समय आयेगा तो मैं आपको विस्तार से बताऊँगा लेकिन रिजर्व बैंक ने जो बी०एस०आर० जारी की है आल इण्डिया की उसके मुताबिक मुलायम सिंह यादव जी जब 3 जून, 1995 को सरकार के मुखिया नहीं रहे थे तानाशाही की चलते तो उस समय उत्तर प्रदेश की डिपाजिट ग्रोथ रेट 18.90 प्रतिशत थी और देश की 18.2 प्रतिशत थी । मार्च, 93 में उत्तर प्रदेश की ग्रोथ रेट 16.47 प्रतिशत थी और देश की 16 प्रतिशत थी । इन दोनों वर्षों में प्रदेश का प्रतिशत पूरे देश के प्रतिशत से आगे था । जब कुमारी मायावती छोड़कर गयीं, पिछला वित्तीय वर्ष जब समाप्त हुआ 31 मार्च को और रिजर्व बैंक ने जो हिसाब निकाला उसके अनुसार उत्तर प्रदेश की डिपाजिट ग्रोथ रेट 10.30 प्रतिशत रह गयी है और पूरे देश की 16.55 प्रतिशत है । (शेमशेम की आवाजें) तो उस समय और इस समय में यह फर्क है । इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि जो विश्वासमत माननीय नेता सदन ने रखा है उसको सर्वसम्मति से पारित किया जाय । उत्तर प्रदेश बहुत पीछे चला गया है । 10 वीं पंचवर्षीय योजना के लिये विकास का लक्ष्य 8 प्रतिशत था जो 3.1 प्रतिशत तक चला गया है इससे ज्यादा शर्मनाक स्थिति और कोई नहीं हो सकती । उत्तर प्रदेश का जो गौरवशाली अतीत रहा है, हमने सबसे ज्यादा प्रधानमंत्री दिये हैं । यह सूर का उत्तर प्रदेश है, कबीर का उत्तर प्रदेश है, तुलसी का उत्तर प्रदेश है, इन सबके उत्तर प्रदेश का गौरव लौटाना है और एक नया उत्तर प्रदेश ले आना है । एक बात का बार-बार जिक्र आया है इसलिये मैं स्पष्ट कर दूं कि 21 अक्तूबर की घटना हुयी, मेरे बगल में कुमारी मायावती बैठीं थीं प्रमोद तिवारी जी बगल में थे, उस समय अतीक भाई ने कहा कि उस दिन आपकी आंखों में आंसू थे तो कुमारी मायावती ने कहा कि मैं वह लड़की नहीं हूँ जिसकी आंखों में आंसू हों । मैं तुम्हारे जैसे लोगों की आंखों में आंसू ला सकती हूँ और उन्होंने उनके साथ जो सुलूक किया वह किसी से छिपा नहीं है । श्रीमन् यह गौतमबुद्ध का देश है अगर शासक के हृदय में करुणा और आंखों में पानी नहीं होगा तो उस दल को शासन करने का अधिकार नहीं है । कुमारी मायावती क्रूर महिला थीं उन्होंने जो किया उस कुत्सित अध्याय को विस्मृत करके एक नया प्रदेश और एक नया हिन्दुस्तान बनाने की आज आवश्यकता है । इसलिये जो माननीय नेता सदन ने प्रस्ताव रखा है उस प्रस्ताव को पूरी तरह से, सर्वसम्मति से, सदन पारित करे यह आपसे प्रार्थना है । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

डा० विनोद तिवारी–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, आपने माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत पर बोलने के लिये अवसर दिया उसके लिये मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं । मैं विश्वास मत का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं ।

* श्री नरेन्द्र सिंह वर्मा–

मान्यवर, मेरी बात सुन लें । मेरा आपसे यह निवेदन है कि यह जो प्रस्ताव विश्वास मत का रखा गया है ....

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अधिष्ठाता–

आप बैठ जायं ।

डा० विनोद तिवारी–

जिस दिन शपथ ग्रहण की उसके बाद प्रेस कांफ्रेंस में कई घोषणाएं की थीं उसमें एक महत्वपूर्ण घोषणा यह भी थी कि यह सरकार बदले की भावना से कोई कार्य नहीं करेगी । मैं परसों दैनिक जागरण में जो छपा है उसकी तरफ मुख्य मंत्री का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं उसमें यह विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है कि उत्तर प्रदेश की सहकारी शीर्ष संस्थाओं और जिलों में सहकारी बैंकों, प्रो०सी०डी०एफ० जो उपभोक्ता समितियां हैं जिनका कार्यकाल पांच साल है उनका कार्यकाल पांच साल से घटाकर तीन साल कर दिया जाएगा । मैं मुख्य मंत्री जी को याद दिलाना चाहता हूं कि जब वह इसके पहले मुख्य मंत्री थे तब उन्होंने ही पांच वर्ष का कार्यकाल किया था अब कार्यकाल घटाने की बात कही जा रही है । मैं मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि बदले की भावना से ग्रसित होकर इस कार्य को न करें । इनका कार्यकाल पांच-छह महीने बाद स्वतः समाप्त हो जाएगा । आप स्वयं ऐसा कार्य न करें जिससे गलत संदेश जनता में जाए कि सरकार बदले की भावना से काम कर रही है । मैं मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि वह जब अपना उत्तर देंगे तो इसके बारे में कुछ स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे । इसी के साथ मैं विश्वास के प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

श्री नरेन्द्र सिंह वर्मा–

अधिष्ठाता महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं । सुबह से सदन में बड़ी गम्भीर चर्चा चल रही है मुझे तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी की ओर से जीतकर सदन में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । विगत 16 महीनों से भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की सरकार गठित हुई थी उसके खिलाफ उसके कार्यकलापों के खिलाफ हमने आवाज उठाई कुछ वजहों से यह आवाज उठाई । उस सरकार ने राजा भैय्या, धनन्जय सिंह, अतीक भाई को जेल में भेज दिया यही नहीं पिछले 15 महीनों में प्रदेश के लाखों लोगों पर फर्जी गैंगस्टर, गुण्डा ऐक्ट, एन०एस० ए० लगाकर जेल भेज दिया गया । हम लोगों के थानों से रिकार्ड ढुंढवाए गए । उन 16 महीनों में बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने जो अलोकतांत्रिक कदम उठाए उनका हमने पार्टी के भीतर और पार्टी के बाहर विरोध किया कभी हमें बागी कहा गया कभी कुछ कहा गया गया । विगत 16 माह में हम विधायक अपने-अपने क्षेत्र से चुनकर आते हैं हमसे कुछ अपेक्षाएं होती हैं विगत 16 माह में आतंक का राज कायम किया गया अघोषित इमरजेंसी लागू की गई । भारतीय जनता पार्टी गलती माने या न माने लेकिन मैं इसके लिए भारतीय जनता पार्टी के विधायक की हैसियत से पूरे प्रदेश की 18 करोड़ जनता के सामने माफी मांगता हूं । विगत 16 माह में जो गड़बड़ियां हुई हैं उसके लिए मेरा दल माफी मांगे या न मांगे मैं माफी मांग रहा हूं । इमरजेन्सी जैसा संकट हो गया था । मैं चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी दल के लोग भी जो पिछले 16 महीनों में गल्तियां की गई हैं उसके लिए प्रदेश की महान जनता से माफी मांगे । मैं जहां से जीतकर आता हूं वहां की जनता को अपेक्षाएं होती हैं । मैं कोई भेड़ बकरी या मुर्गा नहीं हूं कि अपनी बात सदन में न रखूं । विगत 16 माह में हम लोगों को एक नल नहीं दिया गया पांच-पांच गांव के विद्युतीकरण की बात थी एक गांव नहीं दिया गया किसी मंत्री को दे

दिया गया हो यह अलग बात है । हम लोग एक-एक किलोमीटर सड़क के लिए तरसते रहे । सोते और जागते में भी जब क्षेत्र गये, गांव गये तो अम्बेडकर गांव, अम्बेडकर सड़क, अम्बेडकर विद्यालय ही दिखाई दिये । पेंशन चाहे वह विधवा पेंशन हो, विकलांग पेंशन हो सब अम्बेडकर गांव में गयी । नाली, सड़क, बिजली सब अम्बेडकर गांव को गयी । जब हम महमूदाबाद से लखनऊ को आये जो हमारे यहां फैक्ट्री में गन्ना किसानों का 29 तारीख तक 21 करोड़ रुपया बकाया था । मैं आभारी हूं माननीय मुख्य मंत्री जी का कि 5 करोड़ 80 लाख रुपये वहां पहुंच गया । मैं टण्डन जी से भी कहता रहा उन गरीब किसानों के गन्ना मूल्य के बारे में कि हम गांव से जुड़े विधायक हैं हम उनकी समस्या अच्छी तरह से जानते हैं । मान्यवर, पिछली सरकार में हमको बिजली नहीं मिल रही थी, मैं आभारी हूं माननीय मुख्य मंत्री जी का कि हमको 14 घण्टे बिजली बहुत दिन बाद हमारे क्षेत्र में उपलब्ध करायी गयी है । हम लोग एक नल के लिए तरस गये हैं हमारे क्षेत्रों में एक भी नल नहीं लगा है । अभी एक सप्ताह पूर्व सरकार बनी है । मेरा निवेदन है कि दलीय बन्धन में पड़कर सत्ता पक्ष में विश्वास न किया जाय । मैं यह चाहता था कि विधायकों को उनकी अर्न्तरात्मा की आवाज सुनकर उनको पक्ष और विपक्ष में मत देने का, बोलने का अवसर दिया जाता तो स्वच्छ लोकतन्त्र का निर्माण होता । अगर निर्देश होगा तो सरकार के पक्ष में मत डाल दूंगा । आपने कुछ घोषणायें की हैं उनके बारे में हमारे कुछ सुझाव भी हैं आप उनको भी सुनें और देखें । इस सदन के सभी विधायक एक-एक बूंद को तरस गये हैं । हमारे क्षेत्र की जनता प्यासी है । आपका सारा पानी, सड़क, विद्यालय, पेंशन और जो योजनायें हैं वह सब अम्बेडकर गांव को चले गये । मैं यह नहीं कहता कि जिन अम्बेडकर गांवों में काम हो रहा है वहां काम रुक जाय लेकिन जिस तरह से अम्बेडकर गांव में लोग रहते हैं, पशु रहते हैं, वहां आवश्यकता है उसी तरह से और क्षेत्रों में भी लोग रहते हैं, मानव हैं, पशु हैं और उनकी भी जरुरतें हैं ; हम विधायकों के क्षेत्रों में भी हैण्ड पम्प दिये जायं । मैं बसपा के साथियों से कहना चाहता हूं कि उनका भी भला होगा । मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जिस तरह से पांच-पांच गांव पहले विधायक को मिलते थे बिजली के लिए उस तरह से फिर दिया जाय । हम यह भी चाहेंगे कि जिला प्लान में विधायकों से सड़कों का प्रस्ताव पहले लिया जाता था वह फिर लिया जाय । 16 महीने से अम्बेडर गांव के लिए ही प्रस्ताव लिये गये हैं । हम सब बाकी विधायक तो गूंगे बहरे बैठे रहे हैं । टण्डन जी पांच-पांच किलोमीटर डामर रोड देने की बात कही गयी थी लेकिन किसी को एक किलोमीटर सड़क नहीं मिल पाई । हम इसके लिए टण्डन जी को दोष नहीं दे रहे हैं । उन्होंने प्रयास किया लेकिन वहां पर किसी की सुनी ही नहीं गयी । मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि आपने जो भी घोषणायें उत्तर प्रदेश की महान जनता के लिए की हैं मैं चाहूंगा कि दलगत राजनीति से उठकर वह ठीक हों तो हमको उसका स्वागत करना चाहिए और हमको आपको सुझाव भी देना चाहिए ।

श्री अधिष्ठाता–

अब समाप्त करें ।

श्री नरेन्द्र सिंह वर्मा–

आपके पीछे माननीय चौधरी साहब ने कहा यह सही है कि उत्तर प्रदेश का मतदाता आपसे कुछ अपेक्षा रखता है । मैं बहुत जूनियर विधायक हूं यह नहीं कहता कि आप बदले की भावना से काम करें । राजा भैय्या, धनंजय सिंह को जेल में तंग कोठरी में रखा गया । मैं राजा भैय्या से मिलने बांदा गया था नहीं मिलने दिया गया । मैं इतना निवेदन करना चाहता हूं कि यह लोग परेशान केवल इसलिए हैं कि कल कहीं यह भी उन तंग कोठरियों में न पहुंच जायं । मैं अनुरोध करूंगा कि चोरी हमने की है तो हमारे खिलाफ कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए । अगर किसी ने अपराध किया है तो उसके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए । पूर्व सरकार की मुखिया ने जिस तरह से दलगत राजनीति की भावना से जिन विधायकों, सांसदों और प्रदेश की 17 करोड़ जनता के साथ खिलवाड़ किया है उनके साथ बदले की भावना से नहीं लेकिन अपराध किया है तो दण्ड मिलना चाहिए और इस पात्रता का पात्र वह लोग न बनने पायें कि बेचारी बन्द कर दी गयी, बेचारा बन्द कर दिया गया बेचारी ने कुछ किया होगा तो कोर्ट उसमें करता आपको करने का अधिकार नहीं था । माननीय अधिष्ठाता महोदय ने बोलने के लिए समय दिया इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं और दल के निर्णय के अनुसार सरकार के खिलाफ मतदान करता हूं ।

* श्री जय प्रकाश यादव–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं बहुजन समाज पार्टी के नेतागणों और भाइयों से यह पूछना चाहता हूं कि मेरे साथ जो जुल्म हुआ पूरे प्रदेश के अन्दर एक भी मुकदमा मेरे खिलाफ नहीं था अगर कोई भी साबित कर दे तो जो सजा माननीय अधिष्ठाता महोदय देंगे कबूल करने को तैयार हूं । न कोई जुर्म किया न कोई अपराध किया एक दिन मीटिंग में लेट हो गया, मैं इन नेताओं को बताना चाहता हूं कि जो दलाल किस्म के लोग हैं जो इस पार्टी को खा जायेंगे बहन मायावती चली गयीं, भाई लोग भी चले जायेंगे तो अच्छा हो....

(व्यवधान)

यह हमारे हमदर्द हैं मैं इनका हमदर्द था, भाई था । मैंने कहा मैंने क्या गुनाह किया है ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया, प्रदेश में उत्पीड़न हो रहा था उसकी वजह से एक घण्टे लेट हो गया तो एस०एस०पी० से कहा गया कि इनके खिलाफ मुकदमा कायम कर दो, मेरे साथ जो प्रतिनिधि थीं वह बेहोश हो गयी मैं श्रीमान् बताना चाहता हूं कि मैंने ऐसा कोई गुनाह नहीं किया मैंने जो कहा गलत नहीं कहा है किसी के अन्दर ताकत नहीं थी, मुख्य मंत्री जी के खिलाफ बहन जी के खिलाफ कोई आवाज उठाता, मैंने सच्चाई कही थी, मैंने कोई जुल्म नहीं किया था, मैंने कोई कत्ल नहीं किया था, मैं सच्चाई बता रहा हूं मुझे खुली सड़क में सर्दियों में खुले ट्रक में ले जाया जाता था जेल में मुझे कम्बल नहीं देते थे और यह सिद्धान्त की बात कर रहे हैं, गुण्डागर्दी की बात करते हैं जिस व्यक्ति पर कोई मुकदमा पूरे प्रदेश में न हो उस पर गुण्डा एक्ट, रासुका, गैंगस्टर लगाया गया । क्या यह न्याय है ? (व्यवधान)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

इस तरह से मुझे प्रताड़ित किया गया, कम्बल नहीं दिया गया । कैलाश नाथ यादव जी मेरे पास जेल में दो बजे तक बैठे रहे मेरे भाई बैठे हैं उन्होंने कहा मुख्य मंत्री जी से टक्कर ले रहा हूं । मैंने कहा मेरी हत्या हो जाएगी इससे ज्यादा कुछ नहीं हो सकता है इसके अलावा कोई फारमूला हो तो बता दें । मैंने गुनाह नहीं किया इसलिए मैंने कोई जुर्म नहीं किया .....

श्री राजेन्द्र सिंह चौहान–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय नेता सदन मुलायम सिंह यादव जी ने जो अपने मंत्रि-मण्डल के विश्वास मत का प्रस्ताव रखा है, उसके पक्ष में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । आपने मुझे अनुमति दी, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं । मान्यवर, मैं बसपा छोड़कर सपा में आया हूं । बसपा ने क्या-क्या अत्याचार किये हैं, हम जो 40 विधायक आये हैं, बेहतर जानते हैं कि बसपा में अन्दर क्या है, बाहर क्या है ? मौर्य जी ने एक दिन जयचन्द की औलाद कहा । मान्यवर, वहां बोलने की अनुमति नहीं थी । कसम जब खाई जा रही थी, हम 5 लोगों ने कसम नहीं खायी, हमसे कहा गया कि कितने बच्चे हैं,मैंने कहा 6 बच्चे हैं, मैंने कहा कि बच्चों की कसम खाकर राजनीति नहीं की जाती है । मैं बताना चाहता हूं कि [xxx]

(बसपा के कई सदस्यों के एक साथ खड़े होकर बोलने पर घोर व्यवधान)

मान्यवर, मैंने वहां कसम नहीं खाई लेकिन आज इस पवित्र सदन के अन्दर कसम खाकर कह सकता हूं कि 2 लाख रुपये हम लोगों से जन्म दिन के रूप में लिया जाता था और 6 लाख रुपये लेकर मुझे टिकट दिया गया, इसकी मैं कसम खा सकता हूं । किस तरह के ये पापी लोग हैं । मैंने अपने माता-पिता से भी माफी मांग ली है और पूरे सदन से माफी मांगता हूं कि मैं भी इन पापियों के साथ भी एक पापी था इसलिए मैं सदन से माफी माँगता हूं । इसलिए मैं चाहता हूं कि 17 करोड़ जनता तक भी मेरी भावनायें पहुंचा दें जिससे वह भी मुझे माफ कर दे । मैं एक घटना सुनाना चाहता हूं, वास्तविक घटना है । मैं एक बार सो रहा था, कोई 4-5 बजे का समय रहा होगा, मुझे सपने आ रहे थे, सपने में 5 कालीदास मार्ग पर बहन जी मीटिंग ले रही थीं, मुझसे स्पष्टीकरण मांगा जा रहा था और मैं सपने में ही हां बहन जी, जी बहन जी, कह रहा था । मेरी पत्नी बगल में ही पड़ी थी, उसने यह सुनकर मुझे हिलाया और कहा कि क्या कह रहे हो ? ऐसी स्थिति थी । मैं हड़बड़ा कर उठा और मायावती समझ कर अपनी पत्नी के पैर पकड़ लिए पत्नी ने कहा क्यों-क्या कर रहे हो । मैंने कहा जी बहन जी हां बहन जी ।

(सत्तापक्ष के कई सदस्यों के एक साथ हँसने पर व्यवधान)

मान्यवर, माननीय नेता सदन द्वारा जो विश्वास मत का प्रस्ताव रखा गया है मैं उसके समर्थन में बल देता हूं और अपनी बात समाप्त करता हूं । पूर्व सरकार की आलोचना मैं नहीं कर रहा हूं क्योंकि इन बेशर्मों की आलोचना करने में मुझे शर्म आ रही है ।

(व्यवधान)

---

नोट :– [xxx] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

(श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल सहित सत्ता पक्ष तथा विपक्ष के कई सदस्य अपने स्थान पर खड़े हो गये और बोलने लगे जिससे सदन में व्यवधान उत्पन्न हो गया ।)

* प्रो० रवीन्द्र पुण्डीर–

मान्यवर, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं । गुलामी से निकलकर आज उत्तर प्रदेश में माननीय मुलायम सिंह यादव जी के नेतृत्व में सरकार बनी है । उनके नेतृत्व में जो सरकार बनी है उससे जनता खुश होकर गांवों-शहरों में लड्डू बांट रही है पटाखे छोड़ रही है । इसके पहले जो सरकार थी वह लूटमार की सरकार थी । यह लूटमार का गठबन्धन था । जिस तरह महमूद गजनवी यहां लूटने आया था उसी तरह से यह सरकार थी । इस सरकार ने राजा भैया, धनन्जय सिंह और श्री जय प्रकाश यादव जी पर जुल्म किया है बलिया के श्री राम इकबाल जी की जैसी हालत उन्होंने कर दी थी उन्हें तो इस्तीफा दे देना चाहिए था । उनकी भूमिका क्रान्तिकारी है । [x x x]

(व्यवधान)

(विपक्ष के कई सदस्यों ने उनकी इस बात पर एतराज किया )

श्री अधिष्ठाता–

इस अशोभनीय शब्द को कार्यवाही से निकाल दिया जाये ।

(व्यवधान)

(श्री राम इकबाल सिंह अपने स्थान पर खड़े होकर कुछ कहना चाहते थे लेकिन शोर-शराबे के कारण उनकी बात पूरी नहीं हो पायी ।)

(श्री लालजी वर्मा, श्री सुखदेव राजभर जी ने अशोभनीय वाक्य पर एतराज जताया ।)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, जो अशोभनीय शब्द प्रयोग किये जा रहे हैं उन्हें कार्यवाही से निकाल दिया जाये ।

श्री अधिष्ठाता–

अशोभनीय शब्दों को कार्यवाही से निकाल दिया जाएगा ।

(व्यवधान)

प्रो० रवीन्द्र पुण्डीर–

मान्यवर, वहां पर बोलने का अधिकार नहीं था ? यह जुल्मी और आतंकवाद सरकार से आज हम छूटे हैं हमें बोलने दिया जाय । लोकतंत्र का गला घोंटा गया । कोई जनप्रतिनिधि ऐसा नहीं बचा जिसकी फाइल बहन जी के पास न हो । रवीन्द्र पुण्डीर की भी फाइल खुली थी । मैं तो किराये के मकान में रह रहा हूं आप जांच करवा लें । हरिजन ऐक्ट मुझपर लगाया गया । लोकतंत्र का गला घोंटा गया ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

नोट :–[x x x] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री अधिष्ठाता–

आप बातें दोहरा रहे हैं कृपया समाप्त करें और बैठ जायें ।

प्रो० रवीन्द्र पुण्डीर–

मान्यवर, हमें बोलने दें । वहां पर सिर्फ 'जी बहन जी' होता था । वह यह कहती थीं कि तुम पागल हो तो सब लोग यह कहते थे कि 'जी बहन जी', वह कहती थीं कि तुम बेवकूफ हो तो सब कहते थे कि 'जी बहन जी'। तो इस प्रकार की दमनकारी, हत्यारी सरकार चल रही थी । गन्ने का पेमेन्ट नहीं किया जा रहा था । प्रदेश का गन्ना किसानों का 1800 करोड़ का बकाया है और सांठ-गांठ करके मिलों को बेचने का काम किया गया । उन किसानों को जिनको पेमेन्ट नहीं मिला उनके खिलाफ वसूली जारी कर दी और उनको बंद कर दिया गया । उनका ट्रैक्टर सस्ते में बंद कर दिया गया । कहते थे कि ऊपर के आदेश हैं । हमें याद है कि जब हम चुनाव लड़कर आये तो बहनजी ने मीटिंग ली । एक आदमी हमारे यहां का था ....

श्री अधिष्ठाता–

यह सब बातें पहले आ चुकी हैं आप इसे दोहरायें नहीं । कृपया समाप्त करें ।

प्रो० रवीन्द्र पुण्डीर–

दस हजार कार्यकर्ता थे । रैली होती थी तो यहां पर सब नीला-नीला हो जाता था । उनसे कहती थी कि पैसा लेती हूं इसलिए कि मुझे सरकार चलाना है ।

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, इस तरह से नहीं चलेगा ।

(बसपा के अनेक सदस्य अपने स्थान से उठकर अपनी बात कहने लगे जिससे सदन में घोर व्यवधान उत्पन्न हो गया)

श्री अधिष्ठाता–

मैं जो भी असंसदीय और अशोभनीय होगा उसे निकाल दूंगा । आप लोग बैठ जायें और सदन को चलने दें ।

(सदन में घोर व्यवधान)

आप मुझे धमकी मत दें । मैंने कहां कि जो अशोभनीय होगा मैं निकाल दूंगा ।

(घोर व्यवधान)

(सत्ता पक्ष और विपक्ष के अनेक सदस्य अपनी जगह पर खड़े होकर अपनी-अपनी बातें कहने का प्रयास करने लगे जिससे व्यवधान उत्पन्न हो गया)

श्री अधिष्ठाता–

अब माननीय मुख्य मंत्री जी को बोलना है, जो सदस्य नहीं बोल सके उन सब से आग्रह है कि जो बातें हो चुकी हैं उनकी पुनरावृत्ति करने से कोई फायदा नहीं है ।

प्रो० रवीन्द्र पुण्डीर–

मान्यवर, आप हमारी पूरी बात तो सुन लें ।

श्री अधिष्ठाता–

नहीं कतई नहीं, अब आपकी बात को नहीं लिखा जायेगा ।

प्रो० रवीन्द्र पुण्डीर–

[x x x ]

(व्यवधान)

श्री लालजी वर्मा–

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है, माननीय पुण्डीर जी अनर्गल आरोप लगा रहे हैं, इस सदन की परम्परा है, अगर कोई आरोप लगाया जाता है तो उसकी एक नियमावली है उसके अनुसार लगाया जाता है । यह बहुजन समाज पार्टी के बारे में अनर्गल बातें करते जा रहे हैं यह भारतीय जनता पार्टी से क्षुब्ध होकर ऐसा कह रहे हैं ।

(व्यवधान)

(इस समय 7 बजकर 22 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए)

श्री अध्यक्ष–

कृपया आप लोग शान्त रहें और बैठ जायें ।

श्री मयंकेश्वर शरण सिंह–

मायावती जैसा बरबर मुख्य मंत्री न तो कभी उत्तर प्रदेश को पहले मिला है और न ही कभी मिलेगा ।

(व्यवधान)

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

कोई भी ताकत बहुजन समाज पार्टी को सरकार में आने से नहीं रोक सकती है, यह जो आप लोग बातें कर रहे है सबकी सब अनर्गल बातें हैं ।

श्री अध्यक्ष–

दोनों पक्षों से प्रस्ताव के समर्थन में और विरोध में काफी बातें आ गई हैं । वातावरण में मैं नहीं चाहता हूं कि कोई कटुता हो । इस बहस को यहीं समाप्त करके माननीय मुख्य मंत्री जी को आमंत्रित कर रहा हूं ।

---

नोट :–[x x x ] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

अध्यक्ष महोदय, आज बहस गंभीरता से भी हुई, और आपस में थोड़ी बहुत सदन में नोंक-झोंक व छेड़छाड़ होती है, वह तो स्वाभाविक है । बहस खुशी के माहौल में हुई प्रसन्नता व हंसी-खुशी का वातावरण रहा और जिन माननीय सदस्यों ने बहस में भाग लिया विशेष कर माननीय नेता विरोधी दल ने, जो हिस्सा लिया, उन सबको मैं धन्यवाद देता हूं । कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी आये हुए हैं । जो सुझाव रचनात्मक हैं उनका स्वागत है मैंने वादा किया था, उसका पूरी तरह से पालन भी करूंगा । विशेष बातें कुछ छिड़ी थी, लेकिन जो दर्दनाक इतिहास रहा पिछली सरकार का, क्रूरता का उसमें मुझे कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी । जिन्होंने भोगा है, उन्होंने थोड़ा बहुत ही जिक्र आपके सामने रखा है । मैं भी भुक्तभोगी हूं लेकिन माननीय प्रमोद तिवारी जी, माननीय कल्याण सिंह तथा माननीय जगदम्बिका पाल जी ने और कई माननीय सदस्यों ने उसे अच्छी तरीके से बताया । मैंने बड़ी छोटी सी बात रखी थी, जितना जुल्म हुआ राजा भैय्या पर, धन्नजय सिंह पर, अक्षयवर प्रताप सिंह जी पर, जय प्रकाश यादव जी पर, अतीक अहमद पर, राजा भैय्या पर जो अत्याचार हुआ वह हिन्दुस्तान के इतिहास में ऐसा नहीं दिखायी दिया उनके वृद्ध पिता जी को भी नहीं छोड़ा गया । मैं जानबूझकर नहीं बोला था । राजा भैय्या हमारे पक्ष में नहीं थे, राजा भैय्या ने पहले आपकी सरकार चलवाई थी, राजा भैय्या ने हमारी सरकार के न बनने के पक्ष में बहुत प्रमुख भूमिका निभाई थी लेकिन हम समाजवादी लोग सिद्धान्तवादी हैं । हमारी बोली एक है । लोक सभा में हम रहे, हमने पोटा का विरोध किया था, मुखर होकर विरोध किया था । ऐसा कड़ा विरोध किसी ने नहीं किया था जैसा हमने किया था । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यहां एक उदाहरण देना चाहता हूं । जनसंघ के संस्थापक डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को, माननीय नेता विरोधी दल ने पढ़ा होता, तो हमें लगता है कि राजा भैय्या उनके वृद्ध पिता जी पर या अक्षयवर प्रताप सिंह पर पोटा न लगता । डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों के विपरीत यह काम हो रहा था । इस वक्त मैं यह कहने की जरूरत समझ रहा हूं कि इस सदन की बहस उच्च स्तर की हो ताकि लोग उससे कुछ सीखें, कुछ प्रेरणा लें । माननीय नेता विरोधी दल से कहूंगा शायद आपने उन्हें पढ़ा नहीं है । आप लोक सभा की कार्यवाही देख लें, उनका मत था यह नाजीवाद है, यह फासिस्टवाद है एक क्रूर सरकार का काम है । आप संयुक्त अधिवेशन की वहां की कार्यवाही देख ले । राजा भैय्या की कोई बातचीत नहीं हुई । यहां राजा भैय्या पर जो पोटा लगा, राजा भैय्या, उनके साथी और उनके वृद्ध पिता पर जो जुल्म हुआ उसको हम बरदाश्त नहीं कर सकते । यह सही है कि उनकी चर्चा हमने की अफसोस है हमारे मित्र बहुजन समाज पार्टी के साथियों को बुरा लगा । आप को भी प्रायश्चित करना चाहिए था । जो अपनी गलतियों को, अपने अपराधों को, पापों को और भ्रष्टाचारों को स्वीकार कर लेता है वह बड़ा दिल वाला होता है, बड़ा मन वाला होता है, बड़ा व्यक्ति होता है । तंग दिल, छोटा व्यक्ति अपनी गलती को कभी स्वीकार नहीं करता है । इसे स्वीकार करना चाहिए । हमको भी धमकी दी गयी, राजा भैय्या का संदेश भी आया, नाम नहीं लेना चाहता हूं उन अधिकारियों का, कहा कि सर, आप विरोध मत कीजिए ऐसा उनका कहना है । उनका कहना यह है कि उनको भी भुगतना पड़ेगा । मैंने कहा कि उनको समाजवादियों के बारे में, समाजवादियों के इतिहास के बारे में जानकारी नहीं है ।

मैं अत्याचार के सामने झुक नहीं सकता । सत्ता आने में चाहे कितनी देर हो लेकिन सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं करूंगा । इसलिए हमने अन्याय और अत्याचार का साथ नहीं दिया । हम जैसे लोगों

को प्रतापगढ़ में उनके साथ मिलाई करने में जो तकलीफ हुई, है वह व्यक्तिगत मैं कह नहीं सकता। अमर सिंह जी को जो तकलीफ हुई, धक्का लगा। वह कह नहीं सकता। नेता विरोधी दल रहे अहमद हसन का जो अपमान हुआ है। वह कह नहीं सकता। तीन व्यक्ति ही जा सकते हैं मिलाई करने के लिए , केवल तीन व्यक्ति। इमरजेन्सी में भी हमसे मिलने 10-15 लोग जाते थे। हम लोग जेलों में बन्द थे लेकिन हम लोगों के परिवारों पर कोई अत्याचार नहीं होता था। हम उस पर जाना नहीं चाहते। हमने यह संकल्प किया है, वायदा किया है सदन के अन्दर। यह सदन जनता का दर्पण है। जनता इस सदन की कार्यवाही और भाषण को सुन रही है वरना मैं बता सकता हूं कि ए०के०–56 कहां से आई, कहां रखी गयी थी, किस थाने ने मना किया। राजा भैया के पास ए०के०–56 कहां से आई और कौन लेकर गया, क्या राजा भैया के घर में ए०के०–56 थी ? क्या अपने दिल पर हाथ रखकर कहेंगे कि इस मामले में क्या-क्या किया था। हम कहना चाहते हैं कि बीजेपी के माननीय नरेन्द्र वर्मा जी ने जो कुछ कहा है, संसाधन की भले कमी हो वे हमें सूची दे देंगे उनके हैण्डपम्प एक हफ्ते में लग जायेंगे। मान्यवर, हमारे एक साथी ने कहा कि 5 साल को घटा कर 3 साल कर दिया गया है। यह निर्णय हमने ही लिया था और हमारा लिया हुआ निर्णय बदला नहीं जायेगा। हमारे मित्र ने बहुत ही अच्छी बात अपनी सरकार के जमाने की कही है उन्होंने कहा कि दवा बहुत दूर की बात चारपाई और बिस्तर तक नहीं मिलता। यह मैंने महसूस भी किया है और किसी मजबूरी में चारपाई मिल भी गयी तो 8 रुपये का पर्चा। किसी गरीब परिवार में अगर 4 सदस्य बीमार हो गये तो वह 28 या 32 रुपये तक पर्चा बनवाने में देगा और एक हफ्ते बाद फिर 28 या 32 रुपये देगा। हमारे नेता जनेश्वर मिश्र ने कानपुर में एक नारा दिया था यह नारा नया नहीं पुराना था "रोटी कपड़ा सस्ता हो, दवा, पढ़ाई मुफ्त हो" हम इस नारे को साकार करने का प्रयास करेंगे। मान्यवर, कुछ लोग टिप्पणी करते हैं घोषणायें करते हैं लेकिन कुछ करते नहीं है। जो हमारी घोषणाएं हुई हैं उसमें से कौन सी घोषणा लागू नहीं है, नहरों की सफाई हो रही है, बिजली 14 घण्टे पहुंच रही है। भारतीय जनता पार्टी के एक सदस्य ने कहा कि 14 घण्टे बिजली नहीं मिल रही है। यहां पर जितने माननीय सदस्य बैठे हुए हैं वह कह दें कि उनके इलाके में बिजली नहीं गयी है तो हम वहां पहुंचा देंगे।

श्री भरत सिंह–

हमारे जनपद बलिया में 14 घण्टे नहीं पहुंच रही है।

श्री मुलायम सिंह यादव–

आप लिख करके दे दीजिए, हमारे अधिकारियों ने सुन भी लिया होगा, वह इसे देख लेंगे। जहां तक माननीय नेता विरोधी दल ने दो महत्वपूर्ण बातें कहीं, एक तो उन्होंने हमारा सहयोग करने का वादा किया है और उन्होंने कहा है कि कोई भी बाधा नहीं डालेंगे। एक बरेली वाली घटना है उस पर मुझे अफसोस है कि अधिकारियों की लापरवाही से एक 14 साल के लड़के की हत्या हुई और उसके बाद सभासद की हत्या हुई। किसी की भी इसमें गलती हो किसी की हत्या करने का किसी को अधिकार नहीं है। अगर जान लेने का किसी को अधिकार है तो वह अदालत को है। सरकार की तरफ से पुलिस का कोई व्यक्ति भी जिन्दा या मुर्दा पकड़ सकता है जिसकी वजह से किसी की जान जा सकती है। तीसरा कोई जान नहीं ले सकता। हमें अफसोस है कि वहां बड़े अधिकारियों ने लापरवाही बरती थी। यह सही

है कि बरेली जलते-जलते बच गया । जिन अधिकारियों ने वहां लापरवाही की थी, उसी दिन उन वरिष्ठ अधिकारियों को वहां से हटा दिया गया । अब मुझे संतोष है कि बरेली में आज कर्फ्यू नहीं है और वहां शान्ति है ।

दूसरी आपकी शिकायत थी बदायूं जनपद की । शायद उनको ठीक से जानकारी नहीं थी । महात्मा गौतम बुद्ध पूर्व माध्यमिक विद्यालय, तकौड़ा के निर्माण के लिये प्रथम किश्त 28 दिसम्बर, 2001 को स्वीकृत की गयी थी । वहां पता चला और जांच हुयी तो यह मालूम हुआ कि अभी तक एक भी पैसा खर्च नहीं हुआ । खर्च इसलिए नहीं हुआ, जैसे मुझे बताया गया हो सकता है आपकी जानकारी सही हो, हमारी गलती हो तो स्वीकार कर लेगे कि इस नाम का कोई विद्यालय है ही नहीं, इसीलिये वहां सन् 2001 से अभी तक एक भी पैसा खर्च नहीं हुआ । इसकी जांच खण्ड विकास अधिकारी ने की और रिपोर्ट दी और अगर आपको कोई तथ्य मालूम हो तो बात कर लेंगे । जहां तक नेता बहुजन समाज पार्टी श्री स्वामी प्रसाद मौर्य जी का सवाल है, वह हमारे कार्यकर्ता रहे हैं, साथी रहे हैं, आपने कहा कि बहुत बड़े वकील भी रहे हैं । ठीक है, आपकी वकालत बहुत अच्छी हो सकती है, आप विद्वान हो सकते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि संसदीय प्रणाली के भी आप ज्ञाता हों या आप बहुत बड़े ज्ञानी हो गये हों । अगर ज्ञान होता तो एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के व्यक्ति जिन्होंने हमारे हिन्दुस्तान का अपार सम्मान बढ़ाया है, उनके बारे में अनावश्यक टिप्पणी नहीं करते । इस सदन में आरोप लगाया गया कि हमारे शपथ ग्रहण समारोह में उद्योगपति आये, पूंजीपति आये और कलाकार । अध्यक्ष, महोदय मैं तो आपका आभारी हूं और मैं अपना तथा उत्तर प्रदेश का सौभाग्य समझता हूं कि उद्योग पति श्री अनिल अंबानी और उनकी धर्मपत्नी टीना मुनीम, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार श्री अमिताभ बच्चन और उनकी पत्नी जया, गोदरेज के मालिक श्रीमती परमेश गोदरेज और उनके पति श्री आदि गोदरेज तथा सहारा के सहारा श्री सुब्रत राय इस अवसर पर आये । देश के विकास के लिये, देश की बेरोजगारी दूर करने के लिये इन लोगों ने जो महान योगदान किया है । वह काम जो आज हम आप और सरकार सभी मिल कर भी नहीं कर पा रहे हैं । तत्काल नहीं कर सकते हैं । मैं बताना चाहता हूं कि सहारा कम्पनी ने 7 लाख से अधिक लोगों को अपने यहां रोजगार दिया है । इतनी बड़ी सेवा यह लोग देश की कर रहे हैं । जहां तक अम्बानी परिवार का सवाल है, मुझे इस बात का अफसोस है कि आज श्रद्धेय धीरू भाई अम्बानी हमारे बीच नहीं हैं । उन्होंने मुझसे वायदा किया था कि जब कभी आपकी सरकार बनेगी तो हम प्रदेश के विकास में बहुत बड़ी भूमिका निभायेंगे और आपको सुझाव भी देंगे । आपको यह भी मालूम होना चाहिये कि आदरणीय स्वर्गीय धीरू भाई अम्बानी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मानित उद्योगपति थे और सहारा श्री सुब्रत राय, श्री मुकेश अम्बानी, श्री अनिल अम्बानी और उनका पूरा परिवार, गोदरेज परिवार इन सबने आज विदेशी कम्पनियों से आर्थिक क्षेत्र में सफलता पूर्वक प्रतिस्पर्धा कर देश सम्मान बढ़ाया है वह दिन याद है जब रिलायेन्स कम्पनी में छापा मारा गया था । बाद में केन्द्र सरकार में सर्वोच्च पदो पर बैठे दोनों लोगों ने इसके लिये खेद भी व्यक्त किया था । आप देश के ऐसे सम्मानित उद्योगपतियों को इस सदन में उनको अपमानित करते हैं मुझे बुरा लगा है लेकिन आज दुनिया में जो अमेरिका महाशक्ति बनकर उभरा है, उनके राष्ट्रपति बिल क्लिंटन साहब जब भारत आये थे शायद किसी को इतना समय नहीं दिया था जितना स्वर्गीय आदरणीय धीरू भाई अंबानी के निवास पर उनको दिया था । अंबानी परिवार का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम है । माननीय अध्यक्ष महोदय, स्व० आदरणीय धीरू भाई अंबानी

ने अपने प्रारम्भिक जीवन में गरीबी झेली थी । एक समय में पैर में जूते और तन पर पूरे कपड़े पहनना भी उनके लिये उन्होंने एक गरीब साधारण प्राइमरी स्कूल के अध्यापक के घर जन्म लिया और अपने हाथ से घास तक छीली थी । उन्होने अपनी मेहनत और बुद्धि के बल से बड़ी-बड़ी विदेशी कम्पनियों का मुकाबला कर रहे हैं । विदेशी कम्पनियों के प्रभाव से जब आज सभी चिंतित हैं तब रिलायेन्स कम्पनी उनका मुकाबला कर रही हैं । आप इस सदन में इतने शानदार लोगों की आलोचना करेंगे । आप विद्वान हो सकते हैं कानून के ज्ञाता हो सकते हैं लेकिन संसदीय ज्ञान में पारंगत नहीं हो सकते और न सम्मान पा सकते हैं । आपको मालूम है कि जिनकी आपने आलोचना की, ये वे लोग हैं जिनसे मिलने के लिए आपकी मुख्य मंत्री को समय नही मिल सका था । श्री मुकेश अंबानी एवं श्री अंबानी से मिलने के लिये लगातार तीन माह तक प्रयास करने के बाद भी समय नहीं मिल पाया तमाम अधिकारियों को इस काम पर लगाया गया था । लेकिन वे समय नहीं ले पाये बात सोच समझकर, अपनी हैसियत के अनुसार करनी चाहिए, बुरी लगने वाली बात नही कहनी चाहिए । मैं यह बताना चाहता हूं कि ये लोग हमारे मित्र भी हैं और श्री अमर सिंह जी उन के परिवार के हैं । महान कलाकार श्री अमिताभ बच्चन के पिता जी को सब जानते हैं, माननीय अध्यक्ष जी, आप तो इलाहाबाद के हैं आप जानते हैं आदरणीय हरिवंश राय बच्चन जी को जो अंग्रेजी के विद्वान थे, जिन्होंने हिन्दी राष्ट्रभाषा के सम्मान के लिए क्या नहीं किया । मधुशाला उन्होंने पढ़ी ही नहीं राष्ट्र भाषा की समृद्धि के लिये हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए, मानवता के लिए उन्होंने अमर ग्रन्थ मधुशाला लिखी है । अगर मधुशाला हाथ से छुई होती तो उसे कभी भी भूल नहीं पाते अमिताभ बच्चन जी, आदरणीय श्रद्धेय हरिवंश राय बच्चन जी के सुपुत्र हैं । अमिताभ बच्चन जी ने हिन्दुस्तान की सीमाओं को चीरकर सरहद के उस पार ही नहीं सारी दुनिया में देश का सम्मान बढ़ाया है भाई चारे का सन्देश दिया है, अमन का संदेश दिया है । पूरी दुनिया ने उन्हें सहस्राब्दी का महानायक घोषित किया है । बुरा न मानियेगा आप ऐसे लोगों से हाथ भी नहीं मिला पायेंगे बार-बार अपनी सीट से खड़े होकर टीका-टिप्पणी करने से आप संसदीय प्रणाली के पारंगत नहीं बन जायेंगे और न सम्मान पा सकेंगे । मैं भी विपक्ष में लम्बे काल तक रहा हूं लेकिन अनुशासित बनकर रहा हूं । एक बार केवल वेल में आना पड़ा था । हर पद पर लम्बे समय तक रहा हूं और उच्च सदन में भी विरोधी दल का नेता रहा हूं, मंत्री रहा हूं और दो-दो बार मुख्य मंत्री रहा हूं । हम जानते हैं कि आप विपक्ष में होने के नाते अनावश्यक उत्तेजित हो जाते हैं हम सात साल से भारत की लोक सभा में भी रहे हैं । जहां उच्च स्तर की बहस होती है, जिससे हम अब इस सदन में वंचित हैं । हम चाहेंगे कि यहां उच्च स्तर की बहस हो लेकिन अनुशासित होकर । हर बार खड़े हो जाना ठीक नहीं है । मैंने अपने लोगों को समझाया अपने ही दल के श्री अम्बिका चौधरी से कहा कि वे बार-बार खड़े न हुआ करें इससे कोई संसदीय प्रणाली का पारंगत नहीं हो जाता है । खड़े होने का कोई वक्त होता है ।

माननीय नेता विरोधी दल चुप बैठे हैं, हम भी चुप बैठे हैं । आलोचना करने का अधिकार आपको है, लेकिन मर्यादित आलोचना होनी चाहिए । मैं कहना चाहता हूं कि आपने डा० लोहिया के बारे में कुछ बातें कहीं । आपको पता ही नहीं है आप विद्वान हो सकते हैं अच्छे वकील हो सकते हैं कानून के जानकार हो सकते हैं लेकिन आप राजनीति में अनभिज्ञ हैं । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जिन्होंने देश की आजादी के लिए साम्राज्यवाद के खिलाफ इतनी बड़ी लड़ाई लड़ी किसके घर में रहते थे ? वे स्वर्गीय घनश्याम दास बिरला के घर में रहते थे तो क्या आप दरिद्र नारायण की पीड़ा को भूल गये थे । दरिद्र

नारायण की लड़ाई उन्होंने लड़ी है क्या आपको इसका पता है । इसी तरह से क्या आपको पता है कि डा० लोहिया किसके घर में रहते थे । हमारी पार्टी के बुजुर्ग नेता हैं श्री बद्री प्रसाद विशाल पित्ती जो एक बड़े उद्योगपति हैं उनके घर में रहते थे । आन्ध्र प्रदेश के श्री पी०पी० राजू महाराजा बिजय नगरम् के यहां रहते थे । इस देश की 27 करोड़ जनता को उस जमाने में एक बार पेट भर खाना खाना मुश्किल था । तब उन्होंने तीन आम बनाम तेरह आने की लड़ाई नहीं लड़ी थी डा० लोहिया ने क्या वह लड़ाई आप भूल गये हैं । जय प्रकाश नारायण जी कहां रहते थे ? जय प्रकाश नारायण जी उद्योगपति गोयनका जी के यहां रहते थे । इन्डियन टावर हाउस में क्या जय प्रकाश नारायण जी की सम्पूर्ण क्रान्ति को आप भूल गये हैं ? मा० अध्यक्ष जी मैं इस सदन में आपसे कहना चाहता हूं कि हम उनके अनुयायी हैं । धन की चमक-दमक हमको प्रभावित नहीं कर सकती । गरीबों, किसानों, मजदूरों की लड़ाई पूरी मजबूती से लड़ते रहे हैं । हमारे संबंध अनिल अम्बानी जी के परिवार से हैं, अमिताभ बच्चन जी के परिवार से हैं, हम उनको अपना परिवार मानते हैं । हम अम्बानी परिवार के प्रिय हैं, उस परिवार से हमारे घनिष्ठ रिश्ते हैं । मैं इसको देश के सामने छिपाता नहीं हूं । हम छिपाने वाले लोगों में से नहीं हैं । क्या किसी से व्यक्तिगत दोस्ती, व्यवहार और मित्रता नहीं होती, क्या सामाजिक संबंध नहीं होते हैं ? अगर हम शपथ ले रहे हैं और उसमें वह लोग आ रहे हैं तो वह हमारे लिए गौरव की बात है । सहारा श्री जो हैं उन्होंने बहुत कुछ उत्तर प्रदेश के लिए किया है, लाखों लोगों को रोजगार दिया है हम उनसे कहेंगे कि और लोगों को रोजगार दीजिए मुझे विश्वास है कि सहारा श्री हमारी बात टालेंगे नहीं । श्री अनिल अम्बानी हमारी बात नहीं टालेंगे । उत्तर प्रदेश के विकास के लिए हम उद्योगपति गोदरेज से भी कहेंगे इसमें आपको खुशी होनी चाहिए कि इतने बड़े सम्मानित उद्योगपति जो देश के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं देश के सम्मान और गौरव को बढ़ा रहे हैं उनका सहयोग हमारे प्रदेश के विकास में भी मिलेगा । आप को ज्ञात होना चाहिए ये उद्योगपति लाखों लोगों को रोजगार दे रहे हैं । इसलिए मैं कहता हूं कि हमें अवसर मिला तो अध्यक्ष महोदय मुझे विश्वास है कि इन सभी महानुभावों का सहयोग उत्तर प्रदेश को मिलेगा । इस प्रदेश के औद्योगिक विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान होगा । मैं उस समय की प्रतीक्षा कर रहा हूं जबकि उ०प्र० में प्रदेश की जनता इन सभी महानुभावों का सम्मान करेगी और प्रदेश के विकास के लिये उनके योगदान की सराहना करेगी ।

उत्तर प्रदेश की जनता के साथ मैं उनका सम्मान करूंगा, यह देश का सम्मान होगा । 30 जून, 1995 को हमारी सरकार को किसने गिराया ? हम गड़े-मुर्दे उखाड़ने के बहुत पक्ष में नहीं हैं । शायद माननीय नेता विरोधी दल को न पता हो । अगर पता नही है और जानना चाहते हैं तो अकेले में बात होगी तो बता दूंगा । आपके नेता मजबूर हो गये थे, उन पर दबाव था सरकार को गिराने का । हमारी सरकार वैसे ही नहीं गिर गयी थी । मैं बताना चाहूंगा कि हजारों किलोमीटर दूर के लोगों के दबाव से गिरी थी । हम जानते हैं कि कौन हमारे खिलाफ है । हमारी लड़ाई साम्प्रदायिकता से है । आपने साम्प्रदायिकता के नाम पर जनता को धोखा दिया है ।

आपने डा० अम्बेडकर को जितना अपमानित करने का काम किया है उतना तो उनके घोर विरोधी भी नहीं करते मैंने सदा उनके सम्मान के लिये काम किये हैं । यह गांव आपने बसाए । 1990 में आपका अता पता नहीं था । अध्यक्ष महोदय, अम्बेदकर गांव बनाने का निर्णय हमारा था तब बी०एस०पी० का दूर-दूर तक पता नहीं था । इनकी बहन जी का अता पता नहीं था । इन्होंने हर जगह असत्य तथा झूठा

प्रचार किया है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं थोड़ा सोच समझ कर बोलें इतिहास पढ़ लें। लूटपाट करके टिकट लेना एक सामान्य बात है इनके लिए क्या आप एफिडेविट देकर कह सकते हैं, मैं यह सब जानता हूं। यहां पर कहना नही चाहता हूं। इन बातों को हम छोटी-मोटी बात समझते हैं। इन बातों से सिद्धान्तों पर चलने वालों को तकलीफ तो होती है। श्री कल्याण सिंह जी ने श्री प्रमोद तिवारी ने, श्री जगदम्बिका पाल जी ने हमारे बहुजन समाज पार्टी के सदस्यों ने, निर्दलीय राजा भैया ने, कम्युनिष्ट पार्टी के श्री राम स्वरूप जी ने राष्ट्रीय लोकदल के नेता श्री अजीत सिंह जी ने लोक दल के नेता बैठे हैं इन सभी ने समर्थन दिया है। यह बात सही है कि 1999 का चुनाव हमने सोनिया जी के विदेशी होने को कहकर लड़ा था। लेकिन इतना बड़ा दिल है उनका कि उत्तर प्रदेश को बचाने के लिए उन्होंने समर्थन दिया इसके लिए मैं सोनिया जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। हमने तो विदेशी कहकर चुनाव लड़ा था लेकिन आपकी तो हिम्मत नहीं पड़ी थी विदेशी कहने की आप स्वदेशी की बात करते हैं। कुछ लोग आपकी पार्टी के अन्दर इस बात के लिए लड़ रहे हैं। मा० अध्यक्ष महोदय मुझे फख्र है कि हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए जब अमेरिका के राष्ट्रपति भारत आए थे हमने पहले दिन से ही कह दिया था कि हम अंग्रेजी में प्रधान मंत्री को भाषण नहीं देने देंगे। जबकि प्रधानमंत्री अंग्रेजी में भाषण देने जा रहे थे। उनको फैसला बदलना पड़ा था और अंग्रेजी छोड़कर हिन्दी में बोलना पड़ा था। यह देश का स्वाभिमान और सम्मान का प्रश्न था इसको किसने बचाया था। यह समाजवादी पार्टी ने बचाया था। हम लोग सत्ता के पीछे भागने वाले लोग नहीं हैं। यह सच्चाई है। इसको स्वीकार करना चाहिए। सत्ता तो अचानक मिल गई वरना हम लोग सड़कों पर उतरकर पोटा का विरोध करने जा रहे थे क्या यह सच्चाई नहीं है कि अमर सिंह और मुलायम सिंह पर पोटा लगाने की योजना थी। अगर आप कहेंगे तो इसके बारे मे तथ्य आपके सामने पेश कर दूंगा। जो चाहे जांच कर ले। बात सामने आ जाएगी। हम पोटा से डरने वाले नहीं है। पोटा का हम राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल नहीं करने आए हैं। मैं बहुत सी बातें ऐसी हैं, जो यहां पर कहना नहीं चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय मैं स्पष्ट कहना चाहता हूं कि राजनैतिक बदले की भावना से हम कोई काम नहीं करेंगे। हम चाहते हैं कि ऐसा वातावरण बने जो सबके हित के लिये हो। यह केवल किसी एक समाज की सरकार नहीं है। क्या आपको दलितों से हमदर्दी है क्या वास्तव में दलितों की सेवा की है आपने। मैं जब हाई स्कूल में पढ़ता था तो दलितों के घर में खाना खाने से मेरा सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था। हमने भी गरीबों दलितों की सेवा की है। क्या ऊंची जाति के गरीब व्यक्ति के प्रति आपके मन में हमदर्दी है ? हमको है, इसीलिए देश में हमने सबसे पहले 1990 में मांग की थी कि ऊंची जाति के गरीब लड़कों के लिये नौकरी में आरक्षण होना चाहिए। यह किसने कहां था ? यह समाजवादी पार्टी का चिन्तन है। मा० अध्यक्ष जी मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस प्रदेश के गरीबों दलितों, अल्पसंख्यकों पर यदि अत्याचार होगा तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। गरीब ऊंची जाति में पैदा हुआ है तो क्या यह उसका अपराध है। क्या ऊंची जाति के गरीब के लिए सड़क, मकान बनाने की जरूरत नहीं है ? क्यों नहीं है हम उसके लिये भी यह सब व्यवस्था करेंगे। अध्यक्ष महोदय यह सही है कि उत्तर प्रदेश कंगाल है और प्रदेश पर 50 हजार करोड़ का कर्जा है। यह सही है कि हमको राज्य कंगाल हालत में मिला है और यह खजाना लूट के कारण खाली हुआ है, कंगाल हुआ है और संसाधन जुटाने का भी कोई काम नहीं हुआ है। लेकिन हम यह बहाना करके कि हमको खाली खजाना मिला है अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकते हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम संसाधन जुटायें। हम यह कहकर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते कि संसाधन

के अभाव में सरकार प्रदेश का विकास नहीं कर सकती है । जो सरकार इस तरह की बात करे उससे ज्यादा निकम्मी सरकार और कोई नहीं हो सकती है । यह सरकार की जिम्मेदारी है कि संसाधन जुटाकर जनता के विकास के कार्य करे । अभी तो यह शुरुआत है । अभी सरकार बनी ही कहां है । दो चार छः दिन में बन जायेगी पूरी सरकार और उसके बाद काम शुरू होगा । हम मुख्य मंत्री होकर एक क्लर्क की तरह काम नहीं कर सकते । हमारे साथ हमारे अधिकारी हैं । हम मिलकर काम करेंगे । हमारी यह गठबंधन की सरकार है । उसकी कुछ नीतियां और कार्यक्रम हैं, उसको लागू करने का काम सरकार के अधिकारियों का है । अगर हमारा काम गलत होगा तो जनता के बीच हम उसकी सजा भोगेंगे । अधिकारियों को तो भोगना नहीं है । अगर अधिकारियों के सामाने बाधा आयेगी तो हम उसको दूर करेंगे । हमारे जो कार्यक्रम हैं वह गरीब, किसान, मजदूर, हर वर्ग के लोगों के कल्याण के लिये हैं । यह जनता की सरकार है किसी एक समाज की सरकार नहीं है । मैं कहना चाहता हूं कि यह केवल सत्ता पक्ष में बैठे लोगों की सरकार नहीं है विपक्ष में बैठे सभी लोगों की सरकार है । हम सबको मिलकर काम करना है इसीलिए कह रहा हूं इसमें आपका सहयोग चाहिए । जहां तक गठजोड़ की बात करते हैं और कहते हैं कि हमारी सरकार खिचड़ी सरकार है । तो आपकी तो खिचड़ी सरकार थी । जानते हैं खिचड़ी किसको कहते हैं उसमें चावल कड़ा रह जाता है और वह पचती नहीं है । हमारी तो खिचड़ी है जो पच जाती है । हमारी खिचड़ी तो पच जायेगी । आपकी खिचड़ा था इसलिये पचा नहीं । आपको पता होना चाहिए कि आपात धर्म ऐसा होता है यदि कोई मकान जल रहा होता है तो सब लोग बाल्टी लेकर लोटा लेकर चाहे वे विरोधी का ही क्यों न हो आग बुझाने के लिये भागते हैं, बचाने के लिये दौड़ते हैं । आज प्रदेश में आग लगी है इसलिये हमने कहा कि आपात धर्म का समय है । प्रदेश गृह युद्ध की ओर जा रहा है । जाति-पाति का उन्माद फैला है, साम्प्रदायिकता का उन्माद फैला है प्रदेश को बचाने के लिये सबका सहयोग चाहिए, सबको एक जुट होना होगा । सामाजिक एकता के लिए, सामाजिक समरसता लाने के लिए हम एक हुए हैं यह शाश्वत नहीं है आपात धर्म आपत्ति धर्म शाश्वत नहीं होता है । आपात धर्म समाजवाद है । हम गरीबों के दर्द को भुला नहीं सकते हैं । किसी भी स्तर पर अन्याय किसी के साथ हो इसको हम देख नहीं सकते हैं । हमारा मानना है कि जनता को रोटी मिले, लोग खाली पेट नहीं पेट भरकर सोयें, जनता के सिर के ऊपर छत हो, अगर यह हो जाएगा तो यह सबसे बड़ी खुशी हमारे जीवन की होगी ।

(मेजें थपथपाई गईं)

इसीलिये हमने अपील की है कि सरकार चलाने के लिए समर्थन दें सहयोग दें । मैं अपने परिवार की बात नहीं करता हूं लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि मेरा बेटा बहुत बड़ी तनख्वाह की नौकरी पा सकता था, हमारे दोस्त अमर सिंह जी दो चार लाख महीने में दे सकते थे, मेरे बेटे को पता नहीं था राजनीति क्या होती है । कोई विश्वास करे या न करे, माने या न माने जनेश्वर जी ने कहा जनता चाहती है कि अखिलेश सिंह जी चुनाव लड़ें, शादी के 38 दिन हुए थे, तभी उसकी शादी हुई थी हनीमून का प्रोग्राम बन रहा था । लोकसभा के अध्यक्ष बालयोगी जैसा दुनिया में कोई नहीं है उन्होंने सबसे पहले निमंत्रण दिया कि हनीमून मनाने हैदराबाद आ जाएं उसके बहुत से दोस्त विदेश में भी हैं । उन्हेंने बुलाया लेकिन तब तक घोषणा हो गई चुनाव लड़ने की, जनता ने कहा चुनाव लड़ना पड़ेगा, सबसे ज्यादा संघर्ष समाजवादी पार्टी ने किया । शिवपाल जी पांच-पांच महीने इटावा में सो नहीं पाए । एक-एक ट्रक

पी०ए०सी चलती थी मेरे भाई हैं मैं कहना नहीं चाहता था लेकिन माननीय रामप्रकाश त्रिपाठी जी यहां बैठे हैं वह जानते हैं, कितना संघर्ष किया है ।

(सत्तापक्ष के सदस्यों ने मेजें थपथपाई )

गोलीकांड हुआ । उसमें मुकदमा चलाया गया मध्य प्रदेश सरकार में मुकदमा दर्ज हुआ जजों ने बुलाकर शिवपाल सिंह यादव जी से पूछा उन्होंने कहा सच्चाई यह है कि मेरी पत्नी और मां की हालत खराब थी । हाई कोर्ट के जजों ने सच्चाई जानने के बाद कहा कि घर जाओ । हम बताना नहीं चाहते हैं, इससे ज्यादा राजा भैया को भोगना पड़ा । हमारे भाई जेल में थे, मैंने कभी जिक्र नहीं किया । हम जानते हैं, देश की सच्ची सेवा करेंगे तो सम्मान भी मिलेगा, परेशानी भी होगी, अपमान भी मिलेगा लेकिन किसी के सामने झुकेंगे नहीं । आज हमें उत्तर प्रदेश का दर्द है । यहां पंडित गोविन्द बल्लभ पंत, डा० सम्पूर्णा नन्द और श्रद्धेय पुरुषोत्तम दास टण्डन जी रह चुके हैं, हम आज इस तरह की आदत डालें, ऐसा आचरण करें जिससे आगे आने वाली पीढ़ी उससे प्रेरणा ले । आज पूरे हिन्दुस्तान के अन्दर चर्चा है कि हमारे उत्तर प्रदेश का सम्मान गिरा है । हमारे शानदार उत्तर प्रदेश में राम और कृष्ण हैं, देवबन्दी हैं, सब कुछ है, मिली जुली संस्कृति है, प्यार-मोहब्बत है, चाहे जितना अलगाव पैदा हो, टण्डन जी आप भी जानते हैं, जब फरार थे, तब आपसे मेरी बातचीत होती थी, मुझे पता था, टेलीफोन द्वारा बात हो गयी । हमने आपको छुआ नहीं था । आप सुझाव भी देते थे । कारसेवा निकालने का कार्य नाना साहब देशमुख ने किया था । उन्होंने कहा मुलायम सिंह जी आप भी सही हैं और ये लोग भी सही हैं, कारसेवा निकालने दें । रात 10 बजे से 3 बजे तक बात हुई । इस प्रकार मैंने अयोध्या विवाद को खत्म करने की कोशिश की । हमने कभी टकराव नहीं किया । हमने केवल देश की एकता के लिए टकराव किया । आज भी उत्तर प्रदेश की एकता के लिए, इसे महान बनाने के लिए अपने साथियों के सहयोग से दिल्ली छोड़कर आया हूं । आप विश्वास करें या न करें, मुझे दिल्ली छोड़ने का मन नहीं था । एक बार मुख्य मंत्री होने पर अच्छा लगता है लेकिन दो-दो बार मुख्य मंत्री होने के बाद ज्यादा अच्छा लगता नहीं है । कुछ लोग उधर बैठे हैं, उनकी भाषा भी गरीबों के हित के लिए है, यदि अनुशासन का कोड़ा नहीं होता तो वह भी इधर बैठ जाते । मान्यवर, लोकतंत्र में रहने वाले सभी समझते हैं कहां तक भागकर जायें । माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष, एक अफसोस है कि हमने न पूर्व मुख्य मंत्री का इस्तीफा मांगा था और न सदस्यता का इस्तीफा मांगा था । वह सदस्यता से इस्तीफा देकर चली गयीं । अब वह यहां नहीं बैठी हैं, मेरा मन नहीं लगता ।

(सदन में हंसी का माहौल हो गया)

अगर वह यहां बैठतीं तो मेरा मन लगता । इसलिए इस्तीफा देकर उन्हें भागना नहीं चाहिए था । हमारी उनकी आंख-मिचौली होती रहती थी । सच में मन नहीं लगता । हम चाहते हैं कि सदन ठीक से चले । दलगत राजनैतिक भावना से ऊपर उठकर उत्तर प्रदेश को आगे रखकर सोचें और सभी से मेरा निवेदन है कि हमारे इस विश्वास मत के प्रस्ताव का समर्थन करें ।

नेता विरोधी दल (श्री लालजी टण्डन)–

मान्यवर, आज बहुत दिन बाद शुरूआत और अंत दोनों ही अच्छे हुए और मान्यवर, मैंने शुरू में ही कहा था कि विचारों के आधार पर ही विकास हो सकता है। माननीय नेता सदन ने जो अभी इस बात पर कुछ आपत्ति उठायी कि कुछ उद्योग पतियों को लेकर यहां कुछ कहा गया। आज विश्व की जो आर्थिक स्थिति है जो नीतियों में परिवर्तन हो रहा है। सरकारीकरण से मुक्ति की तरफ हम चल रहे हैं तो उद्योगपतियों का हमें आह्वान करना ही होगा। इसलिए इसे मैं गलत नहीं मानता और जो लोग गलतफहमी में रहे कि मैं हर बात बरदाश्त करता हूं यह बात आप सहारा श्री से पूछिये कि वह नोटिसें वापस ली थीं जो उनके लिए जारी की गयी थीं। ऐसा नहीं है कि हमने आंखें बंद करके किया लेकिन गठबंधन चाहे अनेकों दलों का हो या 1–2 दलों का हो उस गठबंधन का अपना एक धर्म होता है। उसमें एक सीमा तक आपको बर्दाश्त करना पड़ेगा। मैंने इस प्रदेश में वह समय देखा है जिस समय स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी जी का जोर था तो उस समय यहां पर तिरंगा दुपट्टा और गांधी टोपी पहने लोगों की भीड़ सचिवालय में देखी जाती थी फिर जनता पार्टी के समय में हरा दुपट्टा पहने लोग दिखे। जब जनता पार्टी की सरकार बनी तो कौन जानता था कि इस सरकार का बुरा हस्र होगा लेकिन वह भी बिखर गयी। मैंने यह परिवर्तन बार-बार देखे हैं। 1991 में जब श्री कल्याण सिंह जी मुख्य मंत्री थे तो उस समय ऐसा लगता था कि सारा देश श्री कल्याण सिंह जी के पीछे है लेकिन सत्ता बदली। इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए। आप अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं आपसी सामंजस्य ही एक रास्ता है। आम सहमति ही एक रास्ता है जिससे इस परिपाटी से बचा जा सके और आम सहमति में बाबा आदम के नारे काम नहीं करते आधुनिक भारत के लिए जो विचार चाहिए उसकी अभी आवश्यकता है। यह सेक्युलिरिज्म, साम्प्रदायिकता यह हमारे मित्र के लिए छोड़ दीजिए। आप अगर साम्प्रदायिक नहीं हैं तो आप भारतीय हैं जो साम्प्रदायिक हैं वह भारतीय नहीं हैं।

भारतीय संस्कृति में किसी ने यह नहीं कहा है कि किसी एक सम्प्रदाय को कम समझें। हमेशा इस देश की संस्कृति रही है कि रास्ते जुदा-जुदा हैं, मंजिलें तो एक हैं। अलग-अलग उपासना पद्धति के तो हम हो सकते हैं लेकिन लक्ष्य एक ही है ईश्वर प्राप्ति। मैंने सुबह भी कहा था और फिर कह रहा हूं कि यह सदन लोकतंत्र का मंदिर है और इस स्थान की पवित्रता की रक्षा हो। लेकिन साथ ही यह भी कहना चाहूंगा कि यह भावना दोनों तरफ से होनी चाहिए। मैंने देखा है कि सत्ता प्राप्ति के बाद एक ही व्यक्ति के दो स्वरूप हो जाते हैं जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते हैं।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, सदन की यह परम्परा रही है कि जब माननीय नेता सदन का उत्तर भाषण हो जाता है तो फिर भाषण नहीं होता केवल कुछ स्पष्टीकरण ही पूछा जाता है।

श्री लालजी टण्डन–

मान्यवर, मैंने कोई आलोचना नहीं की है। मेरा प्रतिपक्ष का स्थान होने के नाते यह दायित्व है कि नेता सदन को अपने विचारों से अवगत करा दूं। मैं प्रदेश को चलाने में अपना सहयोग देने को तैयार हूं और उसके लिए मैं कुछ चीजें यहां पर रखना चाहता हूं। अगर इस समय नहीं बताऊंगा तो उसका कोई

अर्थ नहीं होगा । मैं उनका कोई प्रतिवाद करने के लिए नहीं खड़ा हूं क्योंकि अभी सरकार ने कुछ किया ही नहीं है मैं उसकी आलोचना कैसे करूं ? समय की कसौटी में आने के बाद पता चल पायेगा । मान्यवर, मैं तो यह बता रहा था कि परिवर्तन जो आज दिखयी दे रहा है यह हमेशा के लिए अश्रुण्य नहीं रहता है । हम सबका दायित्व है और इसमें आप हमको पीछे नहीं पायेंगे । इस प्रदेश को आगे बढ़ाने के लिए अगर आप उद्योगपतियों को बुलाते हैं तो हम आपका स्वागत करते हैं और इसमें हम आपका सहयोग करेंगे । जिन विषयों का मुझे अनुभव है अगर आप लाभ लेना चाहें तो मैं यह नहीं कि मैं विपक्ष का हूं, अगर मेरे से कुछ बन सकता है प्रदेश के विकास के लिए, तो मैं सहयोग करूंगा । इन्हीं शब्दों के साथ एक बार फिर एक स्वस्थ्य लोकतंत्र कायम करने के लिए मैं आपको बधाई देता हूं कि आप सुचारु रूप से सत्ता को चलायें । विपक्ष का कार्यकर्ता हूं मगर कोई टकराहट नहीं होगी । विपक्ष का कार्य सिर्फ सत्ता को उखाड़ फेकना ही नहीं बल्कि प्रगति का रास्ता दिखाना भी होता है । हमारे आपके व्यक्तिगत संबंध मैं । मैं स्वीकार करता हूं कि जिस समय मंदिर आन्दोलन चल रहा था और पुलिस मेरी गिरफ्तारी करने के लिए घूम रही थी, आपसे बात होती थी तो कैसे मैं छिपा रह सकता था, लेकिन आपने मेरी गिरफ्तारी नहीं होने दी । अंतिम दिनों तक तबाह होने से बचाया ? मैं बेहोश गिर गया लेकिन मैंने शान्ति व्यवस्था भंग नहीं होने दी । मैं फिर एक बार फिर आपको शुभकामनाएं देता हूं ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूं । माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि न्याय का राज होगा मैं उनका आभार व्यक्त करना चाहता हूं । मैं उनसे यह कहना चाहता हूं कि इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान की जमीन को जो डा० भीमराव अम्बेडकर पार्क में मिला दिया गया था उसके लिए माननीय उच्च न्यायालय ने जो आदेश दिया है तो क्या उस उच्च न्यायालय के आदेशों का अनुपालन करेंगे ?

श्री मुलायम सिंह यादव–

अध्यक्ष महोदय हमने न्यायालय के आदेश को हमेशा माना है, हमें आप न्यायालय के आदेश की एक कापी दे दें हम उसका पालन करने का प्रयास करेंगे ।

श्री अध्यक्ष–

अब हम माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव–"यह सदन मंत्रि-परिषद में विश्वास व्यक्त करता है ।" पर मत विभाजन करने जा रहे हैं, जो माननीय सदस्य इसके पक्ष में हों कृपया हां कहें और जो माननीय सदस्य इसके विरोध में हों, कृपया "नहीं" कहें ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, हम मत विभाजन की मांग करते हैं और यह हमारा अधिकार भी है ।

श्री अध्यक्ष–

अगर आप कहें तो हम हाथ उठवा कर मत विभाजन करवा लें ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, हम इससे सहमत हैं ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मत विभाजन हाथ उठा कर होना चाहिए ।

श्री अध्यक्ष–

नियमावली के नियम–298 में इस प्रकार से दर्ज है–मत आवाजों द्वारा या विभाजन द्वारा लिए जा सकेंगे और यदि कोई सदस्य ऐसा चाहेंगे तो विभाजन द्वारा लिए जायेंगे, परन्तु अध्यक्ष यदि समझें कि विभाजन की मांग अनावश्यक रूप से की गयी है तो वे हाथ उठवाकर मत ले सकेंगे और विभाजन कर परिहार कर सकेंगे । तो इस तरह इस समय मत विभाजन की आवश्यकता नहीं है लेकिन हम हाथ उठवाकर मत विभाजन करवा देते हैं ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मैं चाहता हूं कि लाबी डिवीजन हो जाए ।

श्री अध्यक्ष–

आपकी मांग अनुचित है ।

श्री लालजी टण्डन–

मान्यवर, अगर आप सन्तुष्ट हैं तो व्यवस्था दे दें ।

श्री अध्यक्ष–

जो माननीय मंत्री विधान परिषद् के सदस्य हैं वह हाथ उठा करके मत–दान में भाग नहीं लेंगे । मैं पुनः एक बार फिर इस प्रस्ताव को प्रस्तुत करता हूं । पहले हाथ उठाने के लिए घण्टी बजायी जायेगी, फिर माननीय सदस्यगण हाथ उठायेंगे ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, जब आप हाथ उठवा कर मत विभाजन करा सकते हैं तो लाबी डिवीजन क्यों नहीं करवा सकते हैं ?

श्री अध्यक्ष–

लाबी डिवीजन अनावश्यक है, जब आप सहमत हैं और सत्ता पक्ष भी संतुष्ट है तो मैं हाथ उठवा कर मत विभाजन करवा लेता हूं । अब मत विभाजन के लिए घण्टी बजायी जाय ।

(मत विभाजन के लिए घण्टी बजायी गई ।)

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, स्वामी प्रसाद मौर्य जी ने लाबी डिवीजन की मांग की है । मान्यवर, आप उनकी बात क्यों नहीं मान लेते हैं । यह हमारा अधिकार है ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय राजभर जी इसमें किसी डिवीजन की जरूरत नहीं है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

श्री सुखदेव राजभर–

मान्यवर, इसमें हम लाबी डिवीजन की मांग कर रहे हैं । हमारी नियमावली में प्रक्रिया दी हुई है । ध्वनिमत से, हाथ उठा कर या लाबी डिवीजन से, इसमें हम लाबी डिवीजन की मांग कर रहे हैं ।

श्री अध्यक्ष–

आप प्रक्रिया नियमावली का नियम–298 देख लीजिए, उसमें बहुत स्पष्ट लिखा हुआ है कि यदि अध्यक्ष आवश्यक समझते हैं तो हाथ उठा कर मतदान ले लेंगे ।

(व्यवधान)

अगर बहुत कम मतों का अन्तर होगा तो उस पर विचार कर लेंगे ।

(घण्टी बजती रही)

श्री अध्यक्ष–

सब दरवाजे बन्द कर दिए जायें । सदन के अन्दर आने के सारे दरवाजे बन्द कर दिए जायें ।

अब मैं प्रस्ताव को मतदान के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं ।

प्रश्न यह है कि ''यह सदन मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है ।''

जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के पक्ष में हों, वे कृपया अपने हाथ उठाएं ।

सचिवालय के कर्मचारी गणना कर लें ।

अब आप लोग हाथ नीचे कर लीजिए गिनती हो गयी है । अब जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के विरोध में हों वह कृपया अपना हाथ उठायें ।

(गणना करने के उपरान्त)

श्री अध्यक्ष–

माननीय मुख्य मंत्री द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रस्ताव के पक्ष में दिये गये मतों की संख्या–244 है और प्रस्ताव के विरोध में दिये गये मतों की संख्या–154 है । चूंकि प्रस्ताव के पक्ष में दिये गये मतों की संख्या अधिक है अतः यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

कृपया आप लोग अपना स्थान ग्रहण कर लें अभी कार्यसूची के और भी कार्य शेष हैं ।

**दिनांक 28 फरवरी, 2003 को विधान मण्डल के समक्ष श्री राज्यपाल द्वारा दिये गये अभिभाषण के प्रति स्वीकृत धन्यवाद प्रस्ताव के सम्बन्ध में श्री राज्यपाल का आभार-पत्र**

**श्री अध्यक्ष–**

दिनांक 28 फरवरी, 2003 को विधान मण्डल के एक साथ समवेत् दोनों सदनों के समक्ष राज्यपाल महोदय द्वारा दिये गये अभिभाषण के प्रति धन्यवाद प्रकट करते हुए, उत्तर प्रदेश विधान सभा द्वारा

स्वीकृत प्रस्ताव के सम्बन्ध में राज्यपाल महोदय के उत्तर को उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली, 1958 के नियम–19 (8) के अन्तर्गत पढ़कर सुनाता हूं।

मैं महामहिम राज्यपाल महोदय के पत्र को पढ़ रहा हूं। पत्र मुझको सम्बोधित है।

सम्मान्य त्रिपाठी जी,

सादर नमस्कार।

आपके अर्द्धशासकीय पत्र संख्या–395/अविस/2003, दिनांक 26 मार्च, 2003 के लिए मैं अत्यन्त आभारी हूं।

इस हेतु मैं आपको तथा आपके माध्यम से विधान सभा के माननीय सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

भवनिष्ठ,

श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, ह०/-

अध्यक्ष, विधान सभा, (विष्णुकान्त शास्त्री)

उत्तर प्रदेश,

लखनऊ।

**कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा सदन के कार्यक्रम निर्धारण की सिफारिशें विषयक प्रस्ताव**

श्री अध्यक्ष–

उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्य-मंत्रणा समिति ने दिनांक 01 दिसम्बर, 2003 एवं 02 सितम्बर, 2003 को हुई अपनी बैठक में सदन के वर्तमान सत्र के कार्यक्रम के विषय में निम्नलिखित सिफारिशें की हैं :–

1–दिनांक 2 सितम्बर, 2003 को केवल निधन के निर्देश लिए जायं।

2–दिनांक 08 सितम्बर, 2003 को विश्वास मत के प्रस्ताव पर चर्चा के दिन नियम–51,56,300,301 तथा 311 के अन्तर्गत सूचनायें न ली जायं।

3–दिनांक 02 सितम्बर, 2003 से 17 सितम्बर, 2003 तक का कार्यक्रम निम्न प्रकार रखा जाय :–

सितम्बर, 2003

---

2 मंगलवार निधन के निर्देश।

| | |
|---|---|
| 3 बुधवार से 7 रविवार | बैठक नहीं होगी । |
| 8 सोमवार | मंत्रि-परिषद् के प्रति विश्वास का प्रस्ताव । |
| 9 मंगलवार से 15 सोमवार | बैठक नहीं होगी । |
| 16 मंगलवार | 1–औपचारिक कार्य, यथा अध्यादेशों, अधिसूचनाओं, नियमों आदि का सदन के पटल पर रखा जाना, विधेयकों का पुरःस्थापन आदि, यदि कोई हों ।<br>2–12.40 बजे अपराह्न<br>1–वित्तीय वर्ष 2003-2004 के अन्तरिम आय-व्ययक का प्रस्तुतिकरण ।<br>2–वित्तीय वर्ष 2003-2004 के एक भाग के लिए लेखानुदान का प्रस्तुतिकरण ।<br>3–वित्तीय वर्ष 2003-2004 के एक भाग के लिए लेखानुदान के प्रस्ताव पर विचार एवं मतदान तथा तत्संबंधी विनियोग विधेयक को सदन की अनुज्ञा से पुरःस्थापन, उस पर विचार एवं उसका पारण । |
| 17 बुधवार | विधायी कार्य । |

मंत्री (श्री मोहम्मद आजम खां)–

मान्यवर, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन कार्य-मंत्रणा समिति की सिफारिश से, जिसकी सूचना आज श्री अध्यक्ष द्वारा सदन में दी गयी है, सहमत है ।

श्री अध्यक्ष–

प्रश्न यह है कि कार्य-मंत्रणा समिति की सिफारिश विषयक प्रस्ताव जो श्री मोहम्मद आजम खां, मंत्री एवं सदस्य, कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा प्रस्तुत किया गया है, से यह सदन सहमत है ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ)

**उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का तृतीय प्रतिवेदन (सिविल)** †

डा० अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का तृतीय प्रतिवेदन (सिविल) (खण्ड–1), जो भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का

---

† छापे नहीं गये ।

31 मार्च, 2000 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रतिवेदन (सिविल) में उल्लिखित खाद्य तथा रसद विभाग से संबंधित आडिट आपत्तियों पर आधारित है, प्रस्तुत करता हूं।

**उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का चतुर्थ प्रतिवेदन†**

डा० अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का चतुर्थ प्रतिवेदन (खण्ड–2), जो भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का 31 मार्च, 1995 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रतिवेदन (सिविल) संख्या–3 में उल्लिखित गृह (कारागार) विभाग से संबंधित आडिट आपत्तियों पर आधारित है, प्रस्तुत करता हूं।

**उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का पंचम प्रतिवेदन†**

डा० अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का पंचम प्रतिवेदन जो भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का 31 मार्च, 1996 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रतिवेदन (सिविल) में सिंचाई विभाग, आवास विभाग, कृषि विभाग, पशुधन विभाग, लोक निर्माण विभाग, गृह (पुलिस) विभाग, खाद्य एवं रसद विभाग तथा चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग से संबंधित आडिट आपत्तियों पर आधारित है, प्रस्तुत करता हूं।

**उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का षष्ठम प्रतिवेदन†**

डा० अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का षष्ठम प्रतिवेदन (खण्ड–2), जो भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का 31 मार्च, 1997 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रतिवेदन (सिविल) संख्या–1 में उल्लिखित आडिट आपत्तियों पर आधारित है, प्रस्तुत करता हूं।

**उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का सप्तम् प्रतिवेदन†**

डा० अशोक बाजपेयी–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से उत्तर प्रदेश चौदहवीं विधान सभा की लोक लेखा समिति (2002-2003) का सप्तम् प्रतिवेदन जो भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का 31 मार्च, 1983-84, 1984-85, 1985-86, 1986-87, 1987-88, 1988-89 तथा 1989-90 के प्रतिवेदन (सिविल) में उल्लिखित व्ययाधिक्य से सम्बन्धित आडिट प्रस्तरों पर आधारित है, प्रस्तुत करता हूं।

**उत्तर प्रदेश विधान सभा की आश्वासन समिति का 83वां प्रतिवेदन†**

श्री श्याम सूरत उपाध्याय–

मान्यवर, मैं आपकी अनुज्ञा से, उत्तर प्रदेश विधान सभा की आश्वासन समिति का 83वां प्रतिवेदन, जो सिंचाई विभाग (वर्ष 1989 से वर्ष 2000) के आश्वासनों से सम्बन्धित है, प्रस्तुत करता हूं।

---

† छापे नहीं गये।

श्री अध्यक्ष–

अब हम उठते हैं, 16 सितम्बर, 2003 को दिन में 11.00 बजे पुनः बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन का उपवेशन रात्रि 9 बजे मंगलवार दि० 16 सितम्बर, 2003 के दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया)

लखनऊ :

**राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,**

दिनांक 8 सितम्बर, 2003

प्रमुख सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी० एस० यू ०पी० 286 विधान सभा (494) 17–12–03–813प्रतियां (डी०टी०पी०) ।